कक्षा-10

प्रवेशिका
मैथिली गद्य-पद्य संग्रह

भाग-2

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण - 2014

मूल्य : रु० 32.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा सुधा प्रिंटिंग प्रेस, बैरिया, पटना-7 द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित ।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार अप्रैल 2013 सँ राज्यक कक्षा IX एवं X तु ऐच्छिक विषयक पाठ्यक्रम लागू कएल गेल अछि । एही संदर्भमे एस०सी०ई०आर०टी. बहार पटना द्वारा विकसित प्रस्तुत पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रणकेँ मुद्रित कएल जा रहल छि।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षाव. गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल माननीय मुख्यमंत्री, बहार, श्री जीतन राम मांझी, शिक्षा मंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभागक प्रधान सचिव ी आर० के० महाजनक मार्गदर्शनक प्रति हम हृदयसँ कृतज्ञ छी ।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटनाक निदेशकक हम आभारी छी, जे अपन सहयोग दान कएल।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र-छात्रा, अभिभावक, शिक्षक, शक्षाविदक टिप्पणी एवं सुझावक सदैव स्वागत करत, जाहिसँ बिहार राज्यक देशक शिक्षा गतमे उच्चतम स्थान दियाबमे हमर प्रयास सिद्ध भऽ सकए।

दिलीप कुमार, आइ०, टी०, एस०,
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

दिशा-बोध

श्री अमरजीत सिन्हा, प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग बिहार, पटना

श्री राहुल सिंह, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार माध्यमिक शिक्षा परिषद् बिहार, पटना

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना

डॉ॰ सैय्यद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना

डॉ॰ ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेन्ट, हाजीपुर (वैशाली)

मैथिली भाषा पाठ्य-पुस्तक विकास समितिक सदस्य

डॉ॰ (प्रो०) इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय,पटना।

डॉ॰ कमलाकान्त भण्डारी, पूर्व व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, शास्त्री नगर, पटना।

डॉ॰ वीणाधर झा, व्याख्याता, पटना कॉलेजिएट स्कूल, दरियापुर, पटना।

डॉ॰ अरूण कुमार झा, प्राचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय, पंडितगंज, मसौढ़ी, पटना।

डॉ॰ राज कुमार झा, व्याख्याता, राजकीय बालक उच्च (+2) विद्यालय, पटना सिटी।

डॉ॰ सुधीर कुमार झा, व्याख्याता, जे॰ एन॰ बी॰ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, लगमा, दरभंगा।

डॉ॰ राम नारायण सिंह, स॰ शि॰, श्री रघुनाथ प्रसाद बालिका उच्च (+2) विद्यालय, कंकड़बाग, पटना

समन्वयक

डॉ॰ रीता राय, व्याख्याता, एस0सी0ई0आर0टी0 बिहार, पटना

समीक्षक

श्री भाग्यनारायण झा, पूर्व चीफ रिपोर्टर आर्यावर्त, पटना।

डॉ॰ भगवानजी चौधरी, साहिबगंज महाविद्यालय, साहिबगंज, झारखण्ड (मैथिली विभागाध्यक्ष अवकाश प्राप्त)

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

आमुख

प्रस्तुत पोथी प्रवेशिका मैथिली गद्य-पद्य संग्रह भाग-2 क निर्माण, किशोर वयक छात्रलोकनिक लेल, जे सम वर्गमे ऐच्छिक विषयक रूपमे मैथिली पढ़ताह, कयल गेल अछि। एहि वर्गक छात्रक बुद्धि बेसी कोमल आ बेसी जिज्ञासु होइत अछि। नव-नव वस्तु, आ विषयक प्रति बेसी आकर्षण रहैत छनि, ओकरा प्रति बेसी झुकाव भेनाई स्वाभाविके, तेँ ताही तरहक विषय आ पाठ सभक चयन कय एहि पोथीमे राखल गेल अछि। ई छात्रलोकनिकेँ एकांगी होयबासँ रोकि बहुमुखी प्रतिभाक प्रति सजग बनेबा दिस उत्प्रेरित, उत्साहित आ सत्पथ गामी बनाओत।

छात्रक बौद्धिक विकास एवं ग्राह्य शक्तिकेँ ध्यानमे राखि सुगम सरस संगहि ज्ञानवर्द्धक पाठक चयन कएल गेल अछि। साहित्यक सरोकार सरसतासँ होइत छैक तेँ पाठक चयनमे एहि बातक विशेष ध्यान राखल गेल अछि जे पाठ छात्रकेँ बोझिल आ उबाऊ नहि बूझि पड़नि।

सम्पूर्ण पाठ्य पुस्तककेँ गद्य, पद्य, द्रुतवाचन आ व्याकरण चारि खण्डमे विभक्त कयल गेल अछि। द्रुतवाचन छात्रक हेतु कल्पनाशक्ति ओ बौद्धिक प्रौढ़ताक दृष्टिएँ देल गेल अछि जाहिसँ कोनो तरहक प्रश्न नहि पूछल जायत।

गद्य-पद्य खण्डमे 6-6 पाठ राखल गेल अछि जाहि माध्यमे छात्र अपन बहुआयामी प्रतिभाकेँ उजागर करबामे समर्थ होयताह। मिथिला बहुमुखी संस्कृतिक संगम स्थल थिक। एहिठाम सभक विकास आ संस्कृतिक रक्षाक संग-संग एकता कोना स्थापित रहत तकर चर्चा विभिन्न पाठक माध्यमे कयल गेल अछि। पाठक माध्यमसँ कोनो विशेष बातकेँ कहब सुगम होइत छैक वनिस्पत उपदेशक माध्यमे कहब।

आजुक अर्थव्यवस्था वैश्विक रूप प्राप्त कऽ लेने अछि। हम अपनाकेँ ओहि व्यवस्थासँ असम्पृक्त नहि राखि सकब। तेँ एहि परिस्थितिमे अपनाकेँ कोना उजागर कय सकी तकर चेष्टा पाठक माध्यमसँ कयल गेल अछि।

एस0सी0ई0आर0टी0 सभसँ पहिने शिक्षा विभाग, बिहार सरकारक माननीय मंत्री श्री पी0के0 शाही एवं धान सचिव श्री अमरजीत सिन्हाक प्रति विशेष आभार प्रकट करैत अछि जनिका सतत् प्रयाससँ एहि पुस्तकक निर्माण बहुत कम समयमे भऽ सकल। एहि पुस्तकमे चयनित रचनाक रचनाकार लोकनिकेँ हम विशेष आभारी छियनि जनिक रचनासँ ई पुस्तक पल्लवित पुष्पित भय सकल। पाठ्य पुस्तक विकास समितिक सदस्य लोकनिक प्रो0 चन्द्रकान्त झा, डॉ0 कमलाकान्त भण्डारी, डॉ0 वीणाधर झा, डॉ0 राजकुमार झा, डॉ0 अरूण कुमार झा, डॉ0 सुधीर कुमार झा, डॉ0 रामनारायण सिंहक प्रति हम विशेष कृतज्ञतार्पण करैत छी जनिक परिश्रम ओ अध्यवसायसँ ई कार्य सम्पन्न भऽ सकल।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

पाठ्य पुस्तक विकासक क्रममे गतिरोध नहि होइक ताहि लेले सतत प्रयत्नशील डॉ0 रीता राय, समन्वयककेँ हम धन्यवाद दैत छियनि।

ई पाठ्य पुस्तक अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत अछि। सुधीजन ओ सहृदय समीक्षकसँ आग्रह जे पुस्तकक प्रणयनमे भेल त्रुटिक प्रति आगाह करथि, हमरा प्रसन्नता होयत।

निदेशक

हसन वारिस

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्

बिहार, पटना-6

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

विषय-अनुक्रम

पद्य भाग	.....		1-29
1.	युगधर्म	-वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'	02-05
2.	सनातन मानव	-आरसी प्रसाद सिंह	06-09
3.	फूलक नोर खसल	-बिलट पासवान 'बिहंगम'	10-13
4.	हम भेटब	-मार्कण्डेय प्रवासी	14-17
5.	गाम आ शहर	-उदय चन्द्र झा 'विनोद'	18-22
6.	अकाल-अनूदित (नेपाली कविता संग्रह)	- मेनका मल्लिक	23-29
गद्य भाग	.....		30-70
1.	राष्ट्रीय एकताक प्रासंगिकता	-नवीन चन्द्र मिश्र	31-37
2.	मिथिलांचलक उत्थान	-नरेन्द्र झा	38-42
3.	मिथिलांचलक रंग ओ शिल्प	-देवका-त झा	43-48
4.	वैश्वीकरण आ अर्थव्यवस्था	-भाग्यनारायण झा	49-53
5.	मिथिलाक प्राचीनता वर्तमान अस्मिता	-वासुकीनाथ झा	54-61
6.	आउ हम बेटी विमर्श करी	-विभूति आनन्द	62-70
द्रुतवाचन	.....		71-81
1.	पीयर आँकुर	.....	72-74
2.	काटरक समस्या	.....	75-78
3.	कान्हाक जोगाड़	.....	79-81
व्याकरण	.....		82-113
1.	सन्धि	.....	83-87
	कारक	.....	88-89
	क्रिया	.....	90-91
	काल	.....	92-93
	समास	.....	94-95
	मुहावरा	.....	96-99

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

लोकोक्ति 100-105
2. संक्षेपण 106-108
3. पत्र लेखन 109-113
4. निबंध- 114-156
शिक्षक दिवस 115-116
मदर टेरेसा 117-118
महावीर स्वामी 119-120
स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) 121-122
छात्र आ अनुशासन 123-124
समाचार पत्र 125-125
विज्ञानक चमत्कार 126-127
चलचित्र 128-129
रेडिओ 130-131
स्त्रीशिक्षा 132-133
वयस्कशिक्षा 134-135
श्रमदान 136-137
अकाल 138-139
बाढ़ि 140-141
पुस्तकालय 142-144
वसंत ऋतु 145-146
एक महापुरुषक जीवन चरित (महात्मा गाँधी) 147-148
ग्रामपंचायत 149-150
स्वदेशप्रेम 151-152
परोपकार 153-154
स्वावलम्बन 155-156

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

पद्य -भाग

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

जन्म	-	1911 ई० (जेठ पूर्णिमा)
जन्म स्थान	-	तरौनी, दरभंगा
कृति	-	मैथिली-चित्रा ओ पत्रहीन नग्न गाछ-(कविता संग्रह) पारो, नवतुरिया, बलचनमा-(उपन्यास) पृथ्वी ते पात्र-कथा। हिन्दी-युगधारा, सतरंग पंखोवाली, प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था, हजार-हजार बाहों वाली रत्न गर्भा आदि कविता संग्रह। रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, कुम्भीपाक, दुखमोचन आदि उपन्यास। एकर अतिरिक्त हिन्दीमे कहानी संग्रह, खण्डकाव्य, अनुवाद पर प्रकाशित पुस्तक।
पुरस्कार	-	1968 ई० मे 'पत्रहीन नग्न गाछ' मैथिली कविता संग्रह पर साहित्य अकादेमी दिल्लीसँ पुरस्कार, बिहार सरकार द्वारा 'शिखर सम्मान'।
निधन	-	5 नवम्बर, 1998 ई०।

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

युग-धर्म

नहि मानइ अछि बात ओहिना अपनो बेटा-नाति
मास मास पर गहन लगइ अछि पल पल पर संकरौंति
बदलि रहल अछि छन छन दुनियाँ किछु नहि क्यो नहि थीर
भ गेलाह बाबा कपिलेश्वर आन्हर आर बहीर
सुनतहि नव नचारी बूढ़ाकँ उठैत छन्हि खौंत
भरि भरि ढाकी फौंकि जाई छथि भाङक भनहि सुखौंत
शहर शहरमे फुजल-सिनेमा, क्यो नहि सुनए पुरान
ककरो नहि चिंता छइ जे खौंझा उठता भगवान
कोना छजत पहिलुक छातीपर आजुक टटका रङ
अपन महिंस कूड़हड़िअहि नाथब, के ने कहत अबढंग
खुटिआ मिर्जइ नहि सोहाइ छइ पहिरए कोट-कमीज
बूढ़ि ने कहिअउ, कन्हुआकँ ताकत बेटा-भातीज
कोना बुझब जे पूर्वजलोकनि रहथि बेश बुधिआर
पछुआ कका करब जँ, नहि हमरासँ बात-विचार।

शब्दार्थ

मास-मास-प्रत्येक मास
थीर-स्थिर
खौंत-गर्मीसँ मोन व्याकुल हैब
सुखौंत-सुखायल वस्तु
अबढंग-बिना ढंग कँ
गहन-ग्रहण (चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण)

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :-

(i) कवि मास-मास पर कथी लगबाक बात कहलनि अछि?

(क) गहन (ख) संकराति (ग) पूर्णिमा (घ) मेला

(ii) कवि एहि काव्यमे बूढ़ा शब्दक प्रयोग ककरा निमित्त कयलनि अछि?

(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु (ग) महेश (घ) इन्द्र

(iii) प्रस्तुत कवितामे कवि शहर-शहरमे कथी फुजबाक बात कहलनि अछि?

(क) सिनेमा (ख) दोकान (ग) कारखाना (घ) एहिमे सँ किछु नहि

(iv) कवि आजुक युगमे कथी पहिरबाक बात कहलनि अछि?

(क) कोट-कमीज (ख) धोती-कुर्त्ता (ग) मिरजई (घ) वण्डी

2. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) आजुक बदलैत युगमे के थीर अछि?

(ii) आजुक युगमे की अपनो बेटा-नाति बात मानवा लेल तैयार अछि?

(iii)आजुक युगमे वेद-पुराण के सुनैत अछि? कविताक आधार पर लिखू।

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'कोना छजत पहिलुक ढ़ाठीपर आजुक टटका रंगक की तात्पर्य?

(ii) कविताक आधार पर आजुक युग धर्मक चर्चा करू।

4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(i) भऽ गेलाह बाबा.....आन्हर आर बहीर।

(ii) भरि-भरि ढाकी फाँकि जाइ छथि.....सुखौत।

(iii)शहर-शहरमे फुजल सिनेमा क्यो नहि सुनय.....।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

5. निम्नलिखित काव्यांशक व्याख्या करू-

(i) खुटिया मिर्जइ नहि सोहाइ छै पहिरए कोट-कमीज

(ii) बूढ़ि ने कहिअउ, कन्हुआकेँ ताकत बेटा-भातीज

व्याकरण-

प्रस्तुत कवितासँ संज्ञा शब्द चुनि कउ लिखू।

गतिविधि-

1. कवितामे वर्णित युगधर्मक सम्बन्धमे लिखू।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ आग्रह जे छात्रसँ प्रगतिवादक विषयमे चर्चा करथि।

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

आरसी प्रसाद सिंह

जन्म	–	19 अगस्त, 1911 ई0
जन्म स्थान	–	ग्राम–एरौत, जिला–समस्तीपुर
रचना	–	माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी। मेघदूतक मैथिली अनुवाद।
पुरस्कार	–	हिनका 'सूर्यमुखी' काव्य संग्रह पर 1982मे मैथिली अकादेमी, पटनासँ, विद्यापति पुरस्कार तथा एही संग्रह पर 1984क साहित्य–अकादेमी, दिल्लीसँ, पुरस्कार प्राप्त भेलनि।
निधन	–	15 नवम्बर, 1996

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

सनातन मानव

अछि अनादि इतिहास हमर, भूगोल हमर लीलामय प्रांगण।
मन्दिर, मस्जिद आ गिरजाघर, हमर चेतना केर निकेतन।।
गौर, श्याम, पीताभ कतहु हम, कतहु घोर काजर सन कारी।
अनगिन भूषा-वेश हमर अछि, एक रूपमे नर आ नारी।।
हिन्दू कतहु, कतहु ईसाई, मुसलमान कहबैत कतहु छी।
भारतीय चीनी जापानी, परिचयमे जनबैत कतहु छी।।
मुदा, रक्त तँ वैह देहमे, एक हृदयमे प्राणस्पन्दन।
भाषा, धर्म अनेक पंथ-मत मुदा, एक दुख-सुख जग-जीवन।।
अमृत हेरि हम आनल भूपर, पाथरमे देवत्व उतारल।
वायुयान, विद्युत् अणु-ऊर्जा, अंतरिक्षमे झंडा गाड़ल।।
द्वीप-द्वीपकेँ सेतु-बंध सँ, जोड़ि देल हम सागर-चारी।
चन्द्रलोक धरि रोपि पयर हम, घूमि रहल छी गगन-विहारी।।
युद्ध, कलह, विद्वेष, घृणा, संहार, शोक, संताप पराजय।
दानवता ई सब दुर्गुण सँ, हमर विरोध करैए निर्दय।।
हम मानव छी, युग-युग सँ, आगाँ नित्य बढ़ैत रहै छी।
सत्य, अहिंसा, करुणा, मैत्री, प्रेमक पाठ पढ़ैत रहै छी।।

दार्थ

तन-परम्परागत,प्राचीन कालसँ चल अबैत क्रम
दि-जकर आदि नहि हो
ामय-लीलासँ ओत-प्रोत
ण-आँगन
ना-बुद्धि, मनोवृत्ति

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

निकेतन-घर

अनगिन-अनगिनत, असंख्य

रक्त-खून, सोनित

हेरि-ताकिकेँ

भूपर-पृथ्वी पर

देवत्व-देवताक भाव

अंतरिक्ष-आकाशक सुदूरतम भाग

द्वीप-भूमिक ओ भाग जे चारूकात पानिसँ घिरल होअए

सेतु-पुल

गगन-विहारी- आकाशमे विचरण करऽ वाला

कलह-झगड़ा

दानवता-राक्षसी प्रवृत्ति

दुर्गुण-खराब गुण

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू:-

(i) 'सनातन मानव' शीर्षक कविताक कवि छथि :-

(क) विद्यापति (ख) आरसी प्रसाद सिंह (ग) बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (घ) तंत्रनाथ झा

(ii) हमरा देशक इतिहास अछि :-

(क) आधुनिक (ख) मध्यकालीन (ग) अनादि (घ) प्राचीन

(iii) एहि पृथ्वी पर हम ताकिकेँ अनलहुँ :-

(क) विष (ख) अमृत (ग) प्रेम (घ) विद्वेष

2. खाली स्थानक पूर्त्ति करू :-

(i) भूगोल हमर .....।

(ii) .....पाथरमे देवत्व उतारल।

(iii) सत्य, अहिंसा, करुणा, मैत्री:.....।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

4. **सही गलतक चयन करू :-**

(i) हमरा देशक धर्म अछि–अनेक/एक

(ii) हम पाथरमे ताकल–दानवता/देवत्व

(iii) हम झंडा गाड़लहुँ–समुद्रमे/अन्तरिक्षमे

5. **लघूत्तरीय प्रश्न :-**

(i) 'भूगोल हमर लीलामय प्रांगण' एहिमे भूगोलक की तात्पर्य अछि?

(ii) नर ओ नारी कोन–कोन रंगक होइत अछि?

(iii) धर्म ओ राष्ट्र भिन्न होइतो सभ मानवमे की लऽ कऽ समता छैक?

(iv) मानवताक के विरोधी अछि?

(v) मानवता कोन पाठ पढ़ैत रहैत अछि?

(vi) एहि कवितामे 'हम' सर्वनामक प्रयोग भेल अछि। ई हम ककरा लेल आएल अछि?

6. **दीर्घोत्तरीय प्रश्न :-**

(i) मानव जातिक हितक लेल मानव की सब कयलक अछि? विस्तारसँ वर्णन करू।

(ii) कवि मानवता–विरोधी दुर्गुण सभक उल्लेख कएने छथि। एहि दुर्गुण–सभक समाज पर की सभ कुप्रभाव पड़ि रहल अछि? वर्णन करू।

(iii) एहि कविताक भावार्थ अपना शब्दमे लिखू।

7. **निम्नांकित पद्यांशक सप्रसंग व्याख्या लिखू :-**

''अमृत हेरि हम आनल भूपर, पाथरमे देवत्व उतारल।''

8. **निम्नांकित पंक्तिक भाव–विस्तार करू :-**

(i) भूगोल हमर लीलामय प्रांगण।

(ii) अंतरिक्षमे झंडा गाड़ल।

9. **निम्नांकित पाँतीक अर्थ बुझाउ :-**

द्वीप–द्वीपकेँ सेतु–बाँध सँ, जोड़ि देल हमर सागर–चारी।

10. **निम्नांकित शब्दक विपरितार्थक शब्द लिखू :-**

गौर, नर, धर्म, अमृत, युद्ध, दानवता, अहिंसा

योग्यता विस्तार :-

1. विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारक सम्बन्धमे अपन शिक्षकसँ सहायता लऽ जानकारी बढ़ाउ।
2. विश्वबन्धुत्व विषय पर एक गोट भाषण–प्रतियोगिताक आयोजन करू आ ओहिमे भाजू।
3. एहि कविताकेँ कण्ठस्थ कऽ वर्गमे सस्वर पाठ करू।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

बिलट पासवान 'बिहंगम'

जन्म	–	4 जनवरी, 1941 ई0
जन्म स्थान	–	एकहत्था, खुटौना, मधुबनी
कृति	–	भैरवी एवं रणभेरी (मैथिली काव्य-संग्रह), चयनिका (गीत-संग्रह), सलहेस पाठिका, वृत-व्यास (हिन्दी काव्य-संग्रह), सलहेसायण (महाकाव्य)-प्रकाशनाधीन, आगि भरल जिनगी-खण्ड काव्य।
उपाधि	–	राष्ट्रपति द्वारा 2005 मे 'पद्मश्री' उपाधिसँ अलंकृत।
पुरस्कार	–	राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान मिथिला विभूति सम्मान चेतना समिति पटना द्वारा 2003 ई0 मे देल गेल।

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

फूलक नोर खसल

धरतीक काँढ़ करेज फटै छै
काँपि रहल छै गात हे।
की ल' गिरहत अगहन आँकत
धानक झड़कल पात हे।।
गाछक पेट भरल गम्हरासँ
दूध सुखल छै पोर हे।
कातिक मास नछत्र भागल
इन्द्रक निन्द कठोर हे।
राजनगर राजा फुलबाड़ी
धरती सुखल सपाट हे।
फूलक नोर खसल धुइयाँपर
फलकल-फलकल पात हे।।
'विलट' विधायक हाय विधाता,
कुहरय सकल किसान हे।
एखनो नजरि दियौ हे राजा
खोलियौ नहरि बलान हे।।

शब्दार्थ

गात- शरीर
आँकत- अन्दाज करब
झड़कल- मुरझायल, झूलसल
गम्हरा- बिन फूटल धान
नछत्र- नक्षत्र

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

भुइयाँ- धरती

कुहरय- कराहब

बलान- नदीक नाम

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :-

(i) बरखा नहि भेलासँ काँढ़-करेज फटै छै :-

(क) आकाशक (ख) धरतीक (ग) किसानक (घ) धानक

(ii) एहि कविताक कवि छथि :-

(क) जीवकान्तजी (ख) मार्कण्डेय प्रवासी (ग) बिलट पासवान 'बिहंगम' (घ) अमरजी

(ii) सालमे कतेक नक्षत्र होइत अछि :-

(क) 24 (ख) 27 (ग) 30 (घ) 20

2. रिक्त स्थानकेँ पूरा करू :-

(i) धानक.....पात हे,

(ii) कातिक मास.....भागल,

(iii) .....निन्द कठोर हे,

(iv) खोलियौ.....बलान हे,

3. निम्नलिखित शब्दमे सँ शुद्ध शब्दमे (✓) सहीक आ अशुद्ध शब्दमे (X) गलतक चेन्ह लगाउ :-

(क) फूल (ख) शकल (ग) सपाट (घ) गौरहत (ङ) गाछ

4. लघूत्तरीय प्रश्न :-

(i) गिरहतक स्थिति केहन छै?

(ii) कातिक मासमे की भागल अछि?

(iii) किनकर निन्द कठोर छनि?

(iv) किसान किए कुहरि रहल छथि?

(v) बलानक नहर खोललासँ एहि क्षेत्रक किसानकेँ की लाभ होएतैक?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न :-

(i) किसान किएक कुहरैत अछि? वर्णन करू।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

(ii) किसानक स्थिति सुधारबाक हेतु कवि की कहि रहल छथि? विस्तारसँ वर्णन करू।

(iii) भारतीय कृषि मौनसून पर निर्भर छैक, वर्णन करू आ एकर निदानक लेल सरकार की उपाय कऽ सकैत अछि? सुझाव दिअ।

(iv) कवितामे आएल संज्ञा शब्दकेँ चुनिकेँ लिखू आ ओकर वाक्य बनाउ।

तिविधि :- शिक्षकक सहायतासँ धानक खेती करबा-विधि ज्ञात करू।

देशा-निर्देश :- शिक्षकसँ आग्रह जे छात्रसँ धान आदि फसलक सम्बन्धमे चर्चा करथि।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

मार्कण्डेय प्रवासी

जन्म	-	1 मई, 1942
जन्म स्थान	-	गरुआरा, समस्तीपुर
वृति	-	पत्रकारिता, 'आर्यावर्त' क पूर्व सम्पादक, तदुपरान्त-स्वतंत्र लेखन।
कृति	-	मैथिली-अगस्त्यायनी(महाकाव्य), एतदर्थ (तदर्थ काव्य), अभियान, हम कालिदास(उपन्यास), हम भेटब (गीत-नवगीत)। मैथिलीमे-'झामलालक झामा' तथा हिन्दी मे 'चुटकुलानन्द की चिट्ठी' स्तम्भक माध्यमे व्यंग्य लेखन। हिन्दी-शंखध्वनि, कविता बोलती है, सूरज ने लिखा है (गीत-नवगीत) तथा कस्तूरी बाई (उपन्यास)।
सम्मान	-	अगस्त्यायनी महाकाव्य पर 1981 ई0 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार।
निधन	-	13 जून 2010 ई0

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

हम भेटब

जहिया-जहिया हृदय हीनता
खटकत मोनक बाट पर,
हम भेटब-
इतिहास-नदीकेर-
चिक्कन-चुनुन घाट पर।
अछि कविता कोईलीक बहिनपा,
नहि बाजत कागक भाषा,
चीर हरण नहि कऽ सकैत अछि
साहित्यिक छूतक पासा
जहिया-जहिया
शील तथा आदर्श गीतमे नहि अभरत,
हम भेटब-
अपने सीमान पर-
बैसल टूटल खाटपर।
आइ भने किछु भाइ-बन्धु
सगरो बबूर बनि जनमल छथि,
भीतरसँ महकल छथि, तैयो-
बाहर-बाहर गमकल छथि
साँप जकाँ-
डँसि लेत जखन साँसे समाजकेँ दुर्जनता,
विष उतरत-
हमरे चार पर।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

अछि गौदड़कँ हरिण कहै ले'

होड़ मचल हम मौन छी

मोनू भाव न जानथि, तेँ हम

गोनू रहितहुँ गौण छी

जहिया-जहिया मैथिलत्व-

हारल धकिआओल-सन लागत,

हम भेटब-

तिलकोर जकाँ-

चतरल साहित्यक टाट पर।

शब्दार्थ

काग-कौआ

द्यूत-जुआ

शील-चरित्र

दुर्जन-खराब लोक, दुष्ट लोक

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

(i) हम भेटबक लेखक के छथि ?

(क) कमलाकान्त भंडारी (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (ग) मार्कण्डेय प्रवासी (घ) डॉ0 वीणाधर झा

(ii) के कागक भाषा नहि बाजत?

(iii) गौतमे जहिया-जहिया की नहि अमरत?

(iv) दुर्जन कथी जकाँ डँसि लेत?

2. लघूत्तरीय प्रश्न :-

(i) हम अपन सीमान पर कथीक कारण भेटब?

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

(ii) आइ किछु भाय-बन्धु केहन छथि?

(iii) हम तिलकोरे पर किएक भेटब?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न :-

(i) हम भेटब कविताक सारांश लिखू।

(ii) हम भेटब कविताक विशेषता लिखू।

(iii) अछि कविता कोइलीक बहिनिपा, नहि बाजत कागक भाषा,
चौर हरण नहि कऽ सकैत अछि, साहित्यक द्यूतक पासा।
उपर्युक्त पद्यांशक भावार्थ लिखू?

4. मिलान करू

(i)	हम भेटब	(क) मन्त्र
(ii)	काग	(ख) बन्धु
(iii)	भाइ	(ग) कौआ
(iv)	आखर	(घ) मार्कण्डेय प्रवासी
(v)	भोनू	(ङ) गोनू

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

उदयचन्द्र झा 'विनोद'

जन्म	–	5 अप्रैल, 1943
जन्म स्थान	–	ग्राम+पोस्ट-रहिका, जिला-मधुबनी
वृत्ति	–	लेखा विभाग, भारत सरकारक सेवामे अंकेक्षक
कृति	–	संक्रान्ति (1991), धूरी (1992), मौसम अयला पर (1978), एहना स्थिति मे (1982), सहर जमीन (1999), अकहलनि पत्नी (1985), पक्ष (2007), प्रश्नवाचक (2010)-(कविता संग्रह) काँच-(1984)-(कथा संग्रह) उदास गाछक वसन्त (नाटक)
सम्मान	–	यात्री चेतना पुरस्कार-2005 ई0, साहित्य अकादेमी पुरस्कार 'अपक्ष' कविता संग्रह-2011 ई0।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

गाम आ शहर

लोक एखनो गाममे झिझर रहै-ए
राजधानी जकाँ नहि असगर रहै-ए
ईद एखनो हिन्दुओ जे पर्व होइ छै
गाममे मिलनक बहुत अवसर रहै-ए

गामसँ बहुतो पड़ायल सभ तेयागल
लोक तैयो चौक पर कहकह करै-ए
बाप केर लगाओल बागक गाछ काटय
गाममे एखनो बहुत अजगर रहै-ए

सुगरकोना बेश बरिसल बादि आयल
गाम एखनो साल भरि अबतब रहै-ए
चैनसँ एखनो गरीबी गाम मे छै
शहर सनकल अनेरे लबलब करै-ए

साग पर सन्तोष के दर्शन हेरायल
ग्राम्य जीवन तदपि बड़ निर्भर रहै-ए
शहरसँ आयलि सुकन्या भिन्न होइ छथि
ग्राम्यबाला के कहाँ परतर करै-ए

माथ पर आँचर एखनियो गाममे छै
'न्यूड' होयबा लए शहर तड़वड़ करै-ए
गाममे सम्बन्ध बाँचल छै एखन धरि
राजधानी लग भने लड़बड़ लगैए

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

जीवि लेतै गाम एखनो स्वावलम्बी
शहर के फरमान तड़ गड़बड़ करैए
पाग-दोपटा, फूल-चानन गीत-अरिपन
गनगनाइत गाम के गहवर रहै-ए
केओ न ककरो शहर मे छै, गाम मे छै
ग्राम्य-जीवन तँ बहुत सेसर लगै-ए
केओ न ककरो दै शहरमे, गाम दै छै
शहरमे सभ लोकते तेसर लगै-ए
गाम छै तँ देश छै कविता/कहानी
शहर तऽ मस्तूल पर उर्बर लगै-ए
लोक गामक ग्राम-गौरवमे जिबै छै
शहर मे तऽ सभ अपना पर रहै-ए
गड़बड़ी छै आब गामोमे, गछै छी
शहरमे तऽ सभ्यता बर्बर लगै-ए
सीबि आबी लगाबै छी नित्य चेफरी
व्यवस्था देशक बहुत जर्जर लगै-ए
देश चाही तँ बचाबी गाम के बन्धु
शहर थिक वाचाल तँ बरबर करै-ए
शुद्ध जल, शीतल हवा ओ बोल मधुरिम
सुलभ गामहि गाव के गोबर रहैए।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

शब्दार्थ

मिज्झर-मिलल-जुलल

ईद- मुसलमानक एकटा पावनि

तेयागल-त्यागल

सुकन्या-सुन्नरि कन्या

ग्राम्यबाला- ग्रामीण बाला

एखनियो-एखनहुँ

सेसर-श्रेष्ठ

मसतूल- माथ पर

बर्बर-जंगली

जर्जर- पुरान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) एखनहुँ लोक कतय मिज्झर रहैत अछि?

(क) गाममे (ख) शहरमे (ग) वनमे (घ) बागमे

(ii) लोक कतय कह कह करैए?

(क) राहमे (ख) चौक पर (ग) गाममे (घ) घर पर

(iii) एखनो के गाममे चैनसँ अछि?

(क) अमीर (ख) फकीर (ग) गरीब (घ) धनीक

(iv) न्यूड होयबा लए शहर की करै-ए?

(क) धड़फड़ (ख) तरफड़ (ग) लड़बड़ (घ) तड़तड़

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू।

(क) माथ पर.....एखनियो गाम मे छै।

(ख) जीबि लेतै गाम एखनो.....।

(ग) केओ न ककरो.....छै।

(घ) देश चाही तँ.....गामके बन्धु।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

3. सही क आगाँ (✓) आ गलतीक आगाँ (x) चेन्ह लगाउ।

(i) एखन धरि गाममे सम्बन्ध बाँचल छै।

(ii) एखनहुँ गाममे साग पर संतोषक दर्शन जीबैत अछि।

(iii) गाममे ककरो कैओ खगताक वस्तु दैत छै।

(iv) गाममे गड़बड़ी नहि छै।

4. सही मिलान करू-

(क) शहर सँ	(i) बचाबी गामकेँ
(ख) मिलनक	(ii) नित्य चेफरी
(ग) देश चाही तँ	(iii) अवसर
(घ) लगाबै छी	(iv) सुकन्या

5. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) गामक गहवर कथीसँ गनगनाइत रहैत अछि?

(ii) गाम आ शहरक मध्य कोनो एक टा अन्तर लिखू?

(iii) कोन कोनक बारिसला सँ बाढ़ि आयल?

(iv) राजधानीक लगक गाम केहन लगैत अछि?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक आधार पर गामक विशेषताक वर्णन करू।

(ii) पठित पाठक आधार पर सिद्ध करू जे शहरमे बेश गड़बड़ी अछि।

(ii) शहरमे सम्बन्धक धज्जी उड़ि गेल अछि।

(iv) 'गाम आ शहर' कवितामे अजगर ककरा कहल गेल अछि आ किएक?

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

अकाल

(नेपाली कविता)

रचनाकारक परिचय

नाम	–	मेनका मल्लिक (अनुवादिका)
जन्म	–	18.06.1966 ई0
वृत्ति	–	गृहकार्य अतिरिक्त, कविता लेखन, अनुवाद आ सम्पादन। पाक्षिक–'दक्षिन मिथिला' एवं त्रैमासिक–औरतक सम्पादन।
मूल रचनाकार	–	रेमिका थापा
जन्म	–	28.10.1971
शिक्षा	–	एम.ए. पी-एच-डी
कृति	–	वेदना को पाछिल्तिर, गठिँमा कविता, देश र अन्य कविता हरू आ किनारा का आवाज हरू।
वृत्ति	–	शिक्षण (परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार, जलपाईगुड़ी)

□□□

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

अकाल

महिला सभ पानि भरऽ जाइछ
कतोक कोस दूर
इनारसँ पानि भरऽ जाइछ।
इजोत होयबाक पहिने होइतहिं
अहलभोरे
पानि भरऽ जाइछ महिला सभ।

आँगन बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ
ककरो अबैआ नहि छै, तैयो
सुखायल, कैल पात सभ खसल छै
आँगन भरि
खर-खर करैत कोना चलत
कोना टेकत पयर?

फट्टक भिड़ा कऽ राखऽ पड़ैत
ककरो बेराम पति सूतल छै भीतर
ककरो शराबी पति सूतल छै भीतर।

कतेक चलऽ पड़ैत छै
तरबाक खिआयल रेखा सभसँ
कतेक निर्दयतापूर्वक

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

जमीन पर पयर टेकि

चलऽ पड़ैत छै लगातार

पनिभरनि सभक जमातकें।

सुखि कऽ हड़नठ भऽ गेलै नीमक गाछ

अकत सीव छाल उखड़ि

भीतरक सनीपासु समेत सुखा गेल छै

उदास बच्चा देलकै आँगनकें

कोना झाँपी?

अकाल छै

अकालकें कोना झाँपत?

पाग झँपने पयर उघार, पयर झँपने माथ

चदरिकें कहुना तानि-तुनि मुँह झाँपय

अकालग्रस्त जिनगीक पहिल परिच्छेदकें

झाँपय।

तोहर नाँगट देहसँ उड़ि जयतह कतहु

आकांक्षाक चिड़ै।

अकालमे

दूर-दूर धरि पसरल छै

भूखक गन्ह

स्त्रीगण द्वारा छोड़ल

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

श्वास-प्रश्वास

स्त्रीगणक तरबाक जरि गेल चक्रक

मद्धिम गन्ह छै हवामे।

दूर-दूर धरि नहि छै आर कोनो गन्ह

अकास खसा देलक अछि.

रेति-रेति कऽ कटि

अपन सुखायल फेफड़ा

शून्यक विराट सिम्फॉनी छोड़ि

मौन होइए

अपने आँखिक नोनगर दहसँ

भरि आनी एक चैल पानि।

पानिक प्रतीक्षामे अछि

पिसायल बड़ेरी आ ओरिआनी

निपह-पोतह

ऋणग्रस्त पतिक कय-दस्तकें

धोअह-पखारह

एड्सग्रस्त पतिक ऐंठनकें

झाँपह....झाँपि कऽ राखह

अकाल छै।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

शब्दार्थ

फट्टक भिड़ायब-फट्टक लगायब

चेराम-अस्वस्थ, बीमार

गन्ह-गन्ध

बड़ेरी- घरक देबाल पर मध्यमे एक देबालसँ दोसर देबाल धरि लकड़ी अथवा बाँस खण्ड जाहि पर सम्पूर्ण घरक दून चारक भार रहैत छै, बड़ेरी

ओरिआनी-देहरी आ आँगनक मिलन स्थल

क्षयग्रस्त- क्षय रोगसँ पीड़ित

ऐंठन-भोजनोपरांत बचल खाद्य पदार्थ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(i) की सुखाकऽ हड़नठ भऽ गेलै?

(क) नीमक गाछ (ख) आमक गाछ (ग) महुआक गाछ (घ) जामुनक गाछ

(ii) कतक रानीमासु सुख गेल छै?

(क) बाहरक (ख) भीतरक (ग) खेतक (घ) देहक

(iii) ककरा उदास बना देलकै?

(क) घरकेँ (ख) द्वारिकेँ (ग) आँगनकेँ (घ) ओलतीकेँ

(iv) तोहर नाँगट देहसँ कथीक चिड़ै उड़ि जयतह?

(क) आशाक (ख) इच्छाक (ग) मोनक (घ) आकांक्षाक

(v) कथीक गन्ह दूर-दूर धरि पसरल छै?

(क) भूखक (ख) पियासक (ग) उल्लासक (घ) उत्साहक

2. **लघूत्तरीय प्रश्न**

(i) महिलासभ की भरऽ जाइछ?

(ii) महिलासभ कथीसँ पानि भरऽ जाइछ?

(iii) महिलासभ कखन पानिभरऽ जाइछ?

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

(iv) केहन सुखायल पात खसल छै?

(v) जमीनपर पयर टेकि ककरा लगातार चलऽ पड़ैत छै?

3. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(i) स्त्रीगणक.....जरि गेल चक्र।

(ii) .....खसा देल अछि।

(iii) अपन.....फेफड़ा।

(iv) शून्यक विराट.....छोड़ि।

(v) पिसायल.....आ ओरियानी।

4. स्तम्भ 'क' क शब्दक मिलान स्तम्भ 'ख' क उचित शब्दसँ करू-

'क'		'ख'	
(i)	इजोत होयबाक	(क)	कय दस्तकेँ
(ii)	आँगन	(ख)	तरबाक खिआयल रेखा सभसँ
(iii)	ककरो बेराम	(ग)	बेर होइतहिं
(iv)	कतेक चलऽ पड़ैत छै	(घ)	पति सूतल छै भीतर
(v)	क्षयग्रस्त पतिक	(ङ)	बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न

(i) महिला सभ कतोक कोस दूर पानि भरऽ किएक जाइछ?

(ii) महिलासभकेँ आँगन किएक बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ?

(iii) किएक फट्टक भिड़ा कऽ राखऽ पड़ैत?

(iv) पनिभरनी सभक जमातकेँ कोना चलऽ पड़ैत छै?

(v) नीमक गाछ केहन भऽ गेल अछि?

(vi) आँगनकेँ कोना उदास बना देलकै अछि?

(vii) केहन अकाल छै?

(viii) पानिक प्रतीक्षामे के सभ अछि?

(ix) कवयित्री कथीकेँ झाँपि कऽ राखबाक आग्रह कयलनि अछि आ किएक?

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

x) अपने आँखिक नोनगर दहसँ
भरि आनी एक घैल पानि।
उक्त पौंतिक भावार्थ लिखू।

xi) अकाल कविताक भावार्थ लिखू।

xii) अकाल कविताक प्रासंगिकता की अछि?

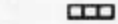

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

गद्य -भाग

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

नवीन चन्द्र मिश्र

जन्म – 01.01.1933 ई0

जन्म स्थान – सौराठ, मधुबनी

वृत्ति – प्राध्यापक-सी0एम0 कॉलेज, प्राचार्य, सहरसा कॉलेज, विश्वविद्यालयै प्राचार्य ल0ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

कृति – अंकिया नाट विवेचन (1984 ई0), प्रतिपदा: एक अध्ययन। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित निबन्ध आदि।

राष्ट्रीय एकताक प्रासंगिकता

राष्ट्रक सम्यक् विकास हेतु राष्ट्रीय ऐक्यक महत्ता स्वतः सिद्ध अछि। यावत पर्यन्त एक-एक व्यक्तिमे समष्टिक प्रति एकसूत्रताक भावक आविर्भाव नहि होएत तावत धरि राष्ट्रक कल्याणक परिकल्पने करब भ्रम होएत। राष्ट्रक सर्वांगीण विकासक हेतु लोकमे चेतना जागृत करए पड़तैक, लोकक मानसिकतामे परिवर्त्तन आनए पड़तैक। हाथ पर हाथ धऽ कऽ बैसने किंवा ककरो पैर खिचलासँ अभ्युन्नतिक मार्ग अवरुद्ध भए जाएत, जे लोक हितमे सर्वथा बाधक प्रमाणित होएत।

वर्त्तमान भारतमे एकताक प्रश्न अति जटिल भऽ गेल अछि। ई देश अत्यन्त विशाल अछि। एहिठाम अनेक प्रकारक संस्कृति, धर्म ओ जाति केर अस्तित्व भेटैछ। एतय भारत-भूमि पर कतोक बेरि विदेशीक आक्रमण भेल आ आक्रमणकारी लोकनि अपन-अपन प्रभाव छोड़ैत गेल, जे विभिन्न जाति-उपजातिकेँ प्रादुर्भूत कयलक।

ई पावन देश ऋषि-मुनिक देश रहल अछि, तपस्वी साधकक पुण्यभूमि रहल अछि, ज्ञानी-विज्ञानीक कर्मस्थली रहल अछि। आ ई लोकनि समय-समय पर आविर्भूत भऽ विविधतामे एकताक संदेश प्रदान करैत रहल छथि। जगतगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा चारि गोट शक्तिपीठक स्थापना सम्पूर्ण देशकेँ भावात्मक ऐक्य-सूत्रमे आबद्ध करबाक स्तुत्य प्रयत्न छल।

परंच देश मध्य विघटनकारी तत्त्वक इतिहास अति पुरातन थीक। एतय कतिपय छोट-छोट नृपति छलाह जे सर्वदा परस्पर साधारणो विषय पर प्रतिष्ठा-मर्यादाक मिथ्या भावना हृदय-प्रदेशमे राखि युद्ध करबा पर तुलल रहैत छलाह, जकर अनुचित लाभ विदेशी आक्रमणकारी लैत रहल। अत्यल्प सैनिकक साहाय्यें मोगल भारत पर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ लेलक। देशी नरेश लोकनि आपसमे लड़िते रहलाह। एतबे नहि, अपितु एहीमे सँ किछु देशद्रोही सेहो भेलाह जे विदेशीकेँ अपन राजकोष किंवा सैनिकसँ सहायता पर्यन्त प्रदान कएल जे वस्तुतः घृणास्पद विषय रहल। जखन अंग्रेज द्वारा भारत पर आक्रमण ओ आधिपत्यक प्रयास भेलैक तँ सिराजुद्दौला प्रतिरोधक झंडा हाथमे थम्हलनि परंच हुनक सेनापति मीरजाफर हिनका धोखा दऽ देलक आ सत्ता हस्तगत करबाक प्रलोभनसँ प्रेरित भए अंग्रेजक मदति कयलक। यद्यपि अंग्रेज ओकरो मुँहेँ भरे खसौलक, कतहु के नहि रहऽ देलक। आपसी ऐक्यक अभावमे भारतीय जनता मुँहेँ तकैत रहल आ अंग्रेज आधिपत्य स्थापित करबामे पूर्णतः सफल भए गेल। अंग्रेजसँ लोहा लेबाक प्रयास कतेको खेप भेल। झाँसीक रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बाबू वीर कुंवर सिंह आदि सदृश योद्धा रणभूमिमे उतरि अपन-अपन साहस ओ वीरताक परिचय बलिदानसँ देलनि, जकर इतिहास साक्षी अछि। मुदा, हिनका लोकनिक संग पुरनिहार विशेष लोक रहनि नहि, तँ प्रयास सराहनीय रहितहु तात्कालिक निष्फल रहलनि, परंच एकर दूरगामी प्रभाव भारतीय पर दृष्टिगत होइछ।

भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्तिक निमित्त सर्वश्रेष्ठ प्रयोजनक अनुभव भेलैक 'राष्ट्रीय एकता'क। मुदा, एकर सर्वथा अभाव रहने सम्पूर्ण विद्रोह अबल भऽ ध्वस्त भऽ गेलैक। अन्ततोगत्वा जखन अंग्रेजक निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार भारतीयक

ति उभरलैक, तखन राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयोमे एकताक भावना प्रस्फुटित भेल। ओना मुस्लिम लीग अपनहि क्षुद्र म्प्रदायवादक कारणेँ देशकेँ विभक्त कऽ देलक, जे दुनू देशक हेतु विनाशकारी रहल। तथापि राष्ट्रीय एकताक कुरनसँ देश स्वतंत्र भऽ कऽ रहल।

15 अगस्त 1947 ई0 मे भारत स्वाधीन भेल। लेकिन भाषावाद, सम्प्रदायवाद एवं क्षेत्रवाद अपन भार ठौलक। भाषाक मामला अति तन्नुक होइत छैक। तेँ स्वार्थान्ध नेतागण राजनीतिक मंच पर भाषाकेँ अस्त्र बनाए एकर भ्युत्थानक प्रश्न जनताक समक्ष उठाए जनता ओ सरकारक मध्य प्रत्यक्ष टकराव करएबामे हास्यास्पद योगदान दैत रल छथि। एतबे नहि, राजनीतिक गोरखधंधा वला व्यक्तिक द्वारा पड़ोसी राज्यक भाषाक संग सेहो तनावक स्थितिक न्म भेल। भाषाक आधार पर राज्यक निर्माणक स्वर देशक कोन-कोनसँ गुँजित होमए लागल। हैदराबादसँ आन्ध्र थक् भेल। बम्बइ दू खंडमे विभक्त भेल-महाराष्ट्र ओ गुजरात। पंजाबसँ हरियाणा हटल। पुनः कतिपय मुद्दा लए एहि भ राज्यमे परस्पर टकराव केर स्थितिमे दिनानुदिन अभिवृद्धि होइत गेल। एकर ज्वलन्त उदाहरण पंजाब थीक। आइ रखंड-आन्दोलन सेहो चरमसीमा पर इहो पृथक झारखंड-राज्यक मांग राष्ट्रीय स्तर पर भऽ रहल अछि, आ एहि रूपेँ शमे अन्तर्विवादक कारणेँ एकताक कमी देखबामे अबैछ, जकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव होइछ। एहि कमजोरीक लाभ देशी सहजतापूर्वक उठबैत अछि। कश्मीर समस्या एखन धरि बनले अछि। असमक समस्या आएल। ई सभ समस्या रतक रीढ़ तोड़ि चुकल छैक। एकर विकासमे अतिशय अवरोधक दैवालक रूपमे ई सभ समस्या ठाढ़ भेल श्न-चिह्न बनल छैक।

आब भाषाक रूपकेँ देखल जा सकैछ। राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीकेँ सुप्रतिष्ठित करबाक सत्प्रयास जे सरकार रा भेल तकर प्रबल विरोध दक्षिण द्वारा भेलैक। तमिलनाडुमे स्थिति तेहन भयंकर भऽ गेल जे एकरा भारत-संघसँ राक करबाक नारा प्रारंभ भऽ गेल। हिन्दी भाषी लोकनिक हत्या होमए लागल। पुनः ओकर प्रतिक्रियास्वरूप उत्तर रतमे तमिल भाषीक संग दुर्व्यवहार होमए लागल। सरकारकेँ दक्षिणक भावनाक रक्षार्थ संविधानमे आवश्यक शोधन पर्यन्त करए पड़लैक। राष्ट्रीय एकताक लेल राष्ट्रभाषाक अत्यधिक महत्ता छैक। ओ सभ राष्ट्रीय भाषाक मध्य म्पर्क-सूत्र स्थापित करैत अछि। संगहि सम्पूर्ण राष्ट्रक सामान्य भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। किन्तु, दुर्भाग्यवश न्दी राष्ट्रक एहि सेवासँ वंचित राखल गेल आ विदश। भाषा अंग्रेजी अपन अंग्रेजियत लए राष्ट्रक भाल पर चढ़ल रहि ल। भाषाक आधार पर राज्य-निर्माणक मांग एखनहुँ ठाम-ठामसँ भऽ रहल अछि, जे निस्सन्देह राष्ट्रक एकतामे धक बनल देशकेँ कमजोर करबाक दिशामे अपन निन्दनीय भागीदारी लैत देखल जा रहल अछि।

एकता एवं राष्ट्रीय शक्तिमे अकाट्य सम्बन्ध अछि। कोनो राष्ट्र तावत पर्यन्त परिपुष्ट नहि मानल जा सकैछ तावत धरि ओकर विविध अंगमे परस्पर ऐक्य-भाव नहि होइक। मनुष्य रूप, रंग, जाति-धर्म, भ्यता ओ स्वभावादिमे क दोसरासँ भिन्नता रखैत अछि; किन्तु व्यापक रूपेँ ओहि सभमे एक तरहक आभ्यन्तरिक एकता सन्निविष्ट रहैछ, जे

समान लक्ष्य दिशि प्रेरित करबामे एहि समस्त वैभिन्यकेँ गौण कऽ दैछ। इएह आभ्यन्तरिक एकता थीक एकात्मकता, जाहि पर राष्ट्रीय विकास आ सुरक्षा निर्भर करैत छैक।

भारतमे प्राचीन कालसँ अद्यपर्यन्तक विभिन्नतामे एकताक परिदर्शन होइछ, आ इएह एकर अपन खास वैशिष्ट्य थीक। हिमालयसँ लए कन्याकुमारी तक प्रसृत एहि पैघ देशमे जे विभिन्न प्रकारक जाति, धर्म, भाषा, आचार-व्यवहारादि दृष्टिपथ पर अबैछ से सभ मालामे ग्रथित बहुरंगी पुष्प सदृश अपन सौंदर्य वैशिष्ट्य ओ सुरभिक रक्षा करैत समष्टि रूपेँ भारतीय संस्कृतिकेँ अभिनव सौंदर्य ओ सुगंधि प्रदान करैत रहल अछि। राष्ट्रीयताक एक सूत्रमे आबद्ध एहि विविधतहिसँ भारतीय संस्कृतिक इन्द्रधनुषी मनोमुग्धकारी स्वरूपक सृष्टि भेल अछि। भारतक ई वैशिष्ट्य प्रायः अन्य कोनो देशमे नहि दृष्टिगोचर होइछ।

वैदिक कालहिसँ अद्यावधि भारतवर्षक सर्वदा आभ्यन्तरिक राष्ट्रीय ऐक्यक अनुभूति लैत रहल अछि। हमरा सभक पूर्वज परिकल्पना कएने रहथि-'संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्'। अर्थात् संग-संग चलु, संग-संग बाजू एवं सभक चित्त एक रहय, जकरा हमरा सभ आइ भावात्मक एकता कहैत छियैक तकर वास्तविक स्वरूप इएह छैक।

कैलाशसँ कन्याकुमारी तक समान महत्त्वक तीर्थक स्थापना कएनिहार हमरा सभक पूर्वज संभवतः ई उम्मीद कएने होएताह जे एहि सभ तीर्थक पर्यटनसँ देशक लोकमे ई भावना जागृत रहलैक जे आहार-व्यवहार, भाषा, वेश-भूषा आदिमे भिन्नता रहितहु हमरा लोकनि एकहि गाछक शाखा छी, अर्थात् सभ एकहि छी।

आर्य धर्म केर परम्परागत भव्य भावना हमरा सबहिक पुरातन ग्रन्थादिमे विशद रूपेँ उपलब्ध अछि, जाहिमे राष्ट्रीय एकताक कतिपय प्रमाण भेटैत अछि। एहि देशक महापुरुष लोकनि द्वारा सृजित क्रमिक रूपेँ कोनो ग्रंथक पारायणसँ एहि प्रकारक राष्ट्रीय एकताक दृष्टान्त भेटैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे, एतुका संस्कार एही प्रकारक वैचारिक-आदर्शसँ, परिवेष्टित-परिप्लावित अछि।

राष्ट्रीय संकटक क्षणमे भारतीय उच्चादर्शक उदाहरण महाभारतक निम्न श्लोकमे भेटैछ, जे निस्सन्देह प्रेरणास्पद थीक-

'वयं पंच वयं पंच, वयं पंच शतानिते

अन्यै महा विवादेतु स्वयं पंचाधिकशतम्।'

-एहिमे कौरवकेँ लक्ष्य करैत युधिष्ठिरक कहब छनि जे ओना तँ हमरा सभ पाँच भाइ छी आ कौरव लोकनि एक सय भाइ छथि। किन्तु, दोसरासँ विवाद भेला पर हमरा लोकनि एक सय पाँच भाइ छी। वाह्य संकटक आगमनसँ

ापसी अन्दरूनी समस्त भेदभावकेँ विस्मृत कऽ जाएब भारतक प्रमुख वैशिष्ट्य रहल अछि। इतिहास एहि तथ्यक ाक्षी अछि जे एहि आदर्शकेँ बिसरला उत्तर भारतवासी संकटमे समय-समय पर अबैत रहल अछि।

बीसम शताब्दीमे आबि भारतमे लोक-चेतना जाग्रत भेलैक। अंग्रेजक गुलामीक विरोधमे संघर्षरत रहबामे ष्ट्रीय एकताक स्वरूप उभरल, ओ एही कारणेँ स्वतंत्रताक दर्शनो लोककेँ भऽ सकलैक।

हमरा सभक शक्तिक प्रतीक थीक 'दुर्गासप्तशती'। ओकर मननसँ ई ज्ञात होइछ, जे जखन महिषासुरक त्याचार चरमोत्कर्ष पर पहुँचल तखन देवगण अपन ऐक्यक प्रतीक आदिशक्ति दुर्गाक आह्वान कएल। आइ जखन मरो सभक स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखंडता तथा जीवन-यापन पद्धति पर समस्या उत्पन्न भऽ गेल अछि तखन हमरा भक हेतु ई अत्यावश्यक अछि जे हमरा लोकनि राष्ट्रीय एकताक रूपमे आत्मशक्तिक प्रतिष्ठापना ओ संवर्द्धना करी। खने हमरा सभ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' क अपन सनातन लक्ष्य-पूर्त्तिमे सफल भऽ सकैत छी।

कहलो गेल अछि जे एकतामे बल अछि। एकतासँ जतए शक्ति-संचित होइत छैक; आत्म-बल बढ़ैत छैक, र्यादाक रक्षा होइत छैक, सांस्कृतिक उत्कर्षक मार्ग प्रशस्त होइत छैक ततहि विभाजन, ईर्ष्या, झगड़ा, राग ओ द्वेषसँ रित्रिक पतन होइत छैक, जकर प्रभाव नहि मात्र समाजक एक इकाई पर पड़ैछ, अपितु राष्ट्रव्यापी प्रभाव एकर पड़ैत क। सम्पूर्ण राष्ट्र सएह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन तंत्र-संचालन बाधित भए जाइछ, जकर लाभ अन्यान्य देश लेबए गैछ।

साम्प्रदायिकतासँ राष्ट्रीय एकता पर आघात पहुँचैत छैक। प्रायः प्रत्येक सम्प्रदायमे किछु व्यक्ति एहन होइत छि जे अपन स्वार्थ-सिद्धिक हेतु साम्प्रदायिक दंगा कराए दैत अछि। जन-समुदाय अर्थ-संकटक ज्वालामे जरैत, ीवनक अस्तव्यस्ततामे पिसाइत ओहि दिश ध्यानो नहि दैछ आ यावत ध्यान जाइतो छैक तावत धरि विपत्तिक पहाड़ ोकरा पर अभूतपूर्व ओ अप्रत्याशित रूपेँ टूटि चुकल रहैत छैक, जे ओकरा चकविदोर लगा दैछ। एहिसँ राष्ट्रीय एकता ंडित होइछ। राष्ट्रकेँ अपार क्षति एहिसँ पहुँचैत छैक।

समाजक एक इकाईसँ लए राष्ट्रक सम्पूर्ण जनसमूह पर्यन्त एक दोसराक संग शृंखलाबद्ध अछि, कड़ी रूपमे। भक कर्तव्य भए जाइछ राष्ट्रीय प्रगतिक प्रति कटिबद्ध ओ प्रतिबद्ध होएबाक। प्रत्येक व्यक्तिमे यदि एहि प्रकारक वनाक प्रादुर्भाव भऽ जाए तँ सकल कल्याण स्वयंसिद्ध अछि। किंतु, यदि एहिमे किओ दुर्भावना रूपी कालुष्य राखि ीवन-पथ पर रहल तँ एकताक राशि कमजोर भए जएतैक, फलतः राष्ट्रकेँ गर्तमे जाइत बिलम्ब नहि होएतैक आ सताक वएह रूप समक्ष झलकऽ लगतैक जे पूर्वमे मोगल ओ अंग्रेजक शासन-कालमे कहियो छल। अस्तु, राष्ट्रीय कता राष्ट्रहितमे सर्वथा प्रासंगिक थीक।

शब्दार्थ

जटिल-कठिन

सर्वांगीण-सभ तरहँ

बाधक-विघ्न पहुँचावय वला

अभ्युन्नति-विकास

स्तुत्य-प्रशंसनीय

ऐक्य-एकता

अबल-कमजोर

निष्फल-बेकार

निष्ठुरता-कठोरता

स्वार्थान्ध-स्वार्थ मे आन्हर होयब

अप्रत्याशित-जकर आशा नहि हो

दृष्टान्त-उदाहरण

पारायण-पूरा पाठ करब

पुरातन-प्राचीन, पुरान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) राष्ट्रभाषाक रूपमे कोन भाषा प्रचलित अछि?

(ii) भाषाक आधार पर राज्यक निर्माण भेलासँ कोन तरहक हानि होयत?

(iii) मुस्लिम लीग कोन तरहँ भारतीय एकताकेँ प्रभावित कयलक?

(iv) हमरा लोकनिक बीच 'दुर्गासप्तशती' कोन तरहेँ ख्यात अछि?

(v) अंग्रेज बहुत कम सैन्य शक्तिसँ भारत पर राज्य कयलक तकर मूल कारण की छल?

(vi) राष्ट्रीय एकताक चर्चा कोन ग्रन्थमे भेटैत अछि?

(vii) कोनो दू योद्धाक नाम लिखू?

२. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) राष्ट्रीय एकताक की महत्त्व अछि?

(ii) राष्ट्रीय एकता कोन-कोन बात पर निर्भर करैत अछि?

(iii) भारतक राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iv) राष्ट्रीय एकताक हेतु भाषाक की योगदान होइछ?

(v) की साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकतामे बाधक सिद्ध होइछ?

(vi) राष्ट्रीय एकतासँ की सभ लाभ होइत छैक?

३. भाषा अध्ययन

(i) सन्धि विच्छेद करू:

अभ्युन्नति, स्वार्थान्ध, हास्यास्पद, अद्यावधि, दुर्भावना।

(ii) विशेषण बनाउ :

राष्ट्र, एकता, देश, भारत, जाति।

(iii) निम्नलिखित शब्दक वाक्यमे प्रयोग करू :

पावन, अत्यल्प, परिकल्पना, लोकचेतना, अभिप्राय।

(iv) विपरीतार्थक शब्द लिखू :

तथ्य, एक, आहार, सार्थक, राजा।

योग्यता-विस्तार

1.अपना वर्गमे एहि निबंधक आधार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता कराउ।

2.निबंध लेखकक विषयमे अपन शिक्षकसँ आओर जानकारी लिअ।

□□□

नरेन्द्र झा

जन्म - अनन्त चतुर्दशी-1934 ई०

जन्म स्थान - तरौनी, दरभंगा

वृत्ति - चार्टर्ड एकाउन्टेंट

कृति - मिथिलाक आर्थिक विकास-2000 ई०, मिथिलाक-जनपदीय विकास-2005 ई०, मिथिलामे जनसंसाधन ओ प्रबंधन-2006 ई०, विकास ओ अर्थतंत्र-2008 ई०, अर्थतंत्र ओ भ्रष्टाचार-2012 ई०, परिभ्रमण-2012 ई०। एकर अतिरिक्त मिथिला मिहिर, मिथिला दर्शन आदि पत्र-पत्रिकामे मिथिलाक उद्योग-धंधा आ अर्थव्यवस्थासँ संबंधित लेख।

□□□

मिथिलांचलक उत्थान

भारतवर्षक उत्तर-पूब भागमे 25,000 वर्गमील क्षेत्रफल ओ 4,39,71,581 (2001क जनगणना) जनसंख्या बला भूभाग मिथिला भूमिक उर्वरा शक्ति, वन, जल, पशु आदि धनमे तथा बुद्धिक तीव्रतामे ककरोसँ न्यून छि। एहि भूमिक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगानदी, पूरबमे महानन्दा आ पश्चिममे गंडक नदी अछि। हिमालय सँ गंगा धरि 100 मील ओ पूरब सँ पश्चिम धरि 2.50 मील। ई क्षेत्र 25.3 अंश अक्षांश सँ 27.5 अंश उत्तर अक्षांश धरि एवं 83.0 अंश सँ 88.80 अंश पूर्व देशांतर धरि व्याप्त अछि। सुगौली सन्धिक पूर्व समस्त भूभाग भारतक अधीन छल। शासनमे सुविधा ओ गोरखासँ झंझटिक कारण अंग्रेज सरकार पूरा तराई क्षेत्र 1816 मे गोरखा सरकारकेँ दय देलक। एखन पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, मुजफ्फरपुर; सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, किशनगंज, सुपौल, सहरसा, कटिहार, पूर्णिया, अररिया, खगड़िया, मधेपुरा जिला ओ नवगछिया-बीहपुर (उत्तरी भागलपुर), जे मात्र पुलिस जिला अछि, एकर अंग अछि। तराई क्षेत्रक मोरंग, सप्तरी, महोत्तरी, सरलाही, चौटहाट, बारा ओ परसा एहि सन्धिक बाद एकरा क्षेत्रमे नहि अछि। हिमालय संसारक सर्वोच्च पहाड़ एवं सुखकर खनिज द्रव्यक आगार अछि। गंडक ओ महानन्दा जल, पटौनी ओ विद्युतक भंडार अछि। एहिठामक श्रम, भूमि, पर्वत ओ नदीक समस्त उपयोग नहि भेल छैक। यदि तकर उपयोग हो त' कोन एहेन एहिक सुख छैक जाहिसँ हमरा सभ वंचित रहब। भूमिसँ भोजनक हेतु नाना प्रकारक अन्न, तरकारी ओ फल, पहिरय लेल वस्त्रक बांग; पहाड़सँ सड़क, बान्ह ओ मकान बनयबाक हेतु विभिन्न तरहक पाथर; वनसँ काठ ओ नदीसँ माछ तथा खेत पटयबाक लेल जल, पेयजल ओ उद्योग-धंधा, कल-कारखाना, रेलगाड़ी ओ अन्य यातायात आदिक हेतु बिजली अल्प आयासमे एहि अंचलमे संभव छैक। ने लोकक अभाव अछि, ने प्राकृतिक साधनक, अभाव अछि तँ मात्र सुव्यवस्थाक। एहि साधनक समुचित व्यवस्था कोना होयत एहि हेतु हमरा लोकनि कटिबद्ध भ' जाइ।

जनसंख्या कोनो भूभागक सम्पत्ति बुझल जाइछ। जनशक्ति राष्ट्रक पूंजीक द्योतक थिक। मिथिलांचलक जनसंख्यामे 1991क तुलनामे 2001 मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। आजुक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पुनर्निर्माणक कोनो योजनामे जनाधिक्य समस्या महत्त्वपूर्ण अछि। श्रम शक्तिक समुचित उपयोग नहि भेलासँ जे समस्या उत्पन्न भेल छल तकर निराकरण केन्द्र सरकार आ राज्य सरकार विभिन्न योजनाक अन्तर्गत कय रहल अछि।

मानव सभ्यताक विकासक आरम्भसँ कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक साधन रहल अछि। वास्तवमे कृषि सभ उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक थिक। कोनो अल्प विकसित भूभाग खाद्यान्नमे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि कय सकैछ। विश्व बैंकक एक रपटक अनुसार बिना कृषि विकासक आर्थिक विकास संभव नहि। मिथिलांचलमे तीन प्रकारक फसिल भदै, अगहनी ओ रब्बी होइछ। धानक खेती 52 प्रतिशत क्षेत्रमे एवं एक एकड़मे उत्पादन 1432 एलबी जे अमेरिकामे 2185 एलबी, चीनमे 2433 एलबी, जापानमे 3444 एलबी ओ इटलीमे 4565 एलबी। गहूमक उत्पादन प्रति एकड़ 625 एलबी जे चीनमे 989 एलबी

अमेरिकामे 1030 एलबी, जापानमे 1713 एलबी ओ मिस्रमे 1918 एलबी। अही गतिसँ अन्य जजाति उपजैत अछि। चायक खेती किशनगंजमे शुरू कयल गेल छैक। नारियल, केरा ओ अनानासक व्यावसायिक खेती आब आरम्भ भेल अछि। एहि अंचलक पछुआयल खेती ओ निम्न उत्पादकताक मुख्य कारण थिक प्राकृतिक प्रकोप, तकनीकी अभाव, आर्थिक ओ संस्थागत असहयोग। भूमि सुधार कानून सेहो असफल सिद्ध भेल। विपणन ओ भंडारणक समुचित व्यवस्थाक अभावक पूर्ति करबाक हेतु कोनो वस्तुक भंडारणक समस्याक समाधानक हेतु सरकार सन्नद्ध बुझि पड़ैछ।

प्राचीन कालमे ई भूभाग आर्थिक दृष्टिसँ स्वावलम्बी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय होइत छल। समाजक ख़ास वर्ग उद्योग विशेषमे लागल छलाह। हुनकालोकनिक जीवन निर्वाहक वैह साधन छलनि। गृह उद्योग पूर्ण रूपसँ विकसित छल। किन्तु विदेशी शासन कालमे एहि उद्योगकेँ कोनो प्रोत्साहन ओ सुविधा नहि भेटलै। सभटा नष्ट भ' गेलैक। चीनी उद्योगक विकास 1932 मे प्रारम्भ भेल। 17 गोट मिल कार्यरत छल। एहि मिलक प्रतिस्थापन ओ आधुनिकीकरण नहि भ' सकल। सम्प्रति सभ बन्द भय गेल अछि वर्तमान सरकार तकरो सुढ़िऐबामे लागल अछि। 1955 मे आधुनिक ढंगक कागज मिल लगायल गेल जकर संख्या ग्यारह भ' गेल, सभ बन्द अछि। एतय जूटकेँ सोनाक रेशा, नामसँ जानल जाइछ। उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि किशनगंज जिलामे हाथ सँ बोरा बुनल जाइत छल। बादमे कटिहारमे आधुनिक जूट मिल बनल जे बन्द अछि। समस्तीपुरमे एक जूट मिल कार्यरत अछि। पटुआक उत्पादन अधिक होइछ जे कलकत्ताक जूट मिलमे जाइछ। एहि उद्योगक विकासक पूर्ण संभावना छैक। 1983मे सहकारिता क्षेत्रमे अत्याधुनिक सूत मिल कार्यरत छल। 1988मे राज्य वस्त्र निगम द्वारा इन्डस्ट्रीयल कॉटन यार्न' प्रोजेक्ट कार्यरत कयल गेल, सम्प्रति बन्द अछि। 1976मे दरभंगामे औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना भेल। लघु उद्योग विकासक हेतु समस्त क्षेत्रमे औद्योगिक प्रांगण बनल। उद्यमीकेँ भूमि एवं भवन मुहैया कयल गेल। एहिना मुजफ्फरपुरक बेलामे उत्तर बिहार औद्योगिक विकास प्राधिकार बनल। हाजीपुरमे राज्य सरकार सेहो उद्योग लगौलक। मुदा सरकारक औद्योगिक नीतिक कारण औद्योगिक क्षेत्रमे आमूल परिवर्तन होयबाक संभावना अछि। वर्तमान सरकार औद्योगिक प्रगतिक लेल डेग उठा रहल अछि।

राष्ट्रक आर्थिक विकासमे यातायात साधनक विशेष महत्व अछि। मात्र आर्थिक नहि सामाजिक, सांस्कृतिक बौद्धिक दृष्टिकोणसँ एकर महत्व छैक। यदि कृषि एवं उद्योग राष्ट्ररूपी प्राणीक शरीर ओ हड्डी थिक त' यातायात ओकर जीवन तन्तु। एहि अंचलक विकासमे समुचित यातायात व्यवस्था नहि रहलासँ बड़ पैघ असौकर्य भ' रहल छल मुदा विगत एक दशकसँ मिथिलांचलक संग-संग बिहारक समस्याक समाधान करबाक हेतु नेशनल हाइवेज, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना, इस्ट एण्ड वेस्ट कोरिडोर योजनाक अंतर्गत मिथिलांचलमे अनेक सड़कक निर्माण भय रहल अछि। प्रत्येक ग्रामकेँ सड़क द्वारा शहरसँ जोड़बाक योजना चलि रहल अछि।

एहिठाम ईशावस्योपनिषत् सहित शतपथ ब्राह्मण, अनेक श्रौत, गुह्य ओ धर्मसूत्र, स्मृति ओ पुराण, जर्मनीक पूर्व मीमांसा, ओ शबरक भाष्य, कपिलक सांख्य, गौतमक न्याय ओ कणादक वैशेषिक दर्शन, कुमारिलक वार्तिक ओ

टीका, वाचस्पतिक भामती, गंगेश-वर्द्धमान-पक्षधर-शंकर-वाचस्पतिक नव्यन्याय एवं अनेको विद्वानक काव्य, निबंध आदि सँ भरल-पुरल साहित्यिक जगत रहल अछि। बिहार सरकार शिक्षाक विकासक लेल प्रतिबद्ध अछि। शिक्षाक प्रति गरीब-गुरबाक ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु अनेक प्रकारक योजना चला रहल अछि जेना-पोशाक योजना, साइकिल योजना, छात्रवृत्ति योजना, मध्याह्न भोजन आदि। गरीबक झोपड़ी धरि शिक्षाक दीप जड़य ताहि वास्ते आंगनबाड़ी योजना सेहो सरकार द्वारा चलाओल जा रहल अछि। 40 छात्र पर एक शिक्षकक नियोजन हेतु सरकार प्रयत्नशील अछि। एहि तरहे मिथिलांचल टामे नहि, सम्पूर्ण बिहारमे लाखो शिक्षकक नियोजन कएल जा रहल अछि।

जन स्वास्थ्य क्षेत्रमे प्रखण्ड स्तरसँ जिलास्तर धरि अस्पतालक सुदृढ़ीकरण कयल जा रहल अछि। जे अस्पताल मृतप्राय भऽ गेल छल ताहिमे संजीवनी आबि गेलैक। डाक्टर आ रोगीकेँ भेंट होइत छैक। दवाई भेटैत छैक। असाध्यसँ असाध्य रोगक निदानमे गरीबक सहायता देबाक लेल सरकारी सुविधा सेहो मुहैया कराओल जा रहल छैक।

मिथिलांचल सहित बिहारक विकास पटरी पर आबि रहल अछि। बिजलीमे जौँ पूर्ण सुधार भऽ जाइक तखन बिहारक किसान पंजाब जकाँ सुसम्पन्न भऽ जायत। ओना शिक्षा आ स्वास्थ्य जाहि तरहेँ समृद्धि पाबि रहल अछि, तँ ओ, दिन दूर नहि जे मिथिला पूर्वहि जकाँ श्री सम्पन्न भऽ जाय।

शब्दार्थ

आयास-प्रयास

जजाति-फसिल

असौकर्य-कठिनाई

कंगाल-अत्यन्त गरीब

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) मानव सभ्यताक विकासक आरम्भसँ लोकक जीविकाक प्रमुख साधन रहल अछि-

(क) कृषि (ख) उद्योग (ग) नौकरी (घ) माछक व्यापार

(ii) मिथिलामे चीनी उद्योगक विकास प्रारम्भ भेल-

(क) 1932 ई० (ख) 1942 ई० (ग) 1950 ई० (घ) 2012 ई०

(iii) मिथिलामे आधुनिक ढंगक कागज मिल लगाओल गेल-

(क) 1955 ई०मे (ख) 1960 ई०मे (ग) 1972 ई०मे (घ) 1980 ई०मे

(iv) दरभंगामे औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना भेल -

(क) 1976 (ख) 1990 (ग) 2000 (घ) 2013

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) सुगौली सन्धिक पूर्व समस्त.....भारतक अधीन छल।

(ii) जनसंख्या कोनो भूभागक सम्पत्ति.....जाइछ।

(iii) राष्ट्रक आर्थिक विकासमे.....साधनक विशेष रहल अछि।

(iv) हमर प्राचीन बड्ड.....छल।

3. निम्नलिखित शब्दमे सँ सही शब्दमे सहीक (✓) आ अशुद्ध शब्दमे गलतक (X)चेन्ह लगाउ-

उजवन, अधोगति, सम्पती, समूचित, आर्थिक, जनशक्ति, याज्ञवल्क्य।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) पाठक आधार पर मिथिलांचलक चौहद्दी लिखू।

(ii) 2001 मे मिथिलाक जनसंख्यामे कतेक प्रतिशत वृद्धि भेल?

(iii) मिथिलामे कतेक तरहक फसिल होइछ? किछु फसिलक नाम लिखू।

(iv) 1932 मे मिथिलामे कतेक गोट चीनी मिल कार्यरत छल?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) प्रारंभमे मिथिलामे कतेक तरहक मिल वा उद्योगक स्थापना भेल छल?

(ii) शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलाक प्राचीन काल केहन छल? वर्णन करू।

6. पाठमे आयल संज्ञा शब्द चुनि कऽ लिखू।

7. गतिविधि-

(i) मिथिलाक आर्थिक उन्नतिक लेल की सब आवश्यक अछि?

(ii) अहाँ अपन गामक आर्थिक उन्नतिक लेल की सब आवश्यक कार्य बुझैत छी।

दिशा निर्देश

1. शिक्षकसँ आग्रह जे मिथिलाक आर्थिक उन्नति लेल की आवश्यक कार्य अछि? छात्रकेँ विस्तारसँ बुझाबथि।

□□□

देवकान्त झा

जन्म - 1936 ई0

जन्म स्थान - चतरा, मधुबनी

वृत्ति - प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, मैथिली अकादेमी, पटना, निदेशक सह सचिव -1987-89 ई0, पटना। साहित्य अकादेमी, दिल्लीक एडवाइजरी कमिटीक सदस्य (मैथिली) 1993-1997 ई0।

कृति - विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता, निबंध ओ समीक्षा मूलक रचना प्रकाशित, मैथिली दस रूपक, कथा कल्प (मैथिलीमे) महाकवि कालिदास आओर भवभूतिक आलोचनात्मक अध्ययन हिन्दीमे, ए हिस्ट्री ऑफ मोडर्न मैथिली लिटरेचर अंग्रेजीमे।

पुरस्कार - नलिन विलोचन शर्मा पुरस्कारसँ पुरस्कृत-1988-89 ई0।

□□□

मिथिलाक रंग ओ शिल्प

कला मानव-जीवनक जीवित दस्तावेज थिक। कोनो देशक सभ्यता-संस्कृतिक आत्मा ओकर कलाकृतिएमे प्रतिध्वनित होइत अछि। कला द्विविध होइछ-ललित कला ओ उपयोगी कला। ललित कला पाँच वर्गक अछि-स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत ओ काव्य। कलाक कुल चौंसठि भेदमे सँ ललित कला सर्वोपरि थिक। ललित कलाक संवर्गमे साहित्य आओर संगीतक पश्चात् दोसर नम्बरपर मूर्ति ओ चित्रेक स्थान अछि। चित्र जीवनक मूक कविता थिक आ कविता जिनगीक बजैत चित्र। नाटकमे ओ चित्र बजबे नहि, चलबो-फिरबो करैत अछि। तैं नाटककेँ कवित्वक चरमसीमा कहल गेल अछि-नाटकान्तं कवित्वम्। साहित्य आ संगीतसँ रहित व्यक्ति जड़मति थिक। महाकवि भर्तृहरिक दृष्टिमे साहित्य, संगीत आ कलासँ शून्य मनुक्ख एहन आँखिदेखार पशु थिक, जकरा खाली नाङरि आ सींगटा नहि रहैत छैक। पशुक अहोभाग्य जे मानव घास नहि खाइत अछि, ने तँ पशुकेँ घास कहाँसँ भेटितैक-''साहित्य सङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः''। जिनगी जीवाक एक कला थिक। कला-जगत् जिनगीकेँ सरस, सुखद ओ आनन्दप्रद बनबैत अछि। कलाक-संसारक सर्वस्व थिक मनुष्य-दुःख दैन्य, अभाव आ पीड़ासँ लड़ैत यैह हाड़-काठक मनुक्ख जकरा प्रकृति आ परमेश्वरसँ जोड़ि कलाकार आनन्दक अमृत पिया देबाक लेल अपस्याँत रहैत अछि। तैं कलाक दुनियाक केन्द्र आ परिधि मनुष्ये आ मानव-जीवन थिक। कला जीवनक सहज अनुकृति थिक, ओकर सजीव चित्रांकन आ विशिष्ट रागात्मक अभिव्यञ्जना थिक। ओकर पुनर्प्रस्तुति आ पुनर्निर्माण थिक। तैं कोनो समाज वा राष्ट्रक सहज प्राणधारा आ जीवन-शैली एतय देखल जा सकैए। कोनो देशक कलाकृतिकेँ देखि ओहि देशकेँ सहजहि चिन्हल-परेखल जा सकैए। मिथिलाक शिल्प ओ चित्रक संसार मिथिलाक कथा कहैत अछि। मिथिलाक चित्रशैली मिथिलाक वास्तविक जीवन-शैली थिक। ई सप्राण कलाकृति मिथिलाक स्पन्दनशील जन-जीवनक मूक कविता थिक। एहिमे जे देश-कोशक राग-रंग आ माटि-पानिक महँ-महाइत सौरभ अछि सएह हमर परिचय थिक।

मिथिला भारतक सांस्कृतिक आत्मा थिक। युग-युगसँ ई धर्म, दर्शन ओ अध्यात्मक त्रिवेणी रहल अछि। ई सनातनिसँ संस्कृत विद्याक गढ़ रहल अछि। भारतीय संस्कृतिक शुद्ध स्वरूप एतय सुरक्षित रहल अछि। कोनो मिश्रण वा प्रदूषणक शिकार मिथिला कहियो ने रहल। तैं एकर सुच्चा रूप एतुका कलाकृतिमे देखल जा सकैए। परम्परा आ संस्कृतिक मधुरतम सामंजस्य मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलामे द्रष्टव्य थिक। ललितकला कोनो देशक सांस्कृतिक सम्पदाक सनातन धरोहरि थिक। बीसम शताब्दीक छठम-सातम दशक मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलाक इतिहासक स्वर्ण-युग रहल अछि जखन एकरा सर्वप्रथम व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय मञ्च भेटलैक। सौंसे संसारमे ई क्रांति मचा देलक। मिथिलाक महान सपूत स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र आ स्वनामधन्य मिथिलाक वरद पुत्र उपेन्द्र महारथीक योगदान एहि क्षेत्रमे अविस्मरणीय अछि। महान कलामर्मज्ञ डब्ल्यू. जी. आर्चर 'मैथिली चित्रकला' (Maithili Painting)' नामक पोथी लिखि पहिले-पहिल एहि कलाकेँ सार्वभौम मान्यता दियौलनि। पुनः 1982 ई.मे 'मधुबनी पेंटिंग आ 1987 इसवीमे मैथिलीमे 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' लिखि स्व. डा. उपेन्द्र ठाकुर एहि

क्षेत्रमे उल्लेखनीय काज कयल। जन्मजात अन्वेषक आ कलामर्मज्ञ स्वर्गीय कुलकर्णी एहि कलाक प्रति अपन सम्पूर्ण जीवन समर्पित कय देलनि। महाराष्ट्री रहितो ओ मिथिलाक अनुपम रत्न छलाह। सुप्रसिद्ध राजनेता ललित बाबूक संरक्षण, फ्रांसीसी महिला ग्रए मेकुआदक कलाप्रेम, महान् पुपुल जयकर, राजीव सेठी, जगदीशचन्द्र माथुर आदिक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जायत जनिक अथक प्रयासेँ मिथिलांचल आइ संसारक कलाकृति मंचपर प्रतिष्ठापित अछि। सरिपों धर्म-दर्शन आ अध्यात्मे नहि, मिथिला साहित्य-संगीत ओ कलाक पावन त्रिवेणीधाम रहल अछि।

'स्वान्तः सुखाय' अथवा 'कला कलाक लेल' (Art for art' Sake) तँ कलाकारक परम सुखधाम थिके; मुदा मिथिलाक शिल्पकलामे जीवनक यथार्थ प्रतिबिम्बन, आनन्द ओ विनोदक अतिरिक्त सेवा-समर्पण एवं आर्थिक उपयोगिताक सृजनक भाव सेहो निहित अछि। अर्थशास्त्रक शब्दावलीमे यदि उत्पादन उपयोगिताक सृजन थिक तँ मैथिल चित्रशिल्प एक सहज-सुन्दर निदर्शन-प्रदर्शन। गृह उद्योग रूपमे विकसित आइ ई कृषिक क्षेत्रमे पसरल बेकारीक समस्याक यथेष्ट समाधान प्रस्तुत कय सकैत अछि। संगहि दलाली-दादागिरी ओ माइनजन-मझौलियाक शोषणक चक्कों तरसँ निकालि मिथिलाक माटि पानिपर जमल कलाकेँ समुचित प्रोत्साहन आ बाजार भेटलैक तँ संरक्षणक अन्तर्गत ई हमर विदेशी मुद्राक अभिवृद्धिमे समर्थ योगदान कय सकैत अछि। मिथिलाक आजुक जीवित संदर्भमे शिल्पकला ओ चित्रकलाक महत्त्व राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजपर सर्वाधिक अछि। यदि लोक जागरूक रहि अपन एहि प्राचीन सम्पदाकेँ जोगाकेँ राखय तँ मिथिला गृह उद्योग आ वैश्विक पर्यटन केन्द्रक रूपमे विकसित कयल जा सकैए।

आधुनिक चित्रकलाक संसारमे मिथिला चित्रकलाक धूम मचल अछि। फैशनक दुनियामे सेहो एकर बाजार गरम अछि। कीमती-सँ-कीमती साड़ीक शोभामे आइ मिथिलाक अरिपन चारि चान लगा रहल अछि। संसारक कपड़ाक वेशकीमती डिजाइनमे मिथिलाक चित्रकलाक चमत्कार देखिते बनैछ। जे विशेष पावनि-तिहार वा पूजा-अर्चामे पहिने मिथिलाक घर-आंगनक सिंगार छल से आइ संसारक शोभा अछि। अजन्ताक सप्राण चित्र ओ एलोराक बजैत मूर्ति जहिना विश्वक तीर्थयात्रीकेँ अभिभूत करैत आयल तहिना मिथिलाक घर-आंगन, देवाल, तुलसी चौड़ा, कोहबर वा कोबराक घर आदिमे हाथसँ बनाओल गेल चित्र, माटिक भाँति-भाँतिक मूर्ति, सूइ-डोराक राशि-राशिक चमत्कार, सिकी-पौतीक अपूर्व कलाकारिता आदि देशी-विदेशी पर्यटकक ध्यान आकृष्ट कए रहल अछि। विभिन्न पावनि-तिहार, अनेको संस्कार (बिआह, उपनयन, मुण्डन आदि), देवी-देवताक पूजा अर्चना गोसाउनिक घरसँ सलहेसक मन्दिर धरि ओ कुम्हारक चाकसँ डोम-डोमनिक पथिया-मौनी आ सूप-चालनि धरि एकर व्यापकता देखल जा सकैए। ओना मिथिलांचलक कर्ण कायस्थ ओ ब्राह्मण वर्णमे मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला विशेष रूपसँ सुरक्षित रहल अछि। आजुक संसारक नीक-सँ-नीक होटल-रेस्तराँ, सामुद्रिक बन्दरगाह, शिक्षण संस्था विश्वविद्यालय, बाबू-भैयाक ड्राइंग रूम, रेलक डिब्बा, प्लैटफॉरम, टीशन आदिपर मिथिलाक एहि कलाकृतिकेँ देखि हमरालोकनि सहसा आनन्दमुग्ध भय जाइत छी। मिथिलाक विशिष्ट चित्र ऐपन वा अरिपनमे तन्त्र-मन्त्रक चमत्कार ओ रहस्यवादी दार्शनिक ऊहापोहक शैली सेहो सन्निहित अछि। कतेको मैथिलानी आइ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

बहुश: सम्मानित भय चुकली अछि। पद्मश्रीसँ पुरस्कृत जगदम्बा देवी, आ गंगा देवी तथा राष्ट्रपति एवं अन्यान्य पुरस्कारसँ पुरस्कृत महासुन्दरी देवी, सीता देवी, गोदावरी देवी, चन्द्रकला देवी, यमुना देवी, बाना देवी आदि नाम स्वर्णाक्षरमे उल्लेखनीय थिक। आजुक मिथिलाकेँ तेँ मर्यादा अपन एहि गृहकलासँ भेटलैक अछि से युग-युगधरि हमरालोकनिकेँ गौरवान्वित करैत रहत। सरिपों ई लोकनि मिथिलाक पिकासो थिकीह। एहन अपन स्त्रीरत्नसँ मिथिला आइ धन्य अछि।

जँ मधुबनी राँटी, रसीदपुर, जितबारपुर, भवानीपुर, हरिनगर, लहेरीगंज आदि चारूकातक क्षेत्र एहि कलाक प्रमुख प्रसवभूमि रहल अछि तँ ई मधुबनी चित्रकलाक (Madhubani Paintings) नामसँ जानल जाइत अछि। आइ एहि कलाकेँ संसारक ततेकने प्रशस्तिक फुलडाली भेटलैक अछि जे विश्वक मानचित्र पर मधुबनी सदा-सर्वदाक लेल अमर बनि गेल। एहि चित्रकलाक तीन भाग अछि-भित्तिचित्र (Wall Paintings), पटचित्र (Canvas Paintings) ओ भूमिचित्र (Floor Drowings)। मिथिलामे भित्तिचित्र आ भूमिचित्रक प्राधान्य अछि। पीढ़ी-दर-पीढ़ीसँ परम्परागतरूपसँ मैथिल ललना एकरा जोगओने छथि। कोबरक घर एहि कलाक सबसँ पैघ आकर्षण थिक। कोहबर वा कोबर लिखबामे मैथिलानीक भावप्रवणता, अनुभूतिमयता आ कल्पनाशीलता देखितै बनैछ। प्रेम, सौन्दर्य ओ आनन्दमय उल्लासक ई रंग ओ शिल्प अपूर्व अछि। भूमिचित्र, भूमिशोभा व अरिपनमे मिथिलाक तन्त्र-मन्त्रक बहुविध आयाम, रहस्यमयता, धार्मिक प्रतीकात्मकता, देवी-देवताक उपासना-प्रक्रिया आदिक चमत्कार अछि। चकमक चाउरक पिठार आ रंगीन भस्म, सिन्दूर आदिसँ मैथिल ललनाक आडुरक ई कौशल अपूर्व अछि। मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक ई परम्परा बहुत अर्थगर्भित ओ महिमामण्डित अछि। मृण्मूर्ति (माटिक मुरत), गुड़िया (कनिआ-पुतड़ा) श्यामा-चकेबा आदि एकर व्यावहारिक रूप थिक। व्यावहारिक आ उपयोगी कलाक रूपमे सिकी, बाँस, सूत, काठ, मूँज, मोथा, लाह, टकुरी,-चरखा आदिक रूप मिथिलामे बहुत विकसित अछि। गृह-उद्योगक रूपमे यथोचित संरक्षण पोषण भेने कृषि-क्षेत्रमे पसरल बेकारीक भूतकेँ ई आसानीसँ भगा सकैए। बिचौलिया जे चानी कटैत अछि तकरा सरकारी प्रयाससँ दूर कयल जा सकैए।

दरबारी संस्कृतिसँ भिन्न जनजीवनक प्रतिनिधि मिथिलाक ई लोक-कला वा गृह-कला अमर थिक। मिथिलाक सामाजिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक सम्पदाक एहि सनातन धरोहरिकेँ जाहि निष्ठा आ समर्पणक संग मिथिलाक अशिक्षित वा अर्धशिक्षित महिलागण बिना कोनो शिक्षण-प्रशिक्षणकेँ युग-युगसँ संजोगने रहलीह अछि। तकर जतेक बड़ाई कयल जाय, थोड़ थिक। रंग ओ शिल्प, कूची ओ कलम, शास्त्र ओ साहित्य, धर्म ओ दर्शन, तन्त्र ओ मन्त्र, रेखा ओ वर्ण-विलास, प्रकृति ओ परमेश्वर तथा कोबरक घरसँ गोसाउनिक मन्दिरधरि पसरल मधुबनी चित्रकला आइ ग्रह नक्षत्र जकाँ भूमण्डलक कण्ठहार अछि। जाधरि मैथिल संस्कृति जीवित रहत ताधरि एहि चारूचन्द्रक चन्द्रकलासँ नटनागरक ई संसार जगमग रहत। राष्ट्रीय अस्मिताक आधार, विश्वामित्रक सिंगार, गौरवक आगार, ओ विदेशी मुद्राक भण्डार मिथिलाक ई रंग-शिल्पक संसार युग-युग जीवओ आ जन-मानसकेँ जुड़ाबओ।

शब्दार्थ

द्विविध-दू प्रकारक

मूक-बौक

अपस्यांत-बेचैन, बेहाल

सनातनि-शाश्वत जे सबदिन रहय

दैन्य-दीनता, गरीबी

कलामर्मज्ञ-कला जननिहार

जन्मजात-जन्मसँ

कण्ठहार-गरदनिक हार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) साहित्य-संगीत कलासँ रहित के थिक?

(क) दमवता (ख) दनुज (ग) मानव (घ) पशु

(ii)कोन मैथिल ललना पद्मश्री पौलनि?

(क) सुनयना (ख) शोभना (ग) मीनाक्षी (घ) जगदम्बा

(iii) मैथिलीक पोथी 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' के लिखलनि :

(क) भास्कर कुलकर्णी (ख) राधाकृष्ण चौधरी (ग) उपेन्द्र ठाकुर (घ) पुपुल जयकर

(iv) डब्ल्यू॰ जी॰ आर्चरक पोथी कोन थिक?

(क) मधुबनी पेन्टिंग (ख) मैथिल पेन्टिंग (ग) मिथिला पेन्टिंग (घ) तिरहुत आर्ट्स

(v) ललित कलाक कतेक भेद अछि?

(क) तीन (ख) पाँच (ग) सात (घ) नौ

(vi) 'स्वान्तःसुखाय' केर अर्थ थिक?

(क) स्वार्थ-साधन (ख) परार्थ-सिद्धि (ग) अपन हृदयक सुख लेल (घ) लोक-कल्याण लेल

2. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) डॉ॰ उपेन्द्र ठाकुरक कोन रचना अछि?

(ii) जगदम्बा देवी कोन तरहेँ ख्यात छथि?

(iii) कोहबर आ गोसाउनिकघरक अन्तर चारि वाक्य लिखू।

(iv) भूमि चित्र कोन अवसर पर लिखल जाइछ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'मिथिलाक रंग ओ शिल्प' निबन्धक सारांश लिखू?

(ii) मिथिलाक शिल्प ओ कलाक की विशेषता अछि? बुझा कऽ लिखू।

(iii) "मिथिला कला-कौशलक गढ़ थिक-" कोना? स्पष्ट करू।

(iv) मधुबनी पेंटिंगक प्रचार-प्रसारक लेले ललित बाबूक भूमिका लिखू।

4. भाषा-अध्ययन

(i)वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करू :

पिठार, नाङरि, सौंसे, आँखिदेखार, ऐपन, संजोगब, मह-मही, जाधरि-ताधरि, साक्षात् ।

(ii)अर्थ-भेद देखाउ :

राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय; सदा-सर्वदा; शिक्षण-प्रशिक्षण; निर्माण-पुनर्निमाण; प्रस्तुति-पुनर्प्रस्तुति; मूक-वाचाल, गाम-घर।

(iii)अधोलिखित सहचर शब्दक वाक्यमे-प्रयोग करू :

देश-कोश, माटि-पानि, घर-आङन, हाड़-काठ, दुःख-दैन्य, रग-रंग, पावनि-तिहार, पूजा-अर्चा।

(iv)निम्नलिखित शब्दक विशेषण बनाउ :

विश्व, जीवन, सुरभि, राष्ट्र, महत्, धर्म, समाज।

(v)वाक्यमे प्रयोग करू :

धूम मचब, चानी काटब, बेकारीक भूत भगायब, जोगाकेँ राखब।

□□□

भाग्यनारायण झा

न्म	-	12 जनवरी 1939
न्म स्थान	-	ग्राम+पोस्ट-कारज (दरभंगा)
ति	-	पत्रकारिता,दिसम्बर 1960 ई0 सँ मई 2012 धरि आर्यावर्त, 'हिन्दुस्तान' आ 'दैनिक जागरण' मे क्रमशः कार्यरत। 'मिथिला मिहिर' (पटना) आ हिन्दी साप्ताहिक 'दिनमान' (नयी दिल्ली) मे क्रमशः समीक्षक आ अंशकालीन संवाददाता।
ति	-	मैथिली सामाजिक नाटक 'मनोरथ' (1965) एकांकी संग्रह 'सोनक ममता' (1970) आ विदेश यात्रा वृतांत 'परदेस' (2007)।
माजिक कार्य	-	सामाजिक साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था चेतना समिति सँ 1961 सँ जुड़ल। 1967-68 मे समितिक संयुक्त सचिव। 1977 सँ 79 धरि प्रचार सचिव। बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियनक कोषाध्यक्ष कतेको वर्ष।
म्मान	-	पुरस्कार : चेतना समितिसँ चेतना-सेवी सम्मान (2010), राष्ट्रीय स्तरक संस्था विश्व संवाद केन्द्र (पटना) सँ 2013 मे देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद पत्रकारिता शिखर सम्मान।

□□□

वैश्वीकरण आ अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण आ भूमंडलीकरण दुनू शब्द एक दोसरक पर्याय अछि। 1970 क दशकक बीचमे विश्वमे एक नव तरहक, धनी आ सम्पन्न राष्ट्र वर्चस्वकेँ सुदृढ़ रहयवला अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाक शुरुआत भेल। एहि नव व्यवस्थाक मुख्य मुद्दा छल मुक्त, नियंत्रणहीन व्यापार, मुद्रा ओ पूंजी बाजार पर सँ सभ नियंत्रणक समाप्ति। प्रत्यक्ष टैक्समे कटौती, राज्य व्ययमे कमी तथा राज्य द्वारा लागू कयल आर्थिक नियंत्रणक समाप्ति, सार्वजनिक उद्योगक निजीकरण, बहुदेशीय कम्पनी तथा निजी उद्गमक विश्व अर्थव्यवस्थाक मंच पर राजकीय नियंत्रणसँ मुक्ति। एकर अतिरिक्त काफी समयसँ चलि रहल श्रमिक वर्ग तथा मध्यम वर्गक कल्याणक लेल आंशिक समता मूलक रुझान। राष्ट्रीय सीमाकेँ आर्थिक मामलामे समाप्त करबाक एक नव तरीका प्रारम्भ भेल। एहि नव व्यवस्थाकेँ भूमंडलीकरण नाम देल गेल। एहि नीतिगत परिवर्तनक उद्देश्य रहैक मूल्यक सही निर्धारण आ बाजारक मूल्यक परिवर्तन या संशोधनक आधार पर आर्थिक निर्णय, जे कि अनुकूलतम आ विवेकसम्मत होइक।

एहि भूमंडलीकरणकेँ संभव करऽमे आधुनिक तकनीकी प्रगतिकेँ पैघ भूमिका रहल अछि। भूमंडलीकरणक समर्थक लोकनिक कहब छनि जे वैश्वीकरण-भूमंडलीकरणक कारण विश्वक बाजार आपसमे जुड़ि गेल अछि। पारस्परिक समन्वय भ' रहल अछि। मुद्रा, एकर विरोधमे कहल जाइत अछि जे जँ ई कथन सही होइत तँ विश्वक वस्तुक मूल्यमे एक समान होयबाक प्रवृति पाओल जाइत। तँ भूमंडलीकरणकेँ गैर समतापूर्ण सेहो कहल जाइत अछि। भूमंडलीकरणसँ विश्व-स्तरीय आर्थिक संपर्क आ लेन-देन बढ़ल अछि। विश्व उत्पादन दरसँ बेसी दर पर विश्व व्यापार बढ़ि रहल अछि। एकरे कहल जाइत छैक विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तन। कतेको लाख लोग प्रतिदिन राष्ट्रीय सीमा पार क' अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा करैत छथि। विदेशी मुद्राक लेन-देन बढ़ल अछि। भूमंडलीकरणक प्रक्रिया 1990क बाद भारतक परिभाषा सनक बनि गेल अछि। आयात आ निर्यात दुनू सरकारी नियंत्रणसँ मुक्त क' देल गेल अछि।

'वैश्वीकरणकेँ' आधुनिक युगक विशेषता कहल जाइत अछि। सभ तरहक बातकेँ लोक भूमंडलीकरणसँ जोड़िकऽ देखैत अछि। कहल जाइत अछि जे वैश्वीकरणक रथक गति नहि रुकि सकैत अछि आ ने एकर कोनो विकल्प देखऽ मे अबैत अछि। संगहि, वैश्वीकरणकेँ एतेक सकारात्मक, शुभ आ वांछनीय बूझल जाइत अछि जे राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक नीतिकेँ भूमंडलीकरणक समर्थनमे रखबाक पक्षमे छथि। एकर अनवरत प्रक्रियाक विरोधमे दकियानूसी, प्रतिगामी आ संकीर्ण मानसिकताक प्रतीक कहल जाइछ। एकरा अर्थात् भूमंडलीकरणकेँ विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

औद्योगीकरण, पूंजीवाद, ज्ञान-विज्ञान आ शिक्षा-संस्कृतिक व्यापक प्रसार, समाजक नाम पर कयल गेल किछु प्रयोग आ लोकतंत्रीय राज्य-व्यवस्थाक अन्तर्गत विश्वक कायाकल्प भ' गेल। भूमंडलीकरण एहि प्रक्रियाक अत्याधुनिकतम चरण मानल जाइत अछि। आधुनिक काल कँ पहिने कहल जाइत छल जे मनुष्य कूपमंडकीय जीवन

बैत रहय। ओकर संसार बहुत सीमित छल। जँ कोनो दोसर देश, ओतुक्काक महाप्रतापी सम्राट या कोनो पैघ घटना थवा कोनो देशक वैभव आदिक जानकारी देर-सबेर पहुंचैत छल तँ लोककेँ ओहि पर विश्वास झट दऽ नहि होइत लैक।

भूमंडलीकरण, आधुनिकता आ विश्वव्यापी विकास उपर्युक्त दृष्टिकोणक अन्तर्गत करीब-करीब समानार्थ नल जाइत अछि। विश्वव्यापी पूंजीवादी तथा एकर समर्थक भूमंडलीयता विचारधारा आ नीत समूहकेँ ंडलीकरणक नामक पाछां ई उद्देश्य छलनि जे सरल, सुगम, सुहावना आ कर्णप्रिय शब्द अछि। संसारक ूयोगपति, व्यवसायी, वित्तीय क्षेत्रमे नियंत्रक, चिकित्सक, वैज्ञानिक, इंजीनियर, वित्तीय परामर्शी, राजनीतिज्ञ, ोरंजनक जगतक सितारा, खिलाड़ी, गायक, अभिनेता, बहुराष्ट्रीय कम्पनी सभक शीर्षस्थ पदाधिकारी जे वीकरणसँ आनन्द उठा रहल छथि से राजा-महाराजा सभकेँ सेहो दुर्लभ रहनि। जँ विश्वकेँ सम्प्रति छोट सन गांव ल जाइत छैक तँ सूचना, संचार आ यातायातक साधनक विकास आ ओकर सुलभता महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि।

1990क उपरांत वैश्वीकरणक प्रक्रिया भारतक नीतिक परिभाषा सन बनि गेल अछि। एहि नीतिसँ विदेशी म्पनी आ व्यवसायी वर्गकेँ काफी लाभ भेलनि अछि। वास्तविक भूमंडलीकरणक शक्ति 60 हजारस बेसी बहुराष्ट्रीय थवा राष्ट्रीय कम्पनी अछि। विश्वक रंगमंच पर एकर काफी धाक एवं दबदबा अछि। वस्तुतः, हुनका लोकनिक र्गत कम्पनी सभक आचार-व्यवहार राष्ट्रक सीमासँ ऊपर उठि गेल सन देखऽ-सुनऽ मे लगैत अछि।

एक दिस भूमंडलीकरणसँ भारतमे सेहो चमत्कारिक सामाजिक परिवर्तन, सुख-सुविधामे बढ़ोतरी आर्थिक आ पारिक क्रांति आयल अछि तँ दोसर दिस शिक्षाकेँ भूमण्डलीकरणसँ जोड़बाक एहन कुचक्र आ साजिश कयल गेल छि, जाहि सँ देव-भाषा संस्कृतक उपेक्षा होयब स्वाभाविक। भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक गोथे स्थानक बीच एकटा समझौता भेल अछि जे भारतक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालयमे विद्यार्थीकेँ विकल्प रहतैक ओ जर्मन पढ़य या संस्कृत। एहि योजनाक मूल उद्देश्य ई छैक जे जर्मन भाषा 2017 धरि एक हजार सँ बेसी स्कूल पढ़ाओल जाइक। विद्यार्थीकेँ जर्मन भाषा छठासँ बारहवीं कक्षा धरि पढ़ाओल जयबाक व्यवस्था कयल गेल अछि। द्यार्थी एवं शिक्षक लोकनिकेँ ई प्रलोभन देल गेलनि अछि जे संस्कृत शिक्षक छात्र कें संस्कृतक स्थान पर जर्मन ा पढ़ोताह, हुनका लोकनिकेँ जर्मनीक यात्रा सेहो कराओल जयतनि। जर्मनीक मुख्य उद्देश्य ई छैक जे भारतक नकार पेशेवरकेँ नौकरी दियनि, किएकतँ जर्मनीमे नकनीकी जानकारक अभाव रहैत छैक। जर्मनी प्रशिक्षु लोकक ा ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, ग्रीस आ थाइलैंड सँ लैत अछि। तँ जर्मनी भारतक प्रशिक्षित आ बेरोजगार लोकक फौजसँ भान्वित होमऽ चाहैत अछि। चिन्तनीय बात तँ ई अछि जे जर्मनीक भाषासँ संबंधित कुचक्र आ षड्यंत्रक भागीदार न देशक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालय बनि गेल अछि, किएक तँ भारतमे करीब बीस हजार छात्र देव-भाषा कृतक स्थान पर जर्मन भाषा पढ़बाक लेल विवश कयल जा रहल छथि। जर्मनीक अभीष्ट छैक जे भारतमे बीस ार छात्रकेँ जर्मन सिखाओल जाय। संस्कृत सन प्राचीन देव-भाषाकेँ जीवंत राखक लेल बुद्धिजीवीवर्गकेँ जागरूक ए पड़तैक।

शब्दार्थ

पर्याय-एकक बदला दोसर

सुदृढ़-मजगूत

मुक्त-जकरा पर कोनो तरहक दबदबा नहि। स्वतंत्र

नीतिगत-नीतिसँ संबंधित

आयात-दोसर देशसँ आनब

निर्यात- अपना देशसँ बाहर पठाएब

अनवर-एहिखन, लगातार

दकियानूसी-पुरान पंथी, कट्टरपंथी

कूपमंडकीय-संकीर्ण, बहुत छोट

वैभव-धन, सम्पति

शीर्षस्थ-उच्च

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लघुत्तरीय प्रश्न-

(i) भूमंडलीकरणक की अभिप्राय थिक?

(ii) राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iii) भूमंडलीकरणकेँ संभव करबामे कोन वस्तुक प्रगतिक पैघ भूमिका रहल?

(iv) विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे ककरा प्रस्तुत कएल जाइत अछि?

(v) भूमंडलीकरणसँ कोन भाषाक उपेक्षा भेल?

(vi) विदेशी मुद्राक भंडार कोना बढ़ैत अछि?

(vii) विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तनक की अभिप्राय?

(viii) भूमंडलीकरणकेँ गैर समतामूलक किएक कहल जाइछ?

ix) आयात-निर्यात सरकारी नियंत्रणसँ कहियासँ मुक्त अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

i) भूमंडलीकरणक वैशिष्ट्य लिखू।

ii) भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक संस्थानक बीच की समझौता भेल?

व्याकरण

i) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाऊ-

राष्ट्र, आधुनिक, कूपमंडक, व्यवसाय, चमत्कार, केन्द्र, अर्थ, राजनीति, समाज, परस्पर

ii) विपरीतार्थक शब्द लिखू-

आयात, परोक्ष, सरल, सुगम, छोट

शिक्षकसँ-

1. शिक्षकसँ आग्रह जे भूमंडलीकरण शब्दसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

2. आयात-निर्यात ककरा कहल जाइछ? एहिसँ भारतकेँ कोन तरहेँ नफा-नुकसान होइत छैक,ताहिसँ छात्रकेँ परिचय कराबथि।

□□□

वासुकीनाथ झा

जन्म	–	10 जुलाई 1940
जन्म स्थान	–	ग्राम+पोस्ट-पटसा, जिला-समस्तीपुर
शिक्षा	–	एम०ए०,पी०-एच०डी०
वृत्ति	–	सन् 1963सँ व्याख्याता, दुमका (झारखंड), सन् 1964सँ 1965, रोसड़ा कालेज, रोसड़ा, सन् 1965सँ कालेज ऑफ कामर्स पटना, रीडर-1980सँ 1896 ई०, वि०वि० प्रोफेसर-1986सँ 1988 ई०, विश्व विद्यालय सेवा आयोग द्वारा मगध विश्वविद्यालयमे प्रधानाचार्य नियुक्त-सन् 1988 ई०, प्रधानाचार्य पदसँ सेवा निवृत्त सन्-2000 ई०।
कृति	–	1. विद्यापति काव्यालोचन (शास्त्रीय समालोचना) अनुशीलन अवबोध (शोध एवं ऐतिहासिक समायोजन) परिवह-(आधुनिक समालोचना) लगभग 20 पुस्तकक सम्पादन, मैथिली त्रैमासिक पत्रिका घर-बाहरक सम्पादन सन् 2004सँ।
पुरस्कार	–	बिहार सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा सन् 1988 मे प्रियर्सन पुरस्कार।
सम्मान	–	मिथिला विभूति सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान-दरभंगा), ताम्र पत्र सम्मान (चेतना समिति, पटना), रमानाथ झा सम्मान (साहित्यकार संसद) आदि, प्रसिद्ध शिक्षाविद्, चर्चित समाजिक कार्यकर्ता।

□□□

मिथिलाक प्राचीनता : वर्तमान अस्मिता

भारतीय उप-महाद्वीपमे अति प्राचीन कालसँ मिथिलाक अस्तित्व विद्यमान रहल अछि-सर्वस्वीकृत एवं लेख्य रहल अछि। समय-समय पर यद्यपि अनेक नामे ख्यात होइत रहल अछि तथापि राजनीतिक दुष्चक्रक पश्चातो ावधि अपन विद्यमानता स्थापित कएने अछि। ज्ञान-उपासना ओ चिन्तनक परम्परामे जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, श, मण्डन, वाचस्पति, उदयन आदि द्वारा विद्या ओ जीवनक गूढ़ रहस्यकेँ जनजन तक पहुँचाओल जाइत रहल। तीय दर्शनक भंडारकेँ भरबामे प्रचुर योगदान करैत रहल अछि। एहि प्रकारेँ पक्षधर, गोवर्द्धन, ज्योतिरीश्वर, ापति, गोविन्द दास, उमापति, लोचन, मनबोध, चन्दा झा, यात्री, मधुप, सुमन, लोकनिक काव्य सर्जना ओ विविध रक रचना होइत रहल अछि। एतबे नहि, लोरिक, दुलरा दयाल, दीनाभद्री, नैका-बनिजारा, सलहेस आदि नायक पराक्रम ओ लोकभावनाक समादर सर्वत्र विद्यमान अछि।

प्राचीनताक दृष्टिसँ वैदिक युगमे सेहो मिथिलाक विद्यमानता दृष्टिगोचर होइत अछि। ऋग्वेदक मंत्र किंवा ादिमे हो वा नहि उपनिषद ओ पुराणमे तँ अनेक स्थल पर एकर स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि। वृहद् विष्णुपुराणमे तँ बारह नामक गौरवबोधक उल्लेख अछि।

एहि पुराणमे तँ पृथक रूपसँ मिथिला खण्डक अध्याय बनाओल गेल अछि जाहिमे निमि, मिथि आ मिथिला क उत्पति कथाक विस्तृत विवरण अछि। एहि सँ मिथिलाक प्राचीनता ओ स्वीकार्यता, विशेषता एवं महत्ता सिद्ध अछि। एहूमे एहि ठामक लोकक ज्ञानशील होएब, दयालुता ओ उदारताक हेतु स्थानकेँ कृपापीठ, मंगलकारी, र्षक आदि विशेषणसँ युक्त कहब तत्कालीन आर्य समाजमे एकर श्रेष्ठत्व सिद्ध करैत अछि। मिथिला, तीरभुक्ति, , नैमिकानन, सहित अन्य नाम भौगोलिक, क्षेत्रीय, माटिक वैशिष्ट्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, आध्यात्मिक व्यवहार क द्योतन करैत अछि। एहि बारहोमे सँ विदेह, तीरभुक्ति एवं मिथिला विशेष प्रसिद्ध अछि। एकर सभक आधारो णिके अछि। 'वैदेह' नामक प्रसंग तत्कालीन परम्पराक अनुसार राजाक गोत्र नामक आधार पर जनक नाम 'विदेह' ेल-'विदेहानां जनपदो वैदेह:'। एकर उल्लेख वेदमे सेहो भेल अछि।

तिरहुत-ई शब्द तीरभुक्ति शब्दक तद्भव रूप थिक। एहि संबंधमे मिथिलामे एक श्लोक प्रचलित अछि-

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या
यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगर नदी भैरवोयत्र लिङ्गम्।
भोमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या
भूदेवोयत्र भूप यजन वसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः॥

नदी, तपोवन, काननसँ युक्त अर्थात् भरल रहबाक कारणेँ तीरभुक्ति; कौशिकी, गंगा एवं कोशी सीमा रहलासँ क्ति; तीनू वेदसँ आहुति देनिहार ब्रह्मज्ञानी सभक निवास स्थान रहलासँ 'त्रिराहुति' अर्थात् तीरभुक्ति।

इतिहासकार लोकनिक मतेँ गुप्तकालमे मिथिला तीरभुक्ति नामे प्रसिद्ध छल एहिसँ पूर्व विदेह ओ मिथिला नामसँ। एतबे नहि, देवी भागवतमे सेहो मैथिल ओ मिथिलाक चर्चा अछि-

एतेवै मैथिला प्रोक्ता आत्मविद्या विशारदा:

योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्त्वापि जायते।

एहूमे एहिठाम लोककेँ आत्मविद्या विशारद कहल गेल अछि। हँ, 'तीरभुक्ति'क प्रसंग ध्यातव्य जे गुप्त शासनकालमे 'भुक्ति' शब्द प्रान्त अथवा प्रशासनिक प्रक्षेत्रक सूचक छल एवं 'तीर' नदीतटक बोधक छल जे भौगोलिक स्थितिक सूचक थिक।

वैदिक कालसँ स्वतंत्र सत्ताक रूपमे प्रतिष्ठित 'विदेह' ओ लिच्छवि-बज्जिसंघकेँ गुप्त साम्राज्य अपनामे आत्मसात् कए लेलक। नवीन नामकरण कयलक 'तीरभुक्ति' जकर उल्लेख पुरुषोत्तमदेव अपन कृति 'त्रिकाण्डशेष' मे कयलनि अछि। 'त्रिकाण्डशेष' ओ प्रदेश मानल गेल अछि जे तीन प्रसिद्ध नदी गंगा, गंडकी आ कोशीक तट पर पसरल अछि। तीरभुक्तिक महिमा वर्णन एहि प्रकारेँ भेल अछि-

मीमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरै: पण्डितैर्मण्डिताया।

भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती सास्तिमे तीरभुक्ति:।।

मिथिलाक ऐतिहासिक वैशिष्ट्यक वर्णन करैत-स्टीवेंसन मूर कहने छथि-The history of Mithila does not centre round violent feats of arms but round courts engrossed in the luxurious enjoyment of literature and learning. But while Mithilas fame does not rest on heroic deeds, it must be duly honoured as the house where the enlighted and learned might always find a generous partron, peace and safety.

प्राचीनतम प्रमाण सभसँ पुष्ट होइत अछि जे मिथिला दीर्घकाल धरि वैदिक ओ उपनिषद विद्याक केन्द्र छल। राजा सभक दरबारमे तँ ज्ञानक ज्योति जरितहिँ छल, समाजक निम्नो वर्गमे लोक उच्च श्रेणीक विचारक ओ ज्ञानी होइत छल। उदाहरणार्थ महाभारतक वन पर्वमे मिथिलाक धर्मव्याधक तथा पतिव्रता साध्वीक कथा प्रस्तुत अछि। एहि ज्ञान गरिमा ओ वैचारिक स्तरीयताक कारणेँ 'याज्ञवल्क्यस्मृति' मे धर्म संबंधी निर्णय मिथिलाक सामान्य व्यवहारमे देखबाक निर्देश अछि- धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिला व्यवहारत:।

भारतीय दर्शनक मुख्य शाखा वा प्रकार मानल जाइत अछि। एहि छओमे सँ चारिटाक स्थापना मिथिलामे भेल अछि। कालक्रमानुसार 1000 ई. पू. सँ 600 ई. पू. क बीच मिथिलामे क्रमश: न्याय दर्शनक प्रणेता गौतम, वैशेषिक दर्शनक प्रणेता कणाद, मीमांसा दर्शनक प्रणेता जैमिनि एवं सांख्य दर्शनक प्रणेता कपिल एही प्रक्षेत्रक विभूति मानल जाइत छथि। भारतीय दर्शनक ई चारू दर्शनशाखाक प्रस्थान बिन्दु मिथिले रहल आ तेँ एकर वैदुष्य समस्त भारतीय

चिन्तनकेँ प्रेरित आ प्रभावित करैत रहल। ईशापूर्व दशम् शताब्दीसँ छठम शताब्दी धरि भारतीय वैदिक विचारधारा एवं मिथिलाक वैदुष्य प्रभावक स्वर्णकाल रहल।

ई॰ पू॰ छठम शताब्दीसँ तेसर शताब्दी ई.पू. धरि मिथिलाक वैशाली अंचल बौद्धमतक केन्द्र बनल। बौद्धमतक प्रभाव विस्तारसँ निरीश्वरवादक दिसि उन्मुखता तथा अशिक्षित ओ निम्नवर्गीय लोकक झुकावसँ वैदिक मतक पुनरस्थापनक आवश्यकता अनुभव कएल गेल। एही परिप्रेक्ष्यमे मिथिलांचल पुनः नव स्फूर्तिसँ ठाढ़ भेल। कुमारिल भट्ट, उदयनाचार्य आदि विद्वान पुनःवैदिक विचारधाराकेँ स्थापित कएलनि। इएह विचारधारा मिथिलामे दीर्घकाल धरि प्रचलित रहल। कोनो वैचारिक ओ सैद्धान्तिक परम्परा जखन दीर्घकाल व्यापी होइत अछि तँ ओहिमे व्यावहारिक स्तर पर किछु रूढ़ि, किछु कट्टरता, कौलिक वा जन्मजात प्रभाव आदि अनेक कमजोरी दुर्गुणक समावेश स्वाभाविक रूपसँ होइतैछि अछि आ से मिथिलामे, मिथिलाक व्यवहार विशेषतः कर्मकाण्डमे सेहो भेल।

मिथिलामे नव्य न्याय, पूर्व मीमांसा एवं स्मृति निबन्ध ग्रन्थक प्रचुर रचना मध्ययुगमेँ भेल अछि। तकर सामाजिक-राजनैतिक पृष्ठभूमि छल। तेँ मध्ययुगमे एतेक स्मृति ग्रन्थक प्रचुरता दृष्टिगोचर होइछ। मिथिला प्राचीनकालसँ अबैत अपन प्रगाढ़ विद्या-परम्पराकेँ सावधानीपूर्वक रक्षा करबामे तत्पर रहल। एही तत्परताक उदाहरण अछि-'शरयन्त्र' अथवा 'शलाका परीक्षा'। ई एकटा प्रथा बनि गेल जाहिसँ अध्ययन ओ शास्त्र चिन्तन प्रथाक रूपमे प्रचलित रहल। एकरे अन्तर्गत उपाध्याय, महोपाध्याय एवं महामहोपाध्याय कहेबाक कठोर परम्परा चलल। एकर विस्तृत चर्चा महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा आर्या सप्तशतीक विशेष संस्करणक प्राक्कथनमे केने छथि। परम्परागत विद्वाक अनुशीलनसँ ओकर व्यवहारिक अनुपालनक परिणामस्वरूप मिथिलाक जनजीवन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ। डा. जयकान्त मिश्र जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटीक खण्ड-33मे प्रकाशित अपन 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ मैथिल कल्चर' नामक आलेखमे मिथिलाक अनेक स्थान सभक नाम संस्कृत विद्वाक अध्ययनक स्मरण करबैत अछि। मिथिला मिहिरक 1935क मिथिलांकमे तँ एतेक धरि कहल गेल जे एहि ठामक खेलकूद धरिमे वेदान्तक शिक्षाक समावेश अछि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्षमे प्राचीन कालसँ अबैत 'अर्थशास्त्र' तथा 'दण्ड नीति'क परम्परा एगारहम शताब्दी धरि क्षीण होमए लागल। एहने स्थितिमे ऊपर चर्चित धर्मशास्त्र ओ कर्मकाण्डक वर्चस्व बढ़ए लागल। राजतंत्र विषयक विवेचन सेहो आब धर्मशास्त्रेक आधार पर प्रारंभ भेल। एगारहम शताब्दीमे भारत आएल विदेशी पर्यटक अलबरुनी सेहो एहि संक्रमणकालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति एवं उद्भूत विचार-व्यवहारक चर्चा केने छथि।

चौदहम शताब्दीमे चण्डेश्वर ठाकुर जे स्वयं प्रख्यात विद्वान राजपुरुष छलाह, 'राजनीति रत्नाकर' मे राज्य संचालनक नव व्यवस्था तथा नव कर्त्तव्यबोध स्थापित करबाक चेष्टा केलनि अछि। ओ कहलनि-राजा वैह जे प्रजाक रक्षा करथि। कोनो जाति-वर्णक भए सकैछ।

मिथिलामे जाति-वर्णक कट्टरताक असरि सामान्य जन पर सेहो पड़ल। फलतः विभिन्न जातिवर्णक लोकमे अपन प्रधान बनेबाक प्रक्रिया सेहो प्रारंभ भेल। विभिन्न लोकगाथामे जाहि नायक सभक वीरगाथा अछि से अधिकांश विभिन्न ब्राह्मणेतर जातिक अगुआक रूपमे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे सक्रिय रहलाह। डा. हेतुकर झा मिथिलाक अपन समाजशास्त्रीय अध्ययन संबंधी एक आलेखमे चर्चा केलनि अछि जे गढ़सभक अवशेष विभिन्न जाति वर्णक प्रधान लोकनि मिथिलामे भेटैत अछि यथा-परगनाहाटी तथा परगना जरैलमे राजा कटेश्वरीक गढ़, परगना चखनीमे राजा गंधकेर गढ़ीक अवशेष, परगना हावीमे दुसाध राजाक गढ़क खंडहर आदि। मिथिला-तत्व विमर्शमे सेहो एहन अनेक गढ़-गढ़की अवशेषक चर्चा अछि। अस्तु।

भारतीय दर्शनक अन्तिम मौलिक कृति-'तत्व चिन्तामणि' मे गंगेश उपाध्याय (चौदहम शताब्दी) अनेक पक्षकेँ उजागर केने छथि। सामाजिक चिन्तनकेँ नव दिशाबोध देने छथि। एहि पुस्तकक विषयसँ कालक्रमे मिथिले नहि सम्पूर्ण देशक बौद्धिक जगत आन्दोलित भेल।

एही शताब्दीमे महाकवि विद्यापतिक आविर्भाव राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक ओ साहित्यिक क्षेत्रमे विशेष प्रभाव स्थापित केलक। विद्यापति अपन 'पुरुष परीक्षा' मे नीति शास्त्र, शस्त्र, विविध व्यावहारिक पक्षादिक उदारतापूर्वक चर्चा केलनि अछि। विद्यापति हिन्दूधर्मक व्याख्या जाति-वर्गसँ ऊपर उठि क' केलनि। सभकेँ अपन कुलपरम्पराक निर्वाहक प्रेरणा देलनि, सामान्य सामाजिक धर्मक अनुपालनक संदेश देलनि। भाषाक संबंधमे सेहो-'सक्कय वानी बहुअ न भावए' कहि 'देसिल बअना सवजन मिट्ठा' क समादर केलनि जाहिसँ ओ अमरता पाबि अद्यावधि प्रेरणा-पुरुष बनल छथि।

तत्पश्चात् टीकाकार युग आएल। गुरु-शिष्यक बीच लिखित वाद-विवादक परम्परा चलल। एहि सँ अत्यन्त महत्वपूर्ण, स्वस्थ एवं सजीव-सक्रिय बौद्धिक वातावरणक सृजन भेल। सतरहम शताब्दी अबैत-अबैत इहो परम्परा विलीन भए गेल। मिथिलाक बौद्धिक गरिमाक तेज क्षीण भए गेल। जाहि मिथिलामे पहिने शताधिक मीमांसक छलाह उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि मात्र तीन टा देखल जा सकैछ।

ओना गंगेश, वर्धमान, अयाची आदिक परिचयमे ओहि समयक लेखादिमे मैथिल अस्मिताक चर्चा अछि जातिवादी आ वर्णवादी भावना नहि अछि। कोनो समयमे अपनाओल गेल सामाजिक परम्पराक रक्षात्मक दृष्टिसँ धर्मशास्त्री चिन्तन आब अठारहम शताब्दी अबैत-अबैत अपनहिमे जाति-वर्णक, विशेषतः जातिगत व्यवहारक आन्तरिक विभेदक कारण बनि गेल। मिथिलामे ई सामाजिक व्यवहारक विभेद सांस्कृतिक चेतनाक व्यापकता ओ अस्मिताबोधक सूत्रकेँ सेहो प्रभावित केलक अछि। धार्मिक चिन्तन ओ जीवनक दृष्टिसँ मिथिलामे कहियो साम्प्रदायिकता नहि रहल। कोनो पन्थ वा सम्प्रदाय मिथिलामे आधिपत्य नहि जमा सकल। सामान्यतः एतए चारू वर्णमे वर्णाश्रम धर्मक अनुपालन, सभ देवी-देवताक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा रहल अछि। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिदेवक आराधना, शक्तिक उपासनास्वरूप भगवतीक अर्चना समान रूपसँ होइत रहल। प्रत्येक घरमे गोसाउनिक स्थापना,

प्रत्येक गाममे गहवर आदि लोकदेवताक स्थापना ओ आराधना निर्बाध ओ सहज रूपेँ चलैत रहल अछि। हँ, एतए सहज रूपेँ शिवाराधनाक प्रचलन व्यापक रूपेँ रहल अछि तँ 'महेशवानी' ओ 'नचारी' विशेष प्रिय रहल अछि सामान्य जनक मनोभावनाक अनुकूलताक कारणेँ। शक्तिक प्रति लगाव तँ एही बात सँ स्पष्ट अछि जे प्रत्येक शुभ कार्यक प्रारंभ 'गोसाउनिक गीते' सँ होइत अछि। मुसलमानक आगम ओ एतय निवसित भेलाक पश्चात् मिथिलांचलमे दुनू समुदायक बीच सौहादपूर्ण व्यवहार रहल अछि। एतेक धरि जे अनेक धार्मिक आयोजनो मे दुनूक सहभागिता देखल जाइछ।

बारहम तेरहम शताब्दीसँ पञ्जी प्रबन्धक प्रभाव समाजक ब्राह्मण ओ कायस्थ जातिक पूर्ण रूपेँ विद्यमान रहल। प्रारंभमे तँ ई सामाजिक जीवनकेँ नियंत्रित करबामे सहायक भेल किन्तु पश्चात् कृत्रिम रूपेँ उच्च-निम्न श्रेणीक अवधारणा सामाजिक विभेदक कारण बनल। पुनः एहू श्रेणी संबंधी निर्णयक अधिकार जखन राजसत्तामे चल गेल तँ एकरा तोड़बाक प्रक्रिया ओ क्रम तीव्रतर भए गेल जे आई अपन अनेक लघुसीमाक कारणेँ महत्वहीन भए गेल अछि।

मिथिलामे संगीत प्रियताक कारणेँ संगीतप्रेमक विद्यमानता सदैव परिलक्षित रहल अछि। चर्यागीतसँ लए, (बारहम शताब्दीक) महाराज नान्यदेव द्वारा रचित ग्रंथ सरस्वती हृदयालंकार हार, गीत गोविन्द, वर्णरत्नाकरमे संगीत-राग आदिक चर्चा, जगद्धरक संगीत सर्वस्व, लोचनक रागतरंगिणी आदिक संगीत विषयक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक ग्रन्थक रचना लोकक अभिरुचि प्रदर्शित करैत छथि। तँ संगीतप्रियता हमर सांस्कृतिक चेतनाक अभिन्न अंग कहल जा सकैछ। तहिना नाटकक प्रति सेहो विशेष अभिरुचि रहल अछि। विभिन्न प्रकारक लोकनाट्यक समाजमे प्रचलन ई सिद्ध करैछ जे सामान्यजन, जे कलाक विशेषज्ञ-मर्मज्ञ नहि अछि तकरो एकरा प्रति प्रेम रहलैक। मिथिला ओ मैथिलीक समस्त मध्यकालकेँ नेपालीय नाटक, कीर्तनिया नाटक ओ अंकीया नाट, नाटके युग कहल गेल अछि। जे परम्परा अद्यावधि न्यूनाधिक रूपमे विद्यमान अछि।

आतिथ्य ओ स्वाभिमान हमरा सभक परिचिति रहल अछि। आतिथ्य ओ भोजनप्रियताक प्रमाण ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे दही, पक्वान्न अथवा अन्य सामग्रीक विशद वर्णनसँ सिद्ध अछि जे हमरा लोकनिक सामान्य स्वभावक परिचायक अछि। स्वाभिमानक विषयमे तँ समस्त देशमे धारणा रहल अछि-"मैथिलाः स्वभावात् गुण गर्विणः भवन्ति"। शास्त्रज्ञ छी, व्यावहारिक छी तँ तकर गुणसँ गौरवान्वित सेहो छी। अकारण नहि।

मिथिलाक संस्कृतिमे 'लोक' एवं 'वेद' केँ समान महत्व देल गेल अछि। वैदिक विचारक संग-संग लोकाचारक महत्व समान रूपेँ रहल अछि। एतेक धरि जे कोनो पूर्व परिचितसँ भेट हम सब स्वतः पूछैत छी-लोक-वेदक हाल कह। लोक शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थमे ग्रहीत रहल अछि-सामान्य जनक बोधक रहल अछि।

समस्त जनसमुदाय, जनसामान्य, समाजक वृहत वर्ग 'लोक' शब्दक अन्तर्गत सन्निहित रहल अर्थात् लोक शब्द समस्त समुदायक बोधक रहल अछि। तँ 'लोक-वेद'क अर्थ समाज ओ शास्त्र रूपमे प्रचलित-व्यवहृत रहल। लोक सामाजिकता सूचक रहल आ वेद आध्यात्मिक उन्नयनक जिज्ञासा सूचक। एहि एकमात्र सामान्य औपचारिकतामे भौतिक ओ आध्यात्मिक दुनू तत्वक सहज समावेश हमर सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक परिचायक बनल अछि। चिन्तनक

स्तरीयताक द्योतक बनल अछि। हमर अस्मिताक विशेष बात इएह चिन्तनक उच्च स्तरीयताक थिक। मिथिला ओ मैथिल संस्कृतिक प्राचीनता, अनवरतता वा एकर सनातनता, कालक्रमानुसार परिवर्तनशीलता आदिकेँ अधुनातनताक दृष्टिसँ जखन देखैत छी तँ तुलनात्मक दृष्टिएँ गौरवबोध होएब स्वाभाविक। एमहर अर्थात् बीसम् शताब्दीक अन्त ओ एकैसम शताब्दीक प्रारंभिक दशकमे प्रत्येक क्षेत्रमे भूमण्डलीकरण, भौतिकवाद, बाजारवाद नव राजनीति-दार्शनिक अवधारणाक फलस्वरूप मिथिलांचलक जनजीवन ओ समाज-व्यवस्था सेहो अवश्य प्रभावित भेल अछि। विकासोन्मुख समाजक लेल ई सहज स्वाभाविक अछि।

आई समस्त संसारमे मिथिलाक लोक विभिन्न उद्देश्यसँ देशक विभिन्न क्षेत्रमे, विदेशोमे पसरल छथि-किछु अल्पकालीन वासी बनि तथा किछु ओही ठामक निवासी बनि गेल छथि।

एतबा होइतहुँ मिथिलावासी सर्वत्र अपन अस्मिताक अनुपालन ओ रक्षार्थ तत्पर छथि। भाषा ओ साहित्यक माध्यमे 'विद्यापति' प्रतीक-पुरुष रूपमे स्थापित भए गेल छथि। ओही नाम पर अपन सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षार्थ लोक सक्रियतापूर्वक संलग्न अछि। छोटसँ छोट शहर अथवा पैघसँ पैघ नगरे नहि, इंगलैंड, अमरीका, रूस सहित आनो देशमे मैथिलीभाषी लोकनि विभिन्न आयोजनक माध्यमे एकत्रित भए अनुचिन्तन करैत छथि, जे स्तुत्य ओ श्लाघनीय अछि।

उदार भावना थिक सभ धर्मक प्रति श्रद्धापूर्ण आदरभाव। जाति, वर्ण, सम्प्रदायसँ निरपेक्ष भए समस्त समाज, राष्ट्र आ सम्पूर्ण मानव कल्याण भावनाक रक्षा हमर अस्मिताक पचियक हेबाक चाही।

वास्तवमे संस्कृति हृदयक वस्तु थिक। वाह्य व्यवहारसँ भिन्न वस्तु थिक। वाह्य व्यवहारमे उदारता ओ स्थानिकता राखब अपेक्षित नहि आवश्यको अछि। वस्त्रादि पहिरब सामयिक ओ स्थानिक अपेक्षा रखैत अछि। किन्तु अपन सांस्कृतिक अस्मिताक प्रति सचेत रहब आवश्यक अछि। ई बात कोनो कानून वा नियमसँ संभव नहि भए सकैछ। ई तँ स्व-नियमन द्वारा संभव भए सकैछ। हम स्वयं अपन अस्मिताक प्रति जागरूक रही। स्वविवेकक अनुशरण करैत आत्मसम्मानक भावसँ पूरित रही। स्वयं जागी, जागल रही ओ सभकेँ एहि जागृतिक परिधिमे लावी।

शब्दार्थ

तत्पश्चात-तकर बाद

दृष्टिगोचर-देखबा योग्य

कानन-वन, जंगल

तीरभुक्ति-मिथिलाक एक दोसर नाम

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

मिथिलाक प्राचीनता: वर्त्तमान अस्मिता निबन्धक लेखक छथि?

(क) डॉ0 नवीन चन्द्र मिश्र (ख) डॉ0 इन्द्रकान्त झा (ग) डॉ0 बासुकीनाथ झा (ग) डॉ0 लेखनाथ मिश्र

लघूत्तरीय प्रश्न-

) मिथिलाक कोनो दू प्राचीन विद्वानक नाम लिखू।

) गुप्तकालमे मिथिल कोन नामसँ प्रसिद्ध छल?

i) भारतीय दर्शनक कतेक शाखा अछि?

v) तत्वचिन्तामणिक लेखक के थिकाह?

लघूत्तरीय प्रश्न-

) भारतीय दर्शन भंडारकेँ के सभ भरलनि?

) चण्डेश्वर राज्य संचालनक विषयमे की सभ कहलनि?

ii) लोक गाथाक नायक के सभ होइत अछि?

v) मैथिलक की वैशिष्ट्य अछि?

v) हमर सभक परिचित कथीमे रहल अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

) तिरहुतक उत्पत्तिक विश्लेषण करू।

i) मिथिलाक प्राचीनताक वर्णन करू।

iii) मिथिलाक प्राचीनता वर्त्तमान अस्मिताक अति संक्षेपमे विशेषता लिखू।

□□□

विभूति आनन्द

मूल नाम	-	विभूति चन्द्र झा
जन्म	-	4 अक्टूबर, 1955 ई0
जन्म स्थान	-	शिवनगर
वृत्ति	-	1. जिला स्कूल, मुंगेरमे मैथिली विषयक +2 व्याख्याता 2. रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, जिला–मधुबनीमे मैथिली विभागाध्यक्ष। 3. सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे कार्यरत।
कृति	-	प्रवेश (1979), खापड़ि महक थान (1989), काँठ (2002)–कथा-संग्रह। डेग (1977), उपक्रम (1984) पुनर्नवा होइत ओ छौड़ी (1992), नेहाइपर स्वप्न (1999)–कविता-संग्रह। झूमि रहल पाथर मन (1988), उठा रहल घोघ तिमिर (1981)–गीत-गजल संग्रह। गाम सुनगैत (1980), पराजित–अपराजित (1982)–उपन्यास। समय संकेत (1988), तिसिरदाइ हाली-हाली बरिसू (2005)–नाटक। श्री ललित आ हुनक कथा-यात्रा (1982), स्मरणक संग (2004), ललित (2004)–समीक्षा। मैथिल शहीद बैकुण्ठ शुक्ल, जीव विज्ञान–अनुवाद। एकर अतिरिक्त अनेको पत्र-पत्रिका एवं पुस्तकक यशस्वी सम्पादक रहल छथि।
पुरस्कार	-	'काठ' कथा-संग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2006)।

□□□

आउ, हम बेटी-विमर्श करी

एहि पितृसत्तात्मक समाजमे बेटी, ओ चाहे बहीन रहलि हो वा पुतोहु, पत्नी रहलि हो वा आनहि कोनो सम्बंधक डोरसँ बन्हाएल रहलि हो, दोयम दर्जाक स्तर पर जीबैत रहलि अछि। ओकरा अपन होएबाक ने तऽ बोध भेलै, आ ने तेहन कोनो परिवेश भेटलै जे ओ अपन स्वतंत्र अस्तित्वकेँ निखारितए। समाजमे ओ सभ दिन दलित रूपमे जीबैत रहलि। ककरो बेटी भऽ कऽ तऽ ककरो पत्नी भऽ कऽ अपन भऽ कऽ जीवाक जेना ओकरा अधिकारे नहि देलकै ई समाज। जहिया-जहिया बेटीक जन्म भेलै, परिवारक चेहरा मलिन भेलै। खुशी हेरा गेलै। बेटी जखन पैघ भेलि तऽ बेटा जकाँ ओकरो एकटा नाम भेटलै। विवाहक बाद मुदा ओहि बेटीक नाम ओकरा नहिरेमे रहि गेलै। सासुरमे पुनः एकटा दोसर नाम भेटलै। मानि लियऽ जेना पुनर्जन्म भेल हो। जखन ओ बेटी आब पुतोहु बनि चुकल छलि, पहिल बेर माए बनलि तऽ फेर ओकर नाम बदलि गेलै-फल्लाँ आकि फल्लीक माए।.....कहबाक अर्थ ई जे बेटी जाति एहि समाजमे एही स्थितिमे जीबैत रहलि अछि, स्पष्ट भऽ कऽ ओकर नाम धरि स्थिर नहि रहि सकलै।

ई थिक हमर समाज, आ ताहि समाजमे बेटी, अर्थात् नारीक स्थिति। एकरा सभ दिनसँ एक समस्या बुझल-बाइत रहलै, जाहिमे प्रमुख रहलै वैवाहिक समस्या। अर्थात् बेटी माने समस्या, आ समस्या माने विवाह। आर दोसर समस्या भेबे नहि कएलै। भेबो कएलै तऽ सोचले नहि गेलै। बेटी एकमात्र संतानोत्पत्तिक कारक रहलि, आ तेँ विवाह। मैथिली साहित्यमे तेँ विवाह एक प्रमुख विषय रहल अछि। समस्याक ई एक तेहन जाल रहल, जकरा सँ मुक्त होएबाक कोनो ओर-छोर नहि भेटलै। ई समस्या अदौ कालसँ मात्र गाओल जाइत रहल। सोहरसँ लऽ कऽ समदाउन धरि।

विद्यापति कालमे सेहो ई समस्या छल। अनमेल विवाहक समस्या। विद्यापति तेँ राधा-कृष्ण, माने युवा-युवतीक रंग-रभसमे भेर अथवा पूजा-पाठमे निमग्न, जखन समाज दिस तकलनि तऽ व्यथित भऽ उठलाह। ओ पीड़िता बेटीक दर्द आ दाह केँ ओकरे स्वरमे कहलनि।

पिया मोर बालक, हम तरुनी गे, कोन तप चुकलहुँ, भेलहु जननी गे। ओ बेटी जखन अपन पति केँ कोरामे लऽ कऽ हाट-बाजार करऽ जाए तऽ लोक सभ ओकरा सँ ओकर संबंधक मादे पुछाहेरी करै छै। अन्ततः ओकरा कहऽ पड़ै जे ई नहि तऽ हमर देओर लगै छथि, नहि तऽ छोट भाए। ई तऽ हमर पूर्वक लिखल छल, ई हमर पतिदेव छथि।

मुदा विद्यापति एहि समस्याकेँ मात्र समस्या जकाँ नहि रखलनि। ओ तत्कालीन सामाजिक संरचनाक अनुकूल प्रत्यक्ष विरोध नहि कऽ कऽ, व्यंग्य-शैलीमे ओहो पीड़िताक कण्ठसँ कहलनि-

बाट रे बटोहिया कि तुहू मोर भाइ

हमरो समाद नैहर नेने जाइ

कहिहुन बाबा के किनता धेनु गाइ

दुधबा पिलाइ के पोसता जमाइ

तत्कालीन समाजक एहि वर्गक एक सीमा रहल होएतै, तँ अपन दु:स्थितिक विरोध एहि सँ आगू बढ़िकऽ नहि कऽ सकै छल। मुदा उक्त पाँतीमे जे पीड़ा छै, तकरा आइयो अकानल जा सकैए। ओहि बेटीक तामस अपन बाबा अर्थात् पितापर छलै, माए पर नहि। माए तऽ पीड़िता रहलै सभ दिन। गुम-सुम। घूर- धुआँ करैत। ओना एकरा विरोधक विद्यापति शैली सेहो कहल जा सकैए। तँ नारी मनोविज्ञानक प्रखर अध्येता महाकवि विद्यापति मात्र रंग-रभस आ पूजे-पाठमे लागल नहि छलाह। ओ समाज अध्ययन सेहो करै छलाह, आ कोनो ऊँच-नीचक विरोध करऽ सँ नहि चूकै छलाह।

मुदा एहि वर्गक ई समस्या, मिथिला-समाजक कपार पर चढ़ल, नचिते रहल। अपितु एना कही जे आरो भयावह होइत गेल। तकर कारणमे उएह पितृसत्तात्मक समाज, ओकर पुरुषवादी मानसिकता, मुखर रहलै। मातृसत्ता सेहो ताहि स्थितिमे स्वयं कँ सुरक्षित बुझैत, भोग्या बनलि, हँसैत-कनैत-गबैत जीबैत रहलि, अपन स्वभावक परम्पराकँ आगूक पीढ़ीकँ सौंपैत रहलि।

एही क्लीव परम्पराक प्रतीक आधुनिक कालमे भेली 'बुच्चीदाइ'। हरिमोहन झाक सर्वप्रशंसित चरित्र। अर्थात् लगभग पाँच-साढ़े पाँच सए वर्ष बाद धरि सेहो बेटी अपना कँ 'बुच्चीदाइ चुप्पे' धरि सीमित रखने छलीह।

हरिमोहन झा नारी-जागरण विषयक बहुत रास वस्तु अपन लेखनीक माध्यमे साहित्यमे अनलनि, मुदा समाजमे हुनका अधिसंख्य प्रणम्य देवता लोकनि सएह भेटलथिन। खट्टरकका भेटलथिन, तऽ विशुद्ध तार्किक रूपमे। तँ हुनका साहित्यमे बेटी- विकासकँ अपेक्षित स्वर नहि भेटि सकलै। 'तिरिदाइ' अपन भविष्यपर कनैत रहली। ग्रैजुएट पुतोहुकँ सेहो सामाजिक लांछना टा भेटलनि। तथापि हरिमोहन बाबू करोट फेरैत समयकँ अकानैत विमला देवी सन चरित्रकँ 'ग्रामसेविका'क माध्यमे स्थापित कएलनि। मुदा बुच्चीदाइ हुनका संग नहि छोड़लथिन।

हरिमोहन झाक समकालमे अएलाह वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। अनमेल ओ बाल विवाह हिनको मथने छलनि। हिनकर बेटीक माएकँ कण्ठ फुटलनि। ओ ओकर बापकँ सोझे-सोझ पुछलथिन-

ई की कएल, उठाकऽ लऽ आनल

कमलक कोढ़ी ले ढेंग कोकनल

.....

जनमितहि मारि दितिअइ नोन चटाकऽ

कुहरए नहि पड़ितए घेट कटाकऽ

तामस तकर बाद माएक बेटी कँ सेहो उसकौलकै। ओहो तर्जनी देखौलक-

जो रे राक्षस, जो रे पुरुषक जाति!

तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहलि छी

मुदा तुरंते ओ तामस, पुआरक आगि जकाँ मिझा गेलै, ओ हारि गेलि-

ककरा की कहबै, सुनत के आइ

फाटऽ हे धरती, समा हम जाइ

माने, उएह सीताक नियति! विरोध नहि कऽ कऽ अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिला लेलनि।

मुदा ई से अनमेल विवाहक बेटीक परिणति छल। जातिक खरीद-बिक्रीक झमेला छल। मुदा ओही समयक ल विवाहक विधवा बेटीक स्थिति किछु फराक छल। ओ अपेक्षाकृत बेसी चेतन, बेसी समर्थ भऽ गेल छलि। ओ ती फटबाक कामना नहि कऽ जीबैत रहि समाजक एहि क्रूर परम्परा पर चोट कएलक-

अगराही लगौ, बरू बज्र खसौ

एहेन जाति पर बरू धसना धसौ

भूकम्प हौक, बरु फटौक धरती

माँ मिथिला रहिकेय की करती

ई रहए यात्रीक यात्रीपन! बेटीक चेतनाकेँ प्रखरताक संग निखार देबाक अभिनव चेष्टा। वस्तुत: थल-समाजमे ओकर नाड़ीकेँ वैद्य बनिकऽ गहनताक संग टोबाक, गर्मीक नपबाक जमीनी प्रयास यात्रीये कएलनि। वतुरिया' तकर उत्तम उदाहरण अछि। यात्री जाहि अनमेल विवाहक 'बूढ़बर' कवितामे हारल विरोध केँ दरसौलनि, हि 'नवतुरिया' उपन्यासमे आबि ओकर सफल परिणतिकेँ साकार कएलनि। एहिमे नायिकाक विवाह एक बूढ़सँ नहि ऽ कऽ समवयसी युवक सँ भेल छल।

वस्तुत: बेटीक सोचमे बहुत तेजीसँ विकास भऽ रहल छलै। ओ 'दबल हाहाकार' नहि भऽ कऽ अपन मसिद्ध अधिकारकेँ बुझऽ लागल छलि, आ ताहि दिशामे दखल देब आरंभ सेहो कऽ देने छलि। नहूँ-नहूँ नवीन क्षाक हिसाबे पढ़ऽ-लिखऽ लागल छलि, स्कूल-कॉलेजक प्रति उत्सुकता बढ़ि रहल छलै।

तकर कारण सेहो छलैसमाजक पुरुष-पात स्थायी रोजी-रोटीक खोजमे, दरिद्रताक मारल, अपन गामघरसँ रएब शुरू कऽ देने छल। अयाची मिश्रक सोच बहुत कष्ट देबऽ लागल छलै। अपना बाड़ीक उपजा खाकऽ आब अधिक दिन नहि जीबि सकै छल। ओकर आवश्यकता, ओकर सोच अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव सँ विस्तार पाबि रहल लै। से, जखन ओ बहराए लागल, बेटीक प्रति दृष्टिकोणमे अंतर होबऽ लगलै। ओ दिन-दुनियाँ देखलक। पश्चात् खन सपरिवार शहरजीबी होएब शुरू कएलक तऽ परिवेशगत प्रभाव, वैचारिक परिवर्तन अनबामे सहयोग कएलकै। ा संग बेटीकेँ सेहो स्कूल पठबऽ लागल। बेटी पढ़ऽ लागलि। बेटीक पढ़ब आ कर्मक्षेत्र दिस बढ़बाक बसात क्रमश:

गामघर दिस सेहो सिहकले गेलै।...

ई परिवर्त्तन हठात् नहि भेलै। जखन देश आजाद भेल, लोक कल्याणकारी सोच, व्यवस्थाक नव क्रेन्द्रबिन्दु बनल, तऽ शिक्षाक प्रति आम रुझान बढ़लै। आ से दुनू स्तर पर। सरकार आ जनता दुनू एहि दिशामे नव उत्साह आ नव उमंगक संग गतिशील भेल।

एहि सभ तरहक परिवर्त्तनक हमर समकालीन मैथिली साहित्य, साक्षी रहल अछि। साक्षी रहि एहि परिवर्तित सोचकेँ आजुक सोच कहि स्वागत कएलक अछि।

कारण, आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै, बदलि गेल छै। आइ बेटी, बेटाक अपेक्षा बेसी नीक रिजल्ट अनैए। बेटी चहकैए। बेटी ईर्ष्या बनैए। बेटी दया नहि, स्वाभिमान बनि गेल अछि। बेटी घुरखुरक भीतरक नोर नहि, भोर जकाँ धमकऽ लागल अछि। ओ आइ एमबीबीएस डाक्टर सँ लऽ कऽ आइआइटी इंजीनियर बनऽ लागलि अछि। प्रोफेसर , विभागाध्यक्ष सँ लऽ कऽ कुलपति बनि रहल अछि बेटी। बेटी आइ ओहन सभ किछु करऽ लागल अछि, जे काल्हि धरि बेटा लेल निहुँछल रहैत छलै। आइ मिथिलाक बेटी न्यायाधीशक कुर्सी पर बैसैत, सांसद-विधायक भऽ कऽ मंत्री बनैत तथा आइएएस-आइपीएस भऽ देशक व्यवस्थाकेँ व्यवस्थित करऽ मे लागलि अछि। हमर बेटी तऽ पर्वतारोही भऽ हिमालयक शिखर छुबि आयलि अछि।

ई जे परिवर्तन भऽ रहल अछि, भेल अछि ओ बेटीकेँ अपन जीवन जीबाक दृष्टिकोणमे सेहो परिवर्त्तन आनि देलक अछि। ओ अपन केरियरकेँ प्रमुखता दैत विवाह-संस्थाकेँ सेहो गौण बुझऽ लागलि। एक टटका प्रकाशित कथामे ओ अपन पिताकेँ स्पष्टत: कहैत अछि 'पापा हमर चिन्ता नइ करू। हमरा लेल विवाहसँ अधिक महत्वपूर्ण हमर केरियर अछि। हमर केरियर संग मजाक बन्द करू। ई हक हम अहाँकेँ नइ दै छी...।'

विवाह संस्था पर प्रहार कोनो नव नहि अछि। पछिले सदीमे ई हवा सिहकि उठल छल। वैचारिकता करोट फेरि रहल छल। 'पृथ्वीपुत्र'क सहनायिका बिजली, अपन मोनक सोझ-साझ आ स्वाभाविक कथामे मुक्तप्रेमक महादेवी बनैत, संगहि अवचेतनक स्तर पर सही, विवाह संस्थापर प्रहार करैत कहैए-'ओह कूचि बिजली पाछाँ घुसुकि गेलि जेबर पहिरबाक नाम पर। फेर गंभीर भेलि किछु काल धरि विचारइत रहलि। फेर शान्त स्वरेँ बाजलि-हम तोरा संगे ने रहबऽ, ने वियाहे करबऽ। हम नियम कएने छी। बिअहुआ के तेयागि आब ई तोहर सुइत-पाइत हमरा छजत? हम एहिना तोरा लग अबइत रहबह। चोराकऽ-नुकाकऽ। साँझखन, रातिमे, बेरिआमे।'

हम अपन कथनकेँ आर अधिक उदाहरण दऽ कऽ सिद्ध करबाक अपेक्षा मूल गप ई कहऽ चाहै छी जे आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि। जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे ओकर महती भूमिकाकेँ अनदेखी नहि कएल जा सकैए। ओकरा रूढ़ रूपमे भोग्या बनाकऽ रखबाक सपना देखब अपराध छी, अपन सोचकेँ समय सँ पाछू चलबा लेल प्रेरित करब थिक। काल्हि धरि जे बेटी एक सफल गृहिणी रूपमे रूढ़ छलि, आइ ओकर संग-संग सफल कामकाजी महिला-रूपमे प्रशंसित अछि। ओ घर-बाहर दुनू केँ बहुत नीक ढंगे सम्हारैत आगू बढ़ि रहल अछि। तकरे

रिणाम थिक जे आइ समाजमे बुच्चीदाइ, सघन अभियान चलौलाक उपरान्तो नहि भेटतीह। हुनक परम्परा विलुप्त अछि। बुच्चीदाइक संतति नव संस्कारसँ युक्त होरादाइक रूपमे ख्यात भऽ गेलि छथि। ओ विकासक अनेक सीढ़ीकेँ र करैत व्यापार-प्रबंधनमे लागि गेलीह अछि। एतऽ स्मरणीय जे आजुक सर्वाधिक प्रिय आ जरूरी विषय सेहो सएह छि-विजनेस मैनेजमेंट! अस्तु।

बेटीक मादे अपन समाजमे एक बहुत पुरान लोकोक्ति सुनल जाइ छल-बेटी ताड़ जकाँ बढ़ि गेलए। ई ताड़ काँ बढ़ब पिताक लेल चिन्ताक विषय होइत छल। चिन्ता एहि लेल जे आब ओकर विवाह करबऽ पड़त। आइ ओहि ोकोक्तिक अर्थ बदलि गेल अछि। बेटी ठीके ताड़ जकाँ बढ़ि रहलए! अर्थात् ओकरामे अपन होएबाक बोध जन्म तऽ लकैए। ओ अहुसँ तेजीसँ आत्मनिर्भरता दिस डेग उसाहि रहलए। तेँ जे समाज काल्हि धरि बेटीकेँ बलाय मानि ोकरा संग अपनो हकन्न कनबा लेल अभिशप्त छल, आइ से बेटी 'आय'क एक प्रमुख कारण बनि, घर-परिवारसँ ऽ कऽ देशक विकास धरिमे अपन एक महती भूमिकाकेँ रेखांकित कऽ रहलि अछि। एहना स्थितिमे 'मनुस्मृति' मे ाएल ओ गार्हस्थ्य-सम्बंधी प्रगतिशील श्लोक वस्तुतः एहि समकाल लेल संदर्भित भऽ उठैत अछि, अर्थात् 'यत्र र्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'।

ब्दार्थ

तृसत्तात्मक समाज-पुरुष प्रधान समाज

र-रस्सी

यम दर्जा-दोसर (निम्न) दर्जा

ध-ज्ञान, जनतब, जानकारी

रिवेश-वातवरण, चारूकातक आवो हवा

स्तित्व-सत्ता

ोहु-पुत्रक पत्नी

ानोत्पतिक कारक-(सन्तान-पुत्र पुत्री+उत्पत्ति-जन्म कारक=कारण/साधन) सन्तान उत्पन्न करबाक साधन।

हर-जन्मकालमे गाओल जाइवला गीत

दाउन-बेटीक बिदाइ कालमे गाओल जाइवला गीत

मेल-बेमेल

थित-दुखित

नी-नवयुवती, नवयौवना

नी-माय

संरचना-बनावटि

जमाइ-बेटीक पति

दु:स्थिति-खराब स्थिति

अकानल-अनुमानैं लगाएब

तामस-क्रोध

भोग्या-भोग करबा जोग वस्तु

सौंपैत-समर्पित करैत

क्लीब-नपुंसक

प्रतीक-चिह्न

अधिसंख्य-बेसी संख्या

प्रणम्य देवता-यथा स्थिति वादी

लांछना-कलंक/दोष

करोट फेरैत-करवट बदलैत

विधवा-जकर पति मरि गेल हो, ओ स्त्री

सपरिवार-परिवारक संग

साक्षी-गवाही

पर्वतारोही-पहाड़ पर चढ़निहार

विलुप्त-समाप्त

लोकोक्ति-लोकक कहब

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर एक शब्दमे दिअ-**

   (i) दोयम दर्जाक स्तर पर के जीबैत रहलि अछि?

   (ii) ककर जन्मसँ परिवारक चेहरा मलिन भेलैए?

   (iii) बेटी एकमात्र ककर कारक रहलि अछि?

   (iv) जखन समाज दिस तकलनि तउ के व्यथित भ उठलाह?

(v) हरिमोहन झाकेँ समाजमे अधिसंख्य कोन लोकनि भेटलथिन?

2. खाली स्थानकेँ कोष्ठकक उचित शब्दसँ भरू-

(i) आधुनिक कालमे 'बुच्चीदाइ.....परम्पराक प्रतीक भेली।

(ii) विमला देवी सन चरित्रकेँ.....माध्यमे स्थापित कयलनि।

(iii) हरिमोहन झाक समकालमे अयलाह.....।

(iv) समाजक कुटिलताकेँ देखि अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिलायब.....नियति अछि।

(v) यात्रीजीक एकटा उपन्यासक नाम अछि.....।

(ग्रामसेविकाक, क्लीव, सीताक, नवतुरिया, यात्री)

3. स्तम्भ 'क' क मिलान स्तम्भ 'ख' उचित शब्दसँ करू

(क)	हरिमोहन झा	(i)	बिजली
(ख)	यात्री	(ii)	बुच्चीदाइ
(ग)	सोहर	(iii)	मातृसत्तात्मक
(घ)	पितृसत्तात्मक	(iv)	समदाउन
(ङ)	पृथ्वीपुत्र	(v)	बूढ़वर

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) एहि समाजमे स्त्री कोन-कोन रूपमे विद्यमान अछि?

(ii) विद्यापति समाज दिस ताकि व्यथित किएक भऽ गेलाह?

(iii) विद्यापति बेमेल विवाहक विरोध कोन शैलीमे कयलनि?

(iv) आधुनिक कालमे बुच्चीदाइ कोन परम्पराक प्रतीक भेली?

(v) आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै कोना?

5. सही कथनक समक्ष (✓) चिह्न आ गलक कथनक समक्ष (x) चिह्न लगाउ-

(i) आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि।

(ii) यात्री स्त्री समाजक गहनताकेँ बुझबाक जमीनी प्रयास कयलनि।

(iii) विद्यापति मात्र युवा युवतीक रंग रभसमे घेर छलाह।

(iv) स्त्री जातिक नाम स्थिर रहैत अछि।

(v) खट्टरकका विशुद्ध तार्किक छलाह।

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बेटीक जन्म भेला पर परिवारक चेहरा मलिन किएक भऽ जाइत छलै?

(ii) समाजमे स्त्री जाति दु:स्थिति विरोध कोना कयलनि अछि?

(iii) हरिमोहन झाक साहित्यमे नारी जागरणक चित्रणक उल्लेख करू।

(iv) यात्री जी अनमेल विवाहक विरोध कोना कयलनि अछि?

(v) आइ बेटीक प्रति सोचमे समाजक दृष्टिकोणमे तेजीसँ परिवर्तन भऽ रहल अछि। कोना?

(vi) आइ कोनो एहन कार्यक्षेत्र नहि अछि जाहिमे नारीक उपस्थिति नहि अछि। एकरा विस्तारसँ वर्णन करू।

(vii) आजुक सर्वाधिक प्रिय विषय की थीक आ किएक?

योग्यता विस्तार

1. विद्यापतिक नारी जागरणसँ सम्बन्धित रचनाक संकलन शिक्षकक सहयोगसँ करू।

2. यात्री जीक 'बूढ़वर' कविता आ 'नवतुरिया' उपन्यासकेँ विद्यालय पुस्तकालयसँ उपलब्ध कऽ अध्ययन करू।

3. हरिमोहन झाक 'बुच्चीदाइ', खट्टरकका, तिरिलाइ आ ग्रेजुएट पुतोहुक सम्बन्धमे अपना अध्यापकसँ विस्तृत जानकारी प्राप्त करू।

4. समकालीन पत्र पत्रिकासँ नारी जागरणक कोनो दूटा कथा अथवा कविताक संकलन करू।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

द्रुतवाचन

पीयर आँकुर

से, ओ खूब विशाल ढेङ छल। कतोक दिनसँ पड़ल। बेस चाकर-चौरस आ' भरिगर। से ढेङ सहसा उठा लेल गेल। देखैत छी ओकरा तरमे मुरछायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ कते तरहक सुन्नर-सुन्नर बीजक पीयर-पीयर आँकुर। मुदा सभटा मिरमिराइत। आलोक लेल बेलल्ला भेल। आइ जखन ओ ढेङ हटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि आब एहिसभमे नवजीवनक संचार होयतैक। ई आँकुरसभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक संग प्रकट होयत।

की एहिना युग-युगक दासत्वक ढेङ हमरालोकनिक धरतीक प्रवृत्तिक आँकुरकेँ नहि दबने रहल? की हमरा लोकनिक जन-समाजक उच्च भावनाक आँकुर आलोकक लेल बेलल्ला होइत युग-युगसँ मिरमिराइत रहल?

ई धरतीक प्रवृत्ति की! आ ओकर आँकुर ककरा कहब? गेल छलहुँ एक बेर सरकस देखबाक हेतु। बाघ-सिंह आदि हिंस्र पशुक बड़ भयानक खेल देखलहुँ। रस्सापर शून्यमे बड़-बड़ डेराओन तमाशा देखल। मोटर साइकिल, घोड़सवारी आ' अस्त्र-संचालनक एहन दृश्य आँखिक आगूमे आयल जकरा मोन पाड़ि एखनो काँपि जाइत छी। उत्सुकतावश सरकसिया लोकनिक परिचय बुझलहुँ तँ ज्ञात भेल जे सभ मराठी छलाह-गोट-गोटक'।

महाराष्ट्रक भूमिका वीरताक प्रवृत्ति, गुलामीक ढेङ तर दबि सरकसक खेलक रूपमे प्रकट भ' रहल छल। वीरताक एहि प्रवृत्तिकेँ जखन उपयुक्त वायु, प्रकाश नहि भेटि सकलैक तँ ओ लोककेँ बाघ-सिंहक भयानक खेल क' सन्तुष्ट होयबा लेल बाध्य कयलक। मुदा, ओ वीरत्वक भावना मुइल नहि छल, केवल विकासक सुविधाक अभावमे सिर-सिराइत छल। ओह गुलामीक ढेङ तर जँ दोग-दाग भेटि गेलैक तँ भगवान तिलक-सनक व्यक्तित्व आलोकक अन्वेषणमे बहराइत, प्रयत्न करैत होमरूल आन्दोलन आ' गीता रहस्य सन पुष्प आ' फूल देलथिन।

ओएह सुनू सैनिकक बिगुल। 'राइट-लेफ्ट' प्रारम्भ भ' गेल। गोरखा फौज कवायद क' रहल अछि। बाघ-भालु, उभड़-खाभड़, चोटी-घाटी आ' बोन झाड़क भूमि हिनकालोकनिमे असीम साहस भरने अछि। हिनकामे अनुशासनक भावना एहि कोटिक अछि जे संसारमे कम्मे ठामक लोक हिनकासभसन आदर्श सैनिक भ' पबैत अछि। मुदा विकासक असुविधाक ढेङ तर पिलपिलाइत हिनका चपरासी, दरबान, संतरी होटलक नोकर आ' साम्राज्यवादी अंग्रेजक सैनिक बनि संतोष कर' पड़ैत छनि।

आ' लगक बात थिक। चन्द्रगुप्तक वाहिनीक जे सैनिक, विश्व-विजयिनी ग्रीक सेनाकेँ पराजित कयलक' जत'क वीरलोकनि तरुआरि, समुद्रगुप्तक नेतृत्वमे समस्त आर्यावर्तमे चमकल जत'क वीर-भावना शेरशाहक आगू-आगू चलि दिल्ली पर विजय पओलक, जाहिठामक स्वातंत्र्य-प्रियता सन सत्तावनमे वीर कुँवर सिंहक कंठसँ रणहुँकार बनि प्रकट भेल, ओहि आरा, छपरा आ' पटना जिलाक सैनिक भावनाक आँकुर परतन्त्रताक ढेङ, तर तेना दबकल रहल जेना हुनकालोकनिकेँ कान्सटेबुल, जमादार दरबानजी आ' जमींदारक मजबुरी सिपाही बनबा लेब बाध्य होम' पड़ल।

मध्यप्रदेशक एकटा गाममे छलहुँ। किन्तु साहित्यिक बन्धुक अनुरोधपर रामलीला देख' गेलहुँ अरे, ई की? रामलीलाबला तँ सभ केओ गौआ-घरूआ छलाह अपना जवारक लोक। गामपरक महिष-मोढ़सभक मुँहसँ आन प्रान्तक स्टेजपर गीतगोविन्द, विद्यापति तिरहुता आ' बटगवनी सुनि, आन भाषा-भाषीकेँ मुग्ध भ' भ' लोटि लसैति देखलहुँ। नयनाभिराम एक्टिंग, कोकिल-कंठ, साधारण स्टेज, कुल तीन चिरी- चोँत भेल परदा, बिनु स्कूलक मुँह देखने एक्टर, जर्जर वेश-भूषा मुदा, हजार-हजार दर्शकक मन्त्रमुग्ध भीड़।

मिथिला माँटि-पानिमे युग-युगसँ साहित्य, कला आ' दर्शनक बीज सँचित छैक। जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक ओ बीज वृक्ष बनि अयाची, मंडन, वाचस्पति, उदयनाचार्य आ'विद्यापतिक रूपमे पत्र-पुष्पसँ युक्त भेल। दर्शन, कला ओ साहित्यक फल तकरे परिणाम थिक।

मुदा, गुलामी आ' प्रतिकूल वातावरणक दाबनि पड़ि गेलासँ ओहि अमर बीजसभक आँकुर पीयर पड़ि गेलैक तथा ओकर बाढ़ि अवरुद्ध भ' गेलैक अछि।

विकसित नहि होयबाक कारण ओ रामलीलावला नटकिया, भनसीया, कीर्त्तनियाँ आ' कथावाचक रूप ल लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीतपर कनैत रहि गेल, नृत्यकलाकेँ मनचुम्मी आ'जालिमसिंहक रूप लेम' पड़लैक, साहित्य एकर नारीक कंठसँ समदाउनि बनि कानि उठलैक, संगीत ओकर डोमक ओढ़नीक स्वरमे कुसुमा दीनाक विलाप बनि चित्कारक' उठल, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत कुण्ठित भ' गेलैक आ दर्शक श्राद्धस्थलीमे शास्त्रार्थ करैत हपस' लगलैक।

अहाँक की विश्वास अछि?-एकटा वृद्ध विद्वानकेँ पुछलियनि स्वतन्त्र भारतकेँ मिथिलाक की देन होयतैक?

वृद्ध मुस्कायला जँ विकासक समुचित अवसर भेटय तँ मिथिलाक धरतीक ई आँकुरसभ कवि, दार्शनिक अभिनेता, लेखक, चित्रकार ओ कलाकारक रूपमे प्रस्फुटित भ' उठत। फेर एकर पुष्पक मधुर गन्ध संसार भरि व्याप्त भ' उठत।

ओ कनिय ठमकिक' कहलनि-सभसँ बेसी प्रगति करती मैथिलानी। सीता, गार्गी आ' भारतीय परम्परा नष्ट नहि भ' गेलैक अछि-केवल सुषुप्त छैक। ओकरा जाग्रत होयबामे कनियो काल नहि लगतैक।

अंग्रेजसभ विभिन्न स्थानक माँटि-पाँनिक एहि आँकुर विशेषकेँ बहुत हद धरि चिन्हैत छल। ओ एहि स्थानीय विशेषतासँ अपन ढंगपर उठओलक। सिक्खकेँ भारतक खड्गहस्त, गोरखाकेँ राइफलधारी, भोजपुरीकेँ पुलिस, मद्रासी शास्त्रधुरणीकेँ आइ॰ सी॰ एस॰, बंगालक भद्रलोकनिकेँ किरानी आ' स्टेशनमास्टर बनओलक। मुदा ठोकि-ठाकि ओतबे दूर धरि उठबाक अवसर देलकनि जते दूर धरि ओ ओकरा लेल उपयोगी भ' सकतथि। हँ, ई भिन्न बात जे ए देशक संस्कृतिक जड़ि दर्शनक माँटिमे एतेक गँहीर तक गेल छलैक जे एहू विपन्न स्थितिमे महात्मा गाँधी, महाकवि

टैगोर, महावैज्ञानिक रमण आ महादार्शनिक राधाकृष्णनक आविर्भाव भ' सकल, जखन कि आन उपनिवेश-अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आ कनाडा सन देश एको टा उल्लेखनीय कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ दार्शनिक नहि द' सकल।

मुदा, आइ तँ अंग्रेज नहि अछि। गुलामीक भरिगर ढेङ आब हटि गेल अछि। देखैत छी ओकरा सुन्नर-सुन्नर बीजक अँकुर युग-युगसँ अन्हारमे रहैत-रहैत कनेक अधिक पीयर पड़ि गेल अछि, पिरपिरा रहल अछि।

एहि अँकुर सभ लेल आलोक चाही जल चाही आ खाद चाही से कोना प्राप्त होयतैक? सभसँ पहिने समाजमे ई चेतना चाही जे आलोक, जल आ खादक अभावमे ई अँकुरसभ नष्ट भ' जायत। बिना उपयुक्त वातावरण नहि भेटने ओकरा विकास नहि भ' सकतैक।

एहन अँकुरसभक विकासक लेल सभसँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्व-विद्यालयसभक, जाहिमे ओहिठामक विशेषतासँ युक्त विषयकेँ सभसँ अधिकतम प्रोत्साहन देल जा सकय। मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुख आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ' दर्शन विषयक प्रधानता, नहि जानि कतेक कते 'महान' केँ उत्पन्न क' सकत।

हमर कथनक ई अर्थ कथमपि नहि जे मिथिलामे करियप्पा अथवा नेपालक गोरखामे विद्यापति नहि भ' सकैत अछि। मानव अद्भुत आ' असाधारण जीव थिक। ओ कत', कखन आ' कोना कोनरूपमे अपन विकास करत से कहब कठिन। मुदा, विभिन्न माँटि-पानिमे जे स्थानीय विशेषता होइछ तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। केरलक नारिकेर कुंज आ मिथिलाक आम्रवन अपन-अपन विशेषताक सहज परिणाम थिकैक। ई के कहत नहि?

से ओहह देखियौक ने कला, साहित्य ओ दर्शनक अमर बीज पीयर-पीयर अँकुर। पिलपिलाइत, क्षीण आ मौलायल-जेना चिकरि-चिकरि कहि रहल हो-स्थान, अधिक स्थान चाही, आलोक, अधिक आलोक चाही।

□□□

स्वस्ति। चि0 शंकर कँ शुभशिष: सन्तु तरामय वृत्तम-

तौं कतेक बेरि लिखलह जे बाबा अओ, अहाँ एतेक विषय पर पत्र लिखैत छी मुदा आइ काल्हि प्रचलित टाका लए जे वर सभक विवाह भए रहल अछि, ताहि प्रसंग किछु नहि लिखैत छी। हम एहि प्रश्नक उत्तर देबामे जानि बूझि अनठबैत छलहुँ। तकर कारण ई अछि जे हमरा लिखने समाज कनिको प्रभावित होएत तकर तँ संभावना अछिए नहि, तखन अपन कागत, मोसि ओ क्षणक बेरबादी हम किअए करू। एकर अतिरिक्त इहो सम्भावना अछि जे हमरा पर समाजक लोकक कोप भेलासँ बहुत प्रकारक हानि से भए सकैत अछि। हमरा जनैत एहि विषयक चर्चा निर्जन मरुभूमिमे पानि लेल चिकरब जकाँ, आकाशमे लाठी चलाएब जकाँ, पानि पिटनाई जकाँ, बालु पेरि ओहिसँ तेल बाहर करबाक प्रयास जकाँ, घोड़ाका अण्डाक जोगएबाक यत्न जकाँ, गुलरिक फूल तोड़बाक इच्छा जकाँ व्यर्थ होएत-अरण्यरोदन होएत से कहह। ई कतोक बेरि फूल तोरा कहि चुकल छिअहु, मुदा तथापि ताहिलेल बेरिबेर तौं आग्रह नहि दुराग्रह कएने छह-तँ आइ हम तोहर इच्छाक पूर्तिक प्रयास करैत छी। हमरा अपना जे भावी होएत से बस होअओ।

शास्त्रमे आठ प्रकार विवाह कहल गेल अछि। ओ आठो प्रकार एना होइछ-(1) ब्राह्म, (2) दैव, (3) आर्ष, (4) प्राजापत्य, (5) आसुर, (6) गान्धर्व, (7) राक्षस, (8) पैशाच। ओहिमे प्रथम चारि प्रकार मात्रक विवाह ब्राह्मणकँ विहित अछि। एहि मध्य ब्राह्म विवाह भेल जे कन्याक पिता गुणवान वरकँ स्वयं बजाए हुनका वस्त्रादि दए तथा मधुपर्कादिसँ पूजित कए हुनकर अपना कन्याक संग विवाह करब। यदि यज्ञक पुरोहितकँ अलंकारादिभूषित कन्या देल जाए तँ से भेल दैव विवाह। एकटा वा दूटा गाए-बड़द वरसँ लए भेल कन्यादानक नाम आर्ष विवाह। "अहाँ दुनू एक संग रहू" ई कहि भेल कन्यादानक नाम छल प्राजापत्य। कन्याक सम्बंधी लोकनिकँ तथा कन्याकँ भरि पोख द्रव्य दए यदि विवाह कएल गेल तँ से भेल आसुर। वर आ कन्या द्वारा स्वेच्छया कएल विवाह थिक गान्धर्व। मारि-पीटि बलसँ बनैत कन्याक ग्रहण करबाक नाम भेल राक्षस विवाह। सूतलि वा बेहोश भलि कन्याक संग गुप्त संभोग कए ओकरा अपन स्त्री बनाएब भेल पैशाच विवाह।

एहिमे बरकँ टाका दए हुनका अपन कन्या दए भेल विवाहक कोनोटा व्यवस्था धर्मशास्त्रमे हमरा नहि देखबामे आएल तँ टाका-तिलक लए भेल विवाहक नाम हालमे राखल गेल अछि तिलकौआ। अतएव से कतएसँ आएल से जानि नहि। बूझि पड़ैछ जे उपयुक्त ब्राह्म विवाहक अर्चा-पूजाक अंगमे लोक कदाचित् टाका असर्फी सोना आदि वरकँ दैत छलैक। एना देल वस्तुक नाम अर्हणा छल। तकरे दोसर स्वरूप भेल फलदान वा तिलक। तकर अभिप्राय छलैक फलादकि दानसँ वा चानन तिलक आदिसँ वरकँ पूजित कए हुनका कन्या देल जाइत छल। ई पूजा कन्याक पिताक अपन सामर्थ्य तथा इच्छाक सर्वथा अनुसार होइत छल। जखन वर कन्याक पिताक प्रदत्त पूजा अर्थात् हुनक प्रदत्त फलादि वा चन्दनादि स्वीकार कए लैत छलाह, तखन हुनका बजाए हुनक विवाह कन्यासँ कएल जाइ छल।

जे तहिया कन्याकेँ पिता स्वेच्छया दैत छलाह से आब वरक पिता अपन बेटाक विवाहमे बलजोरी असुलए लगलाह। एकर अर्थ दू प्रकारक भेल-एक भेल काटर वरसँ लए कन्यादान करब। एक टा दू टा गाए-बड़दक स्थानमे हाथीक मूल्य कन्याक पिता (भलमानुष लोकनि विशेषतया) लेबए लगलाह एवं एहन टाका लए बेटीक विवाह कएनिहार भलमानुस-पिता बेटिबेच्चा होएबाक कुख्यातिक लाभ कएलहु पर बेटीक विवाहमे टाका गनएबामे कनेको धोखा-धड़ीक अनुभव नहि करथि। हमरा स्मरण अछि जे एक महामहोपाध्याय लब्धोपाधि जनिक घर हमर गामक निकटस्थे एक भलमानुसक गाममे छलनि तथा एक समयमे जे मिथिलाक अत्यधिक प्रतिष्ठित विद्वानक समाज वा उच्च-कुलीन वंशक वरसँ सोलह सए टका काटर लए अपन कन्याक विवाह कएने रहथि। एहि प्रसंग हुनक एक विद्यार्थी जे स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान छलाह, जिज्ञासा कएल-"गुरुजी, कन्याक बिक्री कोना कए रहल छी।" महामहोपाध्यायजीक उत्तर भेटलनि-बड़का-बड़का अर्थात जेहन मधुबनीक नामी एक चीनीक कारखाना मालिक श्रीदीप साहुकेँ छनि तेहन एक जोड़ा बड़दक मूल्य मात्र हम लेल अछि। अर्थात महामहोपाध्यायजी साधारणतया अपना दलान पर अधिकसँ अधिक 125-150 टाका मूल्यक बड़दक कतोक जोड़ा रखैत छलाह। अपन एहि अधम कार्यक समर्थनमे मनुस्मृतिक पौंतिक अर्थ लगाओल। तहिना आइ काल्हि टाका लए विवाह कएनिहार प्रायः प्रत्येक वर अपन काटर कन्यागतसँ असूल कए अपना बेटाक बदलामे स्वयं बलजोरी अर्हणाक ग्रहण कए बेटाक बिक्री करैत छथि।

जेना टाका लए बेटीक विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बेटि-बेच्चा, तहिना टाका लए विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बिकौआ। ई बिकौआ लोकनि कन्याक पितासँ काटर लए एकाधिक (हमरा ज्ञानसँ 21 टा धरि) विवाह करैत छलाह। बिकौआक स्त्री वा सन्तानक संभरणक भार नहि। एहन बिकौआसँ विवाहित बेटी कन्यादानी वा 'कनेदानी' प्रायः नैहरहि मध्य रहैत छलीह। अपना पिताक परिवारमे कन्यादानी बेटीक बड़ जूति रहैत छल। बापक परिवारक कोन कथा गामहुँमे हुनक बड़ धाख। यदि केओ विख्या अनलक तथा कोनो कनेदानीकेँ ओ पसिन्न वा जुगलत नहि जानि पड़लनि तँ गामक कोन कथा, दलान परसँ परिछनिक पश्चात् वा ओठंगर कुटाए बिना विवाहक आपस कए देल जाइत छलाह। एहन फिराओल आँखिमे काजर, कपारमे चानन तथा पहुँची पर कंगन बन्हने कतेको भाग्यावान वर वा दुलहाकेँ हम देखि चुकल छी।

आब यथा लोकमे नव प्रकाश अएलैक अछि तेना-तेना बेटी-बेच्चा तथा कनेदानी शब्द सुनबामे नहि अबैछ। बहु-विवाहकारी बिकौआ सेहो गेलाह। कनेदानीक बेटा भगिनमान कहल जाए बला मात्रिकमे परजीवी भेनिहार भलमानुसक सन्तान लोकनिक प्रायः आब अभाव सन भेल अछि। चतुर्थीक नेओत-पुरी अथवा राजपूत लोकनि जकाँ भतखइक वा सौजन्य वा स्वजनताक प्रतीक स्वरूप सिद्धान्त भोजनक व्यवहार लुप्तप्राय अछि। चतुर्थीक पश्चात विवाहसँ कोनो अयुग्म शुभ दिनमे मासाभ्यन्तर जमाइक बिदाइक व्यवस्था लुप्त भेल। विवाह कए प्रथम-प्रथम गाम अएलापर चुमाओन करएबाक व्यवहार गेल। आब तँ साधारणतया जे बहु जल्दी जमाएकेँ बिदा छोटका डाला लए करत से कोजागराक एकाध दिन पूर्व करत। एकर फल ई होइत छैक जे बिदाइ तथा कोजागरा दुहू अवसरक भार एकहि बेर देल जाइत छैक। यदि विवाहमे पहिने दू वा चारिटा व्यक्ति बरिआती अबैत छलाह, तकरा बदला आइ सए दू-सए धरि

सेहो बरिआती अबैत छथि। हँ, बरिआती लोकनि पहिने दुइ टाका सोहाग दए भोरे-भोरे अपन बाट धरैत छलाह, तकर बदला ओ जतेक दामक धोतीक अपेक्षा करताह ततबा सोहागमे टाका देथिन्ह। कतए पहिने अनोन तरकारी सहित सोहारी वा चूड़ा खाथि वा स्वयं अपनहि हाथे भानस कए कन्यागतक ओहिठाम भोजन करथि, कतए आब आजु-लहसुन देल दालि, तरकारी तथा बाँटीक छागरक वा दोकानसँ आनल हलाली मांस तथा माछ जे कन्यागत खाए नहि देलक तकरा गारि पढ़ैत रातिमे निद्रामग्न होइत छथि। आब द्विरागमनक बरिआतीक प्रथा गेल। आब द्विरागमन मात्र बिदागरी रहि गेल अछि।

आब जे व्यवहार चलल अछि अर्हणाक रूपमे कन्यागतक स्वेच्छया देल वस्त्रादि नहि; प्रत्युत नगद रुपैआ। पहिने ई टाका "सैकड़ा" मे छलैक, तखन ई हजारमे "व्यवस्था" होअए लागल; आब ई दश हजारक गुणनफलमे लागू भए रहल अछि। विवाह की भेल, वरक खरीद-बिक्री। तँ हमर एक परिचित एम०एल०ए०क कन्यादान यथासंभव टाका देला पर निश्चय भेल। वर-बरिआतीक सभा वा वरहट्टासँ बिदाह वरक दाम-कामक चुकती भेलहु पर होएबोमे देरी देखि बेचारे कन्यागत धैर्यहीन भए बजलाह-कृपया बरबड़द हमरा जिम्मा शीघ्र करू। किनलाहा वरकेँ कनेको दोसरक अधिकार अहाँलोकनिकेँ नहि अछि। एहिपर वरक पिताकेँ ततेक ने तामस भेलनि जे लेल वरक दामकेँ आपस कए विवाह नामञ्जूर कए देल। हमरा ईहो स्मरण अछि जे वैवाहिक कथामे कन्या पक्षक कहब जे सिद्धान्तक एक-एक टाका दुनू पक्ष देअए तथा वर पक्षक विचार जे दुनू टाका कन्यागते देथि से छल। एक टाकाक बात छलैक, होइत छल जे कोनो एक पक्ष अपन जिद्द छोड़त तथा सभाक बात छलैक; राति बिताइओ सिद्धांत लिखबए कन्यापक्ष बला वरकेँ लेबए अओताह। ताहि भरसँ हमरा सहित बरिआती लोकनि कन्यागतक गाम दिससँ अबैत प्रत्येक लालटेमक ज्योति दिसि टकटकी लगौने भरि राति बैसले रहलाह। वर लेबए केओ नहि आएल।

नवका व्यवस्थासँ एक अप्रत्याशित लाभ ई भेल जे देल काटरक टाका डुबि जएबाक भयसँ केओ वरकेँ फिराए नहि दैछ। हँ, ई बात दोसर छैक जे इच्छानुरूप मांस-माछ भोजन नहि भेटने वा नाच गान, मलाल, झाड़-फनुसमे खर्चा नहि कएला पर कन्यागतकेँ अपमानित कएल जाइत छनि। एक हालक वार्ता थिक। एहिना पच्चीस हजारक अन्दाज टाका लए अपना बेटाक विवाहक इच्छुक एक धनिक व्यक्ति कन्यागतकेँ विवाहसँ पूर्व कन्या देखएबाक आदेश दलथिन तथापि ई कहि जे देखाओलि कन्या ओ नहि छलीह जकरासँ विवाह निश्चित छल, बरिआती सभ आपस आबए लगलाह काटरक टाका बिना आपस कएने। कन्यागत सेहो सङोर कएलक। बरिआती लोकनिक स्वागत तकर पश्चात् गारि मारिसँ तथा भोजन अभोज्य जीव बेङकेँ थारी-थारी कुदाएकेँ करओलकनि मारिक डरसँ की करैत जएताह, अगत्या वरक विवाह भेल।

टाका काटर हजारक हजार गनिए जे कन्यागत चएन रहताह से नहि। अपनो वा श्वशुरक जहल जएबाक संभावनाक डरसँ ई गछबो नहि केओ करताह जे याचित वर-मूल्य दए विवाह ठीक कएने छथि-आब जहिआसँ नवका दहेज कानून लागू भेल अछि तहिआसँ प्राय: अधिक विवाह "आदर्श" भेल कहल जाइछ। यद्यपि हमरा ईहो सुनल

अछि जे एक सज्जनक कन्यादानमे लक्षाधिक टाका खर्च भेल, यद्यपि हुनका देखौआ 5-6 बीघा मात्र खेत छनि।

महाभारतमे सेहो एकठाम काटर वा मूल्य लए वर-कन्याक विवाहक चर्चा भेल छैक। भीष्मक उक्ति छैनि-

यो मनुष्यः स्वकं पुत्रं विक्रीय धनमिच्छति।

कन्यां वा जीवितार्थी वयः शुल्कं संप्रयच्छति।।

सप्तावरे महाघोरे निरये वालसा ह्यये।

स्वेदं मूत्रं पुरीषं च तस्मिन् मूढः समश्नुते।।

अर्थात् बेटा वा बेटीक विक्रयसँ वा टाका लए विवाहार्थ कन्या प्रदानसँ लोककेँ नरकगामी होबए पड़ैत छैक। यतः एक संग कन्याक विवाह तथा बेटाक बिक्रीक निषेध अछि, तकर साहचर्यांत अर्थ भेल कन्याक बिक्री तथा बेटाक विवाहमे टाका लेबाक निषेध।

ऊपर चर्चित दुइटा धरि गाए-बड़दे लए जे कन्याक ग्रहणक धर्मशास्त्रीय व्यवस्था अछि तकर स्पष्ट खंडन आगाँक पाँक्तिसँ होइछ।

आर्षे गोमिथुनं शुल्कं केचिदाहुर्मृषैव तत्।

अल्पो वा बहु एतद् विक्रयस्तावदेव हि।

यद्यप्याचरितः कैश्चिन्नैष धर्मः सनातनः।।

एहना हालत पर प्रतिदिन एकबारमे पढ़ैत छी जे यौतुक नहि भेटला पर अमुक कन्याकेँ मोक्ष (तलाक) देल गेल, अमुक कन्याक वर तथा हुनक पिता द्वारा हत्या कएल गेल वा ओ कन्या स्वयं आत्महत्या कएल। अथवा एक घटना हमरा जानल अछि जाहिमे कन्यागतकेँ बहुत धनिक जानि आगाँ चलि सहस्र-सहस्र लाभ करबाक आशामे एक पढ़ल-लिखल समाजमे प्रतिष्ठित बरक बूढ़ पिता कन्यागतक सभ प्रकारेँ संभव बेइज्जति कएने छथि, यद्यपि जे कन्या पिता ओतेक धनिक नहि जतेक वर पक्ष बुझने छलथिन आ ओ किछु देबाक प्रतिज्ञो नहि कएने छलथिन। ततबए नहि। ई विवाह एक भूतपूर्व एम॰ एल॰ ए॰ नहि अपितु भूतपूर्व राज्यमंत्री जे वरक सम्बन्धी छलाह हुनक प्रस्ताव पर, कन्यागतक प्रस्ताव पर नहि, भेल छल। दुर्भाग्यसँ कन्या पढ़बामे वरसँ नीक छलैक जे वरकेँ पसिन्द नहि। ताहि लेल विभिन्न बहाना कए कन्याक पढ़ब बन्द भेल। तोरा जानल छहु जे ई काण्ड के कएल। काटर-प्रथाक दुष्परिणामक ई कतोक कथाक संचय मात्र कएलहुँ अछि। आगाँ यदि एहि दिशि तोहर रुचि देखबहु तँ प्रत्येक घटनाक टीकाक रूपमे विस्तृत विवरण लिखबहु।

□□□

दिनेश बाबूकेँ पुछलिएन जे रमेश तऽ अहाँ केँ बड्ड उकट्ठ करै छल तऽ हैदराबाद किएक अनलिऐक? ताहि पर अपन व्यथा सुनबऽ लगलाह-"की कहू, तैं तऽ अनलिऐक। एकर बाप छोट भाइ छल। ओकरा पढ़ाओल-लिखाओल। किछु-किछु व्यवसाय करऽ लागल। हाथ पर दू टा पाइ आबऽ लगलैक तऽ सन्देह भेलैक जे हम बाँटि ने' लिअई। तैं भिन्न भऽ गेल। लेकिन किछुए दिनक बाद, बुझले अछि जे एक्सिडेंटमे चलि गेल। रमेश ओहि समय आठे-दस बरखक रहल होएत। ओकरा बी.ए. तक पढ़बाक खर्च देलिऐक। तकरा बादसँ गामहि रहि सहारा फाइनेंस करै एजेंट बला काज करऽ लागल। लेकिन उकट्ठी तेहेन भारी जे तबाह भऽ गेलहुँ। सभ दिन दू आंगुर कऽ टाटी घसका दिअए, आरि छाँटि लिअए, सीसो पाँगि लिअए, जामुन पाँगि लिअए, आमक ठाढ़ि काटि लिअए, बाँस काटि लिअए, आमक मासमे आम झखा लिअए-तंग-तंग कऽ देलक। तखन हारि कऽ ओकरा नौकरीक लोभ दऽ कऽ हैदराबाद आनल। भगवतीक एहेन कृपा जे हम जाहि कम्पनीमे काज करै' छी ताहीमे भऽ गेलैक। गाम पर जे उत्पात मचौने रहैत छल, ताहिसँ आब निश्चिंत छी। दोसर बात ई जे आबू हमरो बएस भेल। कहिया की हएत से के जनैए? गामसँ एतेक दूर छी। कियो कनहो दै' बला रहक चाही ने'।" हम कहलिएनि जे बहुत उत्तम विचार अछि।

किछु दिनक उपरान्त सुनऽमे आएल जे रमेशकेँ पैसाक कोनो चपलामे नौकरीसँ निकालि देलकैक। किंतु मासक अन्दरे कत्ता कोशिश-पैरवी कऽ दिनेश बाबू ओकरा दोसर नौकरी पकड़ौलनि। एहि नौकरीमे खूब तरक्की कएलक कारण राता-राती एक केँ दू बनबऽ मे ओ माहिर। धीरे-धीरे रमेश एकाउन्टेन्टसँ मैनेजर भऽ गेल-आर.एन. झा, मैनेजर। नवका नौकरी पकड़लाक बाद ओ डेरा अलग कऽ लेलक। ताठ-बाटसँ रहऽ लागल। मालिक एकटा गाड़ियो दऽ देलकैक। खूब धुमधाम सँ विवाह भेलैक, हमर जमाएक पितियौत बहिनसँ। काका-काकीकेँ बिसरऽ मे समय नहि लगलैक। छओ मास-साल भरिमे ककरो ओहिठाम विवाह-उपनयनमे भेंट-सेहो प्रणाम-पाती तक सीमित।

रिटायरमेंटक बाद दिनेश बाबूक समस्या कसि कऽ गहराए लगलनि। थोड़-बहुत जे पैसा भेटलनि से इन्वेस्टमेंटक नाम पर बेटा उमेश उड़ा लेलकनि। ओहो घपलेबाज नम्बर एक-ओकरो नौकरी छुटलैक। ओकर पत्नी एवं 5-6 बर्खक स्कुलिया बेटा-सभक भार दिनेशे बाबू पर। कन्यादान तऽ ओही दिन कपारमे ठोका गेलनि जहिया बेटी शौलूक जन्म भेलैक। काजमे काज एकहि टा भेल छलनि जे बेटीक नाम एम.बी.ए. मे लिखा गेल रहनि। एही मध्य हुनका ओहिठाम एक दिन गेलहुँ। बहुत चिन्ताग्रस्त बुझएला। घरमे दुइए प्राणी। बेटा खानाबदोश-जखन इच्छा सुतनाइ, जखन इच्छा उठनाइ, जखन इच्छा नहेनाइ, जखन इच्छा खेनाइ-समयक कोनो हिसाब नहि। घरसँ निकलल तऽ निश्चित नहि जे ओही दिन वापस हो-कतहु कोनो दोस्तक ओहिठाम रहि गेल। नौकरी छुटलाक बाद परिवारकेँ सासुर राखि आएल अछि। ओहि दिन घरमे बेटियो नहि-एम.बी.ए.क प्रोजेक्ट वर्कक संदर्भमे मास-दू मास लेल बंगलोर गेल छलनि।

ओ दुनू व्यक्ति आ' हम बैसि कऽ गप्प कऽ रहल छलहुँ कि दिनेश बाबूकेँ बाथरूम जएबाक आवश्यकता बूझि पड़लनि। उठि कऽ गेलाह किंतु बाथरूमक गेटहि पर धड़ामसँ खसलाह। हम सभ दौड़लहुँ। बेहोश छलाह। कहुना कऽ दुनू गोटे मीलि बिछौने पर आनल, किंतु होश आपस नहि अएलनि। किछुए दूर पर क्रिस्टल हॉस्पिटल छैक-एम्बुलेंस बजा ओहिठाम भर्ती कराओल। संयोगसँ हमर ए.टी.एम. कार्ड संगमे छल जाहि द्वारा पचीस हजार टाका जमा कराओल। डॉक्टर कहलनि जे अधिक संभव ब्रेन हेमरेज भेलनि अछि। हुनक बेटाक फोन आउट ऑफ कवरेज एरिया। रमेशकेँ लगाओल, ओ कहलक जे चारि बजे तक पहुँचि जाएब। दू बाजि रहल छलैक। दिनेश बाबूकेँ आइ.सी.यू. मे लऽ गेलनि। हम स्वयं डायबेटिक। बेसी काल धरि भूखल रहब ठीक नहि। जँ हमरहि मोन गड़बड़ा गेल तऽ संकट अओर गहरा जाएत। ई सोचि हुनका कनियाँकेँ कहलिएनि जे हम कने' डेरासँ भेल अबैत छी। हुनका आँखिसँ निरन्तर नोर बहि रहल छलनि। अपन बैगसँ लालरंगक एक पोटरी हमरा दैत बजलीह-''जतबा आवश्यक बुझाए ततबा एहिमे सँ बेचि देबैक। अहाँकेँ तऽ सभटा बुझले अछि-अनका ककरा कहबैक?'' हम हुनका बहुत तरहेँ बुझबैत ओ पोटरी आपस केलिएनि।

डेरा जा कऽ आपस अएलहुँ तऽ देखल जे रमेश पत्नीक संग पहुँचल अछि। रमेशक कनियाँ हुनका पुछलथिन जे रातिमे कोना की व्यवस्था कएल जाए कि हठात्, अकचकाइत रमेश बाजि उठल-''बिसरि गेल छल। हमरा तऽ छौ बजे एक बहुत इम्पॉर्टेन्ट मीटिंग अछि। तेँ एखन हम जा रहल छी। तावत उमेश आ' शीलूकेँ कहुना खबरि कऽ दियौक। हम काल्हि फोन करैछी।'' आ धड़फड़ा कऽ चलि गेल। उमेशक फोन नहिए लागल। लेकिन शीलूकेँ खबरि भऽ चुकल छलैक, ओ काल्हि भोर धरि पहुँचि जाएत। कनेक शान्त भेल। रातिमे हमर पत्नी अस्पतालमे रहि गेलीह।

रातिमे दस बजे करीब हमरा अपन बेटी मधुसँ फोन पर गप्प भेल। ओकरा जखन समाचार कहलिऐक तऽ ओ आश्चर्यित होइत कहलक-''रमेश दुनू गोटएकेँ हम प्रसाद आइमैक्समे छौ बजे शो मे देखने छलिऐक, किन्तु शो खतम भेलाक बाद कतऽ बिला गेलैक, कत्तहु नहि देखलिऐक। असलमे आइ ओकरा सभक मैरेज एनिवर्सरी छैक-ओहिठाम सँ कोनो होटल गेल हएत।

भोरे सात बजे अस्पतालसँ फोन आएल जे किछुए काल पहिने दिनेश बाबू चलि बसलाह, किन्तु शीलू ओहि सँ पहिने पहुँचि चुकलि छल। मृतककेँ डेरा लऽ जाएल गेल आ' उमेशक खोज जोर-शोरसँ कएल गेल। दस बजे दिनमे ओ अनायासे घर पहुँचल तऽ देखलक हाल। थोड़ेक काल धरि खूब चिचिआएल जे हमरा बापकेँ ई समाज मिलि कऽ मारि देलक, हमरा खबरि तक नहि होमऽ देलक। फेर शांत भेल। जेना-तेना संध्याकाल धरि संस्कार भऽ गेलनि।

दोसर दिन दुपहर। जिज्ञासामे आएल किछु व्यक्ति बैसल छलथिन। ओही बीच दिनेश बाबूक कनियाँकेँ क फोन अएलनि-"काकी, अकस्मात् ई की भऽ गेलैक। हमरा तऽ आशा छल जे काका स्वस्थ भऽ जएताह, भगवानकेँ मंजूर नहि भेलनि। हम दस बजे करीब डेरा गेल रही, लेकिन अपार्टमेन्टक बाहरे पता लागि गेल जे चारि बजे साँझ धरि उठतैक। तैँ सोचल जे बीच में ऑफिसक काज सलटा लैत छी, फेर चारि बजे आएब। अन्दर गेलहुँ कारण फेर स्नान करऽ पड़ैत। साँझमे चारि बजे पहुँचलहुँ तऽ पता चलल जे लाश तऽ तीनिए बजे उठि लैक। ओमेश पर तत्त तामस उठल जे की कहू। लेकिन कऽ की सकैत छी? कोनो सहोदर तऽ अछि नहि-अछि तऽ खिर पितिऔत। ओना मोन कहलक जे एक बेर अन्दर जा कऽ हाजिरी दऽ आएबाक चाही लेकिन ठमकि गेलहुँ। ण ई जे अहाँक मोनमे होइत जे रमेश देरसँ एहि दुआरे आएल जे पित्तीकेँ कनहा नहि लगबऽ पड़ैक।"

व्याकरण

संधि

जखन दू अथवा दू सँ अधिक वर्णकेँ मिललासँ विकार उत्पन्न होइत अछि अर्थात् वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न त अछि आ एकटा नव वर्ण बनैत अछि, तखन एकरा व्याकरणक भाषामे संधि कहल जाइत अछि। -नव+अन्न=नवान्न, जगत्+गुरु=जगद्गुरु, मन:+रथ=मनोरथ आदि।

यद्यपि मैथिलीमे संधिक उदाहरण नहिएक बराबरि भेटैत अछि मुदा मैथिलीमे तत्सम शब्दक बेस प्रयोग होइत छ आ तत्सम शब्दसभमे संधिक प्रमुखता अछि तेँ सन्धिक ज्ञान आवश्यक।

<u>संधिक भेद</u>-संधि तीन प्रकारक होइत अछि-01.स्वर संधि 02. व्यञ्जन संधि आ, 03.विसर्ग संधि।

<u>स्वर संधि</u>-जखन स्वर वर्णक संग स्वर वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न होइत अछि तखन ओकरा स्वर संधि ल जाइत अछि। जेना-विद्या+आलय=विद्यालय, गण+ईश=गणेश, एक+एक=एकैक, यदि+अपि=यद्यपि, अन=नयन।

स्वर संधि पाँच प्रकारक होइत अछि- (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि एवं) अयादि संधि।

<u>ह्रस्व+ह्रस्व</u>	<u>ह्रस्व+दीर्घ</u>	<u>दीर्घ+ह्रस्व</u>	<u>दीर्घ+दीर्घ</u>
धर्म+अर्थी=धर्मार्थी	देव+आलय=देवालय	विद्या+अध्ययन=विद्याध्ययन	विद्या+आलय=विद्यालय
गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्र	मुनि+ईश=मुनीश	मही+इन्द्र=महीन्द्र	नदी+ईश=नदीश
भानु+उदय=भानूदय	लघु+ऊर्मि=लघूर्मि	वधू+उपस्थिति=वधूपस्थिति	वधू+ऊरू=वधूरू
पितृ+ऋण=पितृण			

(ख) <u>गुण संधि-एहि संधिमे</u> -अ' अथवा 'आ' क आगाँ -इ' अथवा 'ई' क रहला पर 'ए', 'उ' अथवा ऊ' क रहला पर 'ओ' आ 'ऋ' अथवा 'ॠ' क रहल पर 'अर्' भय जाइत अछि। जेना-

<u>अ/आ+इ/ई=ए</u>	<u>अ+आ+उ/ऊ=ओ</u>	<u>अ/आ+ऋ/ॠ=अर्</u>
गज+इन्द्र=गजेन्द्र	चन्द्र+उदय=चन्द्रोदय	सप्त+ऋषि=सप्तर्षि
महा+ईश=महेश	महा+ऊर्मि=महोर्मि	महा+ऋषि=महर्षि
सुर+इन्द्र=सुरेन्द्र	महा+उग्र=महोग्र	अधम+ऋण=अधमर्ण
देव+इच्छा=देवेच्छा	महा+उत्तम=महोत्तम	उत्तम+ऋण=उत्तमर्ण
परम+ईश्वर=परमेश्वर		
सर्व+ईश=सर्वेश		

(ग) वृद्धि संधि-एहि संधिमे 'अ' अथवा 'आ' क आगाँ 'ए' अथवा 'ऐ' क रहला पर 'ऐ' आ 'ओ' अथवा 'औ' क रहला पर 'औ' भय जाइत अछि। जेना-

अ/आ+ए/ऐ	अ/आ+ओ/औ
एक+एक-एकैक	जल+ओघ-जलौघ
सदा+एव-सदैव	वन+औषधि-वनौषधि
तथा+एव-तथैव	कुम्हड़+औड़ी-कुम्हड़ौड़ी
मत+ऐक्य-मतैक्य	मधुर+औषध-मधुरौषध
देव+ऐश्वर्य-देवैश्वर्य	बाल+औद्धत्य-बालौद्धत्य
सदा+ऐक्य-सदैक्य	विद्या+ओघ-विद्यौघ
महा+ऐश्वर्य-महैश्वर्य	महा+औषधि=महौषधि
	महा+औदार्य-महौदार्य

(घ) यण् सन्धि-यदि इ/ई, उ/ऊ/आ/ऋ/ॠ क आगाँ कोनो भिन्न स्वर आबय तँ इ/ई क 'य्', उ/ऊ क 'व' तथा ऋ/ॠ क 'र्' भय जाइत अछि। जेना-

इ/ई+भिन्न स्वर	उ/ऊ+भिन्न स्वर	ऋ/ॠ+भिन्न स्वर
प्रति+एक-प्रत्येक	अनु+अय-अन्वय	मातृ+आदेश=मात्रादेश
अभि+उदय-अभ्युदय	सु+आगत-स्वागत	मातृ+इका=मात्रिका
यदि+अपि=यद्यपि	अनु+इत-अन्वित	मातृ+ओज=मात्रोज
नदी+अम्बु=नद्यम्बु	मनु+अन्तर=मन्वन्तर	पितृ+औदार्य-पित्रौदार्य
देवी+आगमन=देव्यागमन	मधु+आलय=मध्वालय	भातृ+एव=भ्रात्रेव
नदी+आगम-नद्यागम	अनु+एषण-अन्वेषण	नेतृ+ऐक्य=नेत्रैक्य
	भू+आदि=भ्वादि	

(ङ) आयादि संधि-एहि संधिमे 'ए', 'ऐ' 'ओ', आ, 'औ' क आगाँ कोनो भिन्न स्वर रहय तँ 'ए' क 'अय्' 'ओ' क 'अव' तथा 'औ' क आव् भय जाइत अछि। जेना-

ए+भिन्न स्वर	ऐ+भिन्न स्वर	ओ+भिन्न स्वर	औ+भिन्न स्वर
चे+अन=चयन	नै+अक=नायक	भो+अन=भवन	पौ+अक=पावक
ने+अन-नयन	गै+अक=गायक	पो+अन=पवन	भौ+उक-भावुक
से+अन-सयन	दै+अक=दायक	पो+इत्र=पवित्र	द्यौ+एवे=द्यावेव

02. व्यञ्जन संधि-व्यञ्जन वर्णक संग स्वर अथवा व्यञ्जन वर्णक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न हो तँ व्यञ्जन धि होइत अछि। जेना- दिक्+अम्बर=दिगम्बर, वाक्+मय=वाङ्मय, शम्+कर=शंकर, उत्+लेख=उल्लेख, +रूप=तद्रूप।

नियम-01. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ कोनो वर्गक तेसर अथवा चारिम वर्ण (ग्, ज्, ड्, ब्, घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) अथवा कोनो स्वर वर्ण रहय तँ 'क्' क ग्,'च्' क 'ज्', 'ट्' क 'ड्', त् 'क' 'द्' 'आ' 'क 'ब्' भय जाइत अछि। जेना-

क्+भ्रान्त=दिग्भ्रान्त	अच्+अन्त=अजन्त	जगत्+आत्मा=जगदात्मा
क्+गज=दिग्गज	षट्+दर्शन=षड्दर्शन	कृत्+अन्त=कृदन्त
त्+औषधि=महदौषधि	जगत्+बन्धु=जगद्बन्धु	अप्+ज=अब्ज

नियम 02. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ न् अथवा म् आबय तँ क्रमशः 'क्' क 'ङ' ' क 'ञ्', 'ट्' क 'ण्', 'त्' क न् आ 'प्' 'क' 'म्' भय जाइत अछि। जेना-दिक्+नाग=दिङ्नाग, त्+मय=चिन्मय, षट्+मार्ग=षण्मार्ग, षट्+मास=षण्मास, उत्+नति=उन्नति, जगत्+नाथ=जगन्नाथ, अप्+मय=अम्मय।

नियम 03. 'म्' क आगाँ यदि कोनो व्यञ्जन वर्ण रहय तँ 'म्' क (ं) अनुस्वार भय जाइछ, आ जँ ओ ञ्जन जँ कोनो वर्गक रहय तँ ओ अपन वर्गक पंचम वर्ण सेहो भय जाइत अछि। जेना-सम्+गम=संगम/सङ्गम, म्+यम=संयम/किम्+चित्=किंचित्/किञ्चित्, अहम्+कार=अहंकार/अहङ्कार शम्+कर=शंकर/शङ्कर।

नियम 04. 'त्' क आगाँ यदि 'च्' अथवा 'छ्' आबय तँ 'त्' क 'च्', ज् अथवा 'झ्' आबय तँ 'त्' क 'ज्', ड्' अथवा 'ठ्' आबय तँ 'त्' क 'ट्', 'ड्' अथवा 'ढ्' आबय तँ 'त' 'ड्', 'ल्' आबय तँ क क 'त्' 'ल्', 'श्' ाबय तँ 'त्' क 'च्' आ 'श्' क स्थानमे 'छ्' तथा 'ह्' आबय तँ 'ह्' क 'ध' भय जाइत अछि। ना-सत्+चित्=सच्चित्, उत्+चारण=उच्चारण, महत्+छिद्र=महच्छिद्र, उत्+ज्वल=उज्वल, उत्+झट्=उज्झट, त्+ठक्कुर=सट्टक्कुर, तत्+टिका=तट्टिका, उत+छिन्न=उच्छिन्न, उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट, महत्+शिला=महच्छिला, त्+श्वास=उच्छ्वास, उत्+श्रृंखल=उच्छृंखल, उत्+हार=उद्धार, तत्+हित=तद्धित।

नियम 05. 'त्' क आगाँ यदि कोनो स्वर वर्ण अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र् अथवा व् रहय तँ 'त्' क द्' भय जाइत अछि। जेना-जगत्+आनन्द=जगदानन्द, उत्+गम=उद्गम, उत्+घाटन=उद्घाटन, उत्+दाम=उद्दाम, त्+भव=उद्भव, उत्+योग=उद्योग, तत्+रूप=तद्रूप, वृहत्+वर्णन=वृहद्वर्णन, सत्+वंश=सद्वंश।

नियम 06. 'ऋ', 'र' अथवा 'ष' क आगाँ यदि 'न' रहय आ एहि मध्य कोनो स्वर, कवर्ग, पवर्ग अथवा य', 'व' अथवा ह रहय तँ 'न' क 'ण' भय जाइत अछि। जेना-भूष्+अन=भूषण, परि+नाम=परिणाम, म+अयन=रामायण, परि+मान=परिमाण, प्र+माण=प्रमाण चान्द्र+अयन=चान्द्रायण।

नियम 07, यदि कोनो शब्दक अन्तमे 'अ' अथवा 'आ' कँ छोड़िकऽ कोनो स्वर वर्ण आ ओकरा आगाँ 'स' रहय तँ 'स' क 'ष' आ 'स्थ' रहय तँ 'ष्ठ' भय जाइत अछि। जेना-वि+सम=विषम, वि+साद=विषाद, युधि+स्थिर=युधिष्ठिर, सु+समा=सुषमा, अभि+सेक=अभिषेक, अभि+सिक्त=अभिषिक्त आदि।

03. विसर्ग संधि-विसर्ग (:) क संग स्वर अथवा व्यञ्जनक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न होइत अदि तँ ओ भेल विसर्ग संधि। जेना-मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित, नि:+कारण=निष्कारण, नि:+रव=नीरव आदि।

नियम 01, विसर्ग (:) क आगाँ 'च्' अथवा 'छ्' क रहला पर (:) विसर्गक 'श्', 'ट्' अथवा 'ठ्' क रहला पर 'ष्' आ 'त्' अथवा 'थ्' क रहलापर 'स्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+चय=निश्चय, नि:+छल=निश्छल, धनु:+टंकार=धनुष्टंकार, हरि:+ठक्कुर=हरिष्ठक्कुर, नि:+तार=निस्तार, दु:+स्थल=दुस्थल आदि।

नियम 02, विसर्ग (:) क पूर्व इकार अथवा उकार रहय आ आगाँ क्, ख्, प्, अथवा फ् रहय तँ विसर्गक 'ष्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+कपट=निष्कपट, दु:+कर=दुष्कर, नि:+कारण=निष्कारण, आवि:+कार=आविष्कार, चतु:+कोण=चतुष्कोण, नि:+खलन=निष्खलन, नि:+पाप=निष्पाप, नि:+प्राण=निष्प्राण, नि:+फल=निष्फल।

नियम 03, विसर्ग (:)क पहिने कोनो ह्रस्व स्वर रहय आ आगाँ 'र्' रहय तँ विसर्गक लोप भय जाइत अछि आ पूर्वक ह्रस्व स्वर दीर्घ भय जाइत अछि। जेना-नि:+रोग=नीरोग, नि:+रस=नीरस, दु:+राज=दूराज, पुन:+रमण=पुनारमण।

नियम 04, यदि विसर्ग (:) क पूर्व 'अ' अथवा 'आ' क छोड़िकऽ कोनो आन स्वर रहय आ आगाँ कोनो स्वर अथवा वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम (ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध,भ, ङ, ञ, ण, न, म) वर्ण (य, र, ल, व् अथवा ह् आबय तँ विसर्गक 'र्' भय जाइत अछि। जेना- नि:+अर्थक=निरर्थक, नि:+आपद=निरापद, नि:+आकार=निराकार, नि:+ईश्वर=निरीश्वर, नि:+उपाय=निरूपाय, नि:+गुण=निर्गुण, नि:+जल=निर्जल, नि:+झर=निर्झर, नि:+बल=निर्बल, नि:+मल=निर्मल, नि:+विकार=निर्विकार, दु:+बल=दुर्बल, दु:+जन=दुर्जन, दु:+गन्ध=दुर्गन्ध, बहि:+मुख=बहिर्मुख आदि।

नियम 05-यदि विसर्ग:क पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम वर्ण अथवा य, र, ल, व , ह आबय तँ पूर्वक 'अ', आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत अछि। जेना-उर:+ज=उरोज, मन:+ज=मनोज, सर:+ज=सरोज, यश:+दा=यशोदा, पय:+धर=पयोधर, मन:+नयन=मनोयन, मन:+भाव=मनोभाव, तप:+मय=तपोमय, मन:+योग=मनोयोग, मन:+रथ=मनोरथ, यश:+लाभ=यशोलाभ, मन:+विकार=मनोविकार, मन:+वांछित=मनोवांछित, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित आदि।

नियम-06, यदि विसर्गक पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ 'अ' आबय तँ पहिल 'अ' आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत छ आ आगाँक 'अ' क लोप भय जाइत अछि परन्तु ओकर लुप्त होयबाक चिह्न (ऽ) भय जाइत अछि। -स:+अहम्=सोऽहम्, नव:+अङ्कुर=नवोऽङ्कुर, मन:+अभिलाषा=मनोऽभिलाषा, मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल।

परन्तु आगाँ वला 'अ' क स्थान पर कोनो आन स्वर आओत तँ विसर्ग क लोप भय जाइत अछि। -अत:+एव=अतएव, यश:+इच्छा=यशइच्छा।

□□□

कारक

जे क्रियाक उत्पतिमे सहायक हो, ओ कारक कहबैत अछि। जेना-छात्र पुस्तक पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक उत्पतिमे 'छात्र' आ 'पुस्तक' सहायक अछि। एहि दुनूक अभावमे 'पढ़ब' क्रिया नहि भऽ सकैत अछि। तेँ 'छात्र' आ 'पुस्तक' क ई रूप कारक कहबैत अछि।

कारकक आठ भेद होइत अछि-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आ सम्बोधन।

<u>(i) कर्त्ताकारक-</u>जे काज (क्रिया) केँ करैत अछि से कर्त्ता कहबैत अछि। जेना-'राजू' पढ़ैत अछि। वाक्यमे 'पढ़बाक' काज (पढ़बक्रिया) केँ 'राजू' करैत अछि। तेँ 'राजू' एहि वाक्यक कर्त्ता भेल। मैथिलीमे कर्त्ता कारकक कोनो चिह्न नहि होइत अछि।

<u>(ii) कर्मकारक-</u>क्रियाक फल जाहि शब्द पर पड़ैत अदि अर्थात् क्रिया कयलासँ जे शब्द प्रभावित हो ओ कर्मकारक होइत अछि। जेना-राम आम खाइत अछि। एहि वाक्यमे रामक 'खायब' क्रिया करबाक प्रभाव 'आम' पर पड़ैत अछि अर्थात् 'आमक' नोकसान होइत छै। तेँ 'आम' मे कर्मकारक भेल। एकर चेन्ह अछि-0, काँ, केँ आ के।

<u>(iii) करण कारक-</u>क्रियाक सम्पादनमे कर्त्ताक जे सहायक हो अर्थात् क्रिया सम्पादनक साधन हो ओ करणकारक होइत अछि। दोसर शब्दमे कर्त्ता जाहि साधनसँ क्रिया करय से करणकारक होइत अछि। जेना-शिक्षक चाँकसँ श्यामपट पर लिखैत छथि। एह वाक्यमे शिक्षक (कर्त्ता) क लिखबाक साधन छनि 'चाँक'। ओ चाँकसँ लिखैत छथि। तेँ चाँकमे करण कारक अछि। करणकारकक चेन्ह अछि-सँ।

<u>(iv) सम्प्रदान कारक-</u>जाहि हेतु क्रिया कयल जाइत अछि से सम्प्रदान कारक होइत अछि। जेना-सोहन मोहनक लेल मोदक आनलक अछि। एहि वाक्यमे 'सोहन' मोदक आनबाक क्रिया 'मोहनक' लेल करैत अछि। तेँ 'मोहन' सम्प्रदान कारक भेल। एकर चेन्ह अछि-केँ, लेल, हेतु आदि।

<u>(v) अपादान कारक-</u>जाहि शब्दसँ अलगाब अर्थात् अलग होयबाक बोध हो से अपादान कारक होइत अछि। जेना-गाछसँ पात खसैत अछि। एहि वाक्यमे 'गाछसँ' पात अलग भऽ रहल अछि। तेँ ई 'गाछ' भेल अपादान कारक। एकर चेन्ह अछि-सँ।

<u>(vi) सम्बन्ध कारक-</u>जाहि शब्दसँ कर्त्ता अथवा आन कोनो कारकक सम्बन्धक बोध हो से सम्बन्ध कारक होइत अछि। जेना-जनक मिथिलाक राजा छलाह। एहि वाक्यमे 'मिथिलासँ' जनकक सम्बन्धक बोध होइत अछि। तेँ मिथिला भेल सम्बन्ध कारक। एकर चेन्ह अछि-क आ केर।

(vii) अधिकरण कारक-जे शब्द क्रियाक आधार रहैत अछि ओ अधिकरण कारक होइत अछि। जेना-छात्र विद्यालयमे पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक होयबाक आधार अछि-विद्यालय, तैं विद्यालय अधिकरण कारक भेल। एकर चेन्ह अछि-मे आ पर।

(viii) सम्बोधन कारक-जाहि शब्दकेँ क्रियाक सम्पादन हेतु सम्बोधित कयल जाइत अछि से सम्बोधन कारक होइत अछि। जेना- हे छात्र! अहाँ मोनसँ पढ़ू। एतय 'पढ़ब' क्रियाक सम्पादन हेतु 'छात्रकेँ' सम्बोधित कयल जाइत अछि। तैं 'छात्र' भेल सम्बोधन कारक। एकर चेन्ह अछि-हे, हो, अरे, रे, रौ, हओ, हरौ, रओ आदि।

क्रिया

जाहि शब्दसँ कोनो कार्य अथवा व्यापारक होयब अथवा करब आदिक बोध होइत अछि से क्रिया कहबैत अछि। जेना-राम पढ़ैछ, श्याम गीत सुनैछ, गीता गीत गबैछ, मोहन दौड़ैछ। एतय 'पढ़ैछ', 'सुनैछ', 'गबैछ', आ 'दौड़ैछ' शब्दसँ क्रमशः पढ़ैछसँ पढ़बाक, सुनैछसँ सुनबाक आ गबैछसँ गैबाक कार्यक बोध होइत अछि तेँ ई सभ क्रिया अछि।

क्रियाक मुख्य दू भेद अछि-सकर्मक आ अकर्मक।

01. सकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर नहि पड़ि आन कोनो संज्ञापर पड़य से सकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-बटुक पत्र लिखलनि। एहि वाक्यमे' लिखलनि' क्रियाक फल कर्त्ता बटुक पर नहि पड़ि 'पत्र' पर पड़ैत अछि तेँ ई सकर्मक क्रिया भेल।

02. अकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर पड़य से अकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-सोहन हँसैछ, राधा नचैछ, हर्ष अबैछ। एतय-'हँसैछ' 'नचैछ' आ 'अबैछ' क्रियाक फल क्रमशः कर्त्ता सोहन, राधा आ हर्ष पर पड़ैत अछि तेँ ई सभ भेल अकर्मक क्रिया।

क्रियाक विशेष भेद-क्रियाक सातटा विशेष भेद अछि :-

(i) विधि क्रिया-जाहि क्रियासँ 'आज्ञा' अथवा 'विनयक' बोध हो, से विधि क्रिया होइत अछि। जेना-बैसु, आयल जाउ, आउ।

(ii) कामनात्मक क्रिया-जाहि शब्दसँ कहनिहारक मनोकामना प्रकट हो, से कामनात्मक क्रिया होइत अछि। जेना-ओ शीघ्र स्वस्थ होथु, कुशल रहथि, दीर्घायु होउ।

(iii) प्रेरणार्थक क्रिया-जाहि क्रियासँ एक व्यक्ति दोसरकेँ कार्य करबाक हेतु प्रेरित करैत अछि से प्रेरणार्थक क्रिया होइत अछि। जेना-शिक्षक छात्रसँ पाठ पढ़बा रहल छथि। मालिक नौकरसँ पानि भरबा रहल छथि। एतय 'पढ़बा रहल छथि,' भरबा रहल छथि।' प्रेरणार्थक क्रिया अछि।

(iv) पूर्वकालिक क्रिया-जँ एक वाक्यमे दू क्रियाक बोध हो, तँ पहिल क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहबैत अछि। जेना-राजु खाकऽ पढ़ैत अछि। एतय राजु पहिने खयलक अछि तकर बाद पढ़ब आरंभ कयल अछि। तेँ एहि वाक्यमे पहिल क्रिया 'खायब' पूर्वकालिक क्रिया भेल।

(v) संयुक्त क्रिया-जँ दू अथवा दू सँ बेसी क्रिया मिलिकऽ वाक्यमे एकहि अर्थक बोध करबैत अछि तँ ओ संयुक्त क्रिया कहबैत अछि। जेना-ओतहि अहाँ पोथी पढ़ि लेब। ओ घर चलि गेलाह। एतय 'पढ़ि लेब' आ 'चलि गेल' संयुक्त क्रिया थीक।

(vi) सहायिका क्रिया-जे क्रियाक व्यापारमे आन क्रियाक सहायता करय से 'सहायिका क्रिया' होइत अछि। ना-पंडित जी कथा कहि रहल छथि। हम लेख लिखैत छी। एतय 'छथि' आ ''छी' क्रिया क्रमशः कहब आ लिखब' क्रियाक व्यापारमे सहायक अछि तैं ई सहायिका क्रिया भेल।

(vii) नामधातु-नाम अर्थात् संज्ञा अथवा विशेषणसँ 'आएब' अथवा 'एब' प्रत्यय लगाकऽ जे धातु (क्रियाक ल रूप) बनैत अछि से नामधातु होइत अछि। जेना-रामू पोथी हथिया लेलाह। गोनू गायकेँ एकहि ठाम खूटेसने अछि। एतय-'हथियाब' आ 'खूटेसने' छथि नाम धातु अछि।

प्रयोगक दृष्टिसँ क्रिया दू प्रकार होइत अछि-मुख्य क्रिया आ गौण क्रिया।

(क) मुख्य क्रिया-जे क्रिया व्यापारक बोध कराबय से मुख्य क्रिया होइत अछि। जेना-छात्रलोकनि अपन ठ पढ़ैत छलाहँ। एतय 'पढ़ैत' क्रिया पढ़ब रूप व्यापारक बोध करबैत अछि तैं ई मुख्य क्रिया भेल।

(ख) गौण क्रिया-जे क्रिया वाक्यक मुख्य क्रियाक व्यापारक अर्थकेँ स्पष्ट करयसे गौण क्रिया कहबैत अछि। एहि क्रियासँ मात्र भूत, भविष्य आ वर्तमानक बोध होइत अछि। जेना-श्याम गीत गाबि रहल अछि। मोहन रटैत ल्लाह। 'रहल छथि' आ 'छलाह' गौण क्रिया अछि।

काल

काल-क्रियाक सम्पादन (करबा) मे जे समय लगैत अछि, ओकरा 'काल' कहल जाइत छै। जेना-सुमन विद्यालय गेल; सौरभ पढ़ैत अछि; श्याम काल्हि आओत। एतय 'गेल', 'पढ़ैत अछि; आ 'आओत' क्रियासँ क्रमशः बीतल, वर्त्तमान आ आबयबला समयमे क्रियाक होएबाक सूचना भेटैत अछि। इएह समय थीक-काल। एतय तीनू क्रियाक सम्पादनक तीन समय अछि। ई तीन कालक बोधक अछि। सभ क्रिया इएह तीन कालमे होइत अछि।

<u>कालक भेद-कालक तीन भेद अछि-</u>भूत, वर्त्तमान आ भविष्य।

<u>01. भूतकाल-</u>जँ क्रिया सम्पादनक समय बीत गेल रहैत अछि तँ ओ क्रिया भूत कालक होइत अछि। जेना-मनोज पोथी पढ़लाह। एतय 'पढ़लाह' क्रियासँ बोध होइत अछि जे मनोजक पढ़बाक क्रिया समाप्त भऽ गेल छनि आ ओकर समय बीत गेल छै। तँ एतय 'पढ़ब' क्रिया भूत कालक भेल।

<u>भूतकालक चारि उपभेद अछि-</u>(i) सामान्यभूत (ii) अपूर्ण भूत (iii) पूर्णभूत (iv) तात्कालिक भूत

<u>(i) सामान्य भूतकाल-</u>श्याम गेलाह/मोहन पढ़लाह/हम खयलहुँ आदि।

<u>(ii) अपूर्ण भूतकाल-</u>राजू पढ़ैत छलाह। गजेन्द्र पानि पिबैत छलाह।

<u>(iii) पूर्ण भूत काल-</u>गोनू स्कूल गेल छल। सोनू चल गेल छल आदि।

<u>(iv) तात्कालिक भूतकाल-</u>पंडित जी पतड़ा बाँचि रहल छलाह। राम हँसैत छल। अहाँ गाम जाइत छलहुँ/हम सुतल छलहुँ/राम हँसैत छल आदि।

<u>02. वर्त्तमान काल-</u>जँ क्रिया सम्पादन (करबाक) क समय उपस्थित (वर्त्तमान) रहैत अछि तँ ओ भेल-वर्त्तमान काल। जेना-गीता गीत गाबैत अछि। हम विद्यालय जाइत छी। तों हँसैत छें आदि।

<u>वर्त्तमान कालक चारिटा उपभेद होइत अछि-</u>

<u>(i) सामान्य वर्त्तमानकाल-</u>हम पढ़ै छी। तों जाइत छह। ओ कहैत छथि। श्याम गीत सुनैत अछि। सीता हँसैत अछि आदि।

<u>(ii) अपूर्ण वर्त्तमानकाल-</u> हम पढ़ि रहल छी। ओ खा रहल छथि।

<u>(iii) पूर्ण वर्त्तमानकाल-</u> हम ई पोथी पढ़ि गेल छी। तों पानि पिबि लेने छह। रमेश आबि चुकल अछि। दिनेश चलि गेल अछि।

<u>(iv) तात्कालिक वर्त्तमान-</u>नरेश स्नान करैत अछि। महेश घरसँ चलैत अछि।

03. भविष्यत् काल-जँ क्रिया सम्पादनक समय अयनिहार समय हो, तँ क्रियाक समय भविष्यत् काल हबैत अछि। जेना-धनेश मेला जइताह। हम सब कथा सुनब। तौं पढ़बह आदि।

(i) सामान्य भविष्यत् काल- सीता सीनेमा देखतीह। हमसब गाम जायब। रीता पढ़त, अन्नु बाजार जायत।

(ii) अपूर्ण भविष्यत् काल-रमेश जाइत रहत। उमेश खाइत रहत। हर्ष सुनैत रहत। मधु गाबैत रहत।

(iii) पूर्ण भविष्यत् काल-मोनू खयने रहत। धर्मेन्द्र गाम चलि गेल रहत। रानी पोथी पढ़ि गेल रहत।

समास

दू वा दूसँ अधिक पदकेँ अपन-अपन विभक्तिकेँ छोड़िकऽ आपसमे मिलब अर्थात् एक पद बनि जायब समास थीक आ बनल शब्द समस्त पद कहबैत अछि। जेना-राजेन्द्र, गंगाजल, विद्यापति, त्रिवेणी, अनाथ, दहीचूड़ाचीनी, तुलसीचौड़ा, नीलोत्पल, पीताम्बर आदि।

समस्त पदकेँ अलग-अलग करब विग्रह कहबैत अछि। जेना-राजासभक इन्द्र, गंगाक जल, विद्याक पति, नहि नाथ, दही, चूड़ा आ चीनी, तुलसीक चौड़ा, नील उत्पल, पीत छनि अम्बर जनिक अर्थात् विष्णु आदि।

<u>समासक भेद</u>-समासक मुख्य भेद सात अछि-

1. अव्ययीभाव, 2. तत्पुरुष, 3. कर्मधारय, 4. द्विगु, 5. द्वन्द्व, 6. बहुव्रीहि आ 7. नञ्।

<u>01. अव्ययीभाव समास</u>-जाहि समस्तपदक पहिल पद अव्यय रहैत अछि आ ओकरे अर्थक प्रधानता रहैत अछि तँ ओ अव्ययीभाव समास होइत अछि। एहि समस्तपदक प्रयोग अव्यये सदृश होइत अछि। जेना- यथार्थ, अर्थक अनुसार, यथाशक्ति-शक्तिक अनुसार, दुर्भिक्ष-भिक्षाक अभाव, निर्विघ्न-निर्विघ्न अभाव, आसमुद्र-समुद्र पर्यन्त, अनुक्रम-क्रमक पश्चात्, अनुग्रह-ग्रहक पश्चात्, उपग्रह-ग्रहक समीप, उपमंत्री-मंत्रीक समीप, अनुरूप-रूपक योग्य, प्रतिदिन-दिन-दिन, बारंबार-बेर-बेर।

<u>02. तत्पुरुष समास</u>-जाहि समस्त पदक उत्तर पद (अन्तिमपद), प्रधान रहैत अछि ओ तत्पुरुष समास होइत अछि। जेना-पनिघट-पानिक घाट, पाठशाला-पाठक हेतु शाला, पॉकेटमार-पॉकेटकेँ मारऽबला, युधिष्ठिर-युद्धमे स्थिर आदि।

<u>तत्पुरुष समासक छः उपभेद होइत अछि</u>-(i) द्वितीया (ii) तृतीया (iii) चतुर्थी (iv) पञ्चमी (v) षष्ठी (vi) सप्तमी

(i) <u>द्वितीया (कर्म) तत्पुरुष-गोपाल</u>-गायकेँ पालनिहार, भिखमंगा-भिख माँगनिहार, आँखिफोरबा-आँखिकेँ फोरनिहार आदि।

(ii) तृतीया (करण) तत्पुरुष- कष्टसाध्य-कष्टसँ साध्य, मदमत्त-मदसँ मत्त (मातल), शोकाकुल-शोकसँ आकुल, बाणविद्ध-बाणसँ बिद्ध आदि।

(iii) चतुर्थी (सम्प्रदान) तत्पुरुष-तपोवन-तपक लेल बन, बटखर्चा-बाटक लेल खर्चा, हथकड़ी-हाथक लेल कड़ी, पैजेब-पैरक लेल जेबर।

(iv) पञ्चमी (अपादान) तत्पुरुष- ऋणमुक्त-ऋणसँ मुक्त, गुणहीन-गुणसँ हीन,धर्मच्युत-धर्मसँ च्युत, ातिभ्रष्ट-जातिसँ भ्रष्ट आदि।

(v) षष्ठी (सम्बन्ध) तत्पुरुष-बेलपत्र-बेलक पत्र (पात), मनोयोग-मनक योग, सुधासिन्धु-सुधाक सिन्धु, गराज-मृगक राजा आदि।

(vi) सप्तमी (अधिकरण) तत्पुरुष-घरघुस्सा-घरमे घुसय बला, घरपैसा-घरमे पैसयबला, नवीर-दानकरयमे वीर, कर्मवीर-कर्म करयमे वीर आदि।

03. कर्मधारय समास- जाहि समस्त पदक पहिल विशेषण आ उत्तरपद विशेष्य (उपमा उपमेय) हो ओ र्मधारय समास होइत अछि। जेना-कमलनयन-कमल सदृश नयन, नीलकमल-नीला कमल, मुखकमल-कमलक मान मुख, व्याघ्र पुरूष-व्याघ्र सदृश पुरुष, चरणकमल-चरणरूपी कमल आदि।

04. द्विगु समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद संख्यावाचक रहैत अछि ओ द्विगु समास होइत अछि। ना-त्रिलोकी-तीन लोकक समूह, त्रिभुवन-तीन भुवनक समूह, पंचवटी-पाँच बाटक समूह, चतुर्भुज-चारि भुजाक मूह, षट्कोण-षट् (छः) कोणक समूह, त्रिनेत्र-तीन नेत्रक समूह।

05. द्वन्द्व समास-जाहि समस्त पदक दुनू पद प्रधान होइत अछि ओ द्वन्द्व समास होइत अछि। ना-दालिभात-दालि आ भात, पोथीपतड़ा-पोथी आ पतड़ा, लोटाडोरी-लोटा आ डोरी, हाथीघोड़ा-हाथी आ घोड़ा, ीताराम-सीता आ राम, पाणिपाद-पाणि आ पाद आदि।

06. बहुव्रीहि समास-जाहि समस्तपदक कोनो खण्डक अर्थक प्रधानता नहि भऽ अन्य (तेसर) अर्थक धानता हो से बहुव्रीहि समास होइत अछि। जेना-हथटुट्टा-हाथ टूटल हो जकर से, एकमुहा-एक मुह छै जाहि घरक , कनकट्टा-कान कटल छै जकर से, लम्बोदर-लम्बा छनि उदर जनिकर ओ (गणेश), पञ्चानन-पाँच आनन छनि निका ओ (शिव जी), दशमुख-दशमुख छनि जिनका से (रावण), षडानन्न-षट् आनन छनि जिनका ओ कार्तिकेय) आदि।

07. नञ् समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद नकारात्मक रहैत अछि, ओ नञ् समास होइत अछि। ना-अनेक न-एक, अद्वितीय-न द्वितीय, अजुबा- न जुबा, अनचिन्हार-नहि चिन्हार, अनहोनी-नहि होनी, अयोग्य-न ोग्य, अदृश्य-न दृश्य, अनजान-नहि जानल आदि।

□□□

मुहावरा

मुहावरा ओ वाक्यांश अछि जे अपन सामान्य अर्थकेँ छोड़ि कोनहु विशेष अर्थक बोध करबैत अछि। एकरा वाग्धारा सेहो कहल जाइत अछि। जेना-पानि-पानि होयब, पाला पड़ब आदि।

एकर प्रयोगसँ भाषा रोचक, ललित, प्रौढ़ आ परिमार्जित होइत अछि। मुहावरा असंख्य अछि। व्यवहारमे अपनिहार मुख्य मुहावरा आगाँ देल जा रहल अछि।

1. **अगिया बेताल** (साहसी)-काज करबामे गणेश अगिया बेताल अछि।
2. **अटकलबाजी** (अन्दाज)-परीक्षामे अटकलबाजीसँ काज नहि चलै छै।
3. **अड्डा जमायब** (जमा होयब)-चोर पायाक काते कात अड्डा जमा लेलक।
4. **अपन सन मुह होयब** (लज्जायब)-परीक्षामे असफल भेलापर छात्रकेँ अपनासन मुह भऽ गेलनि।
5. **आकाश पताल एक करब** (कठिन परिश्रम करब)-परीक्षामे सफलताक लेल रामू आकाश पताल एक कऽ देलक।
6. **अन्हेर नगरी** (न्याय शून्य स्थान)-ई गाम अन्हेर नगरी भऽ गेल अछि।
7. **औंठा देखायब** (धोका पर धोखा देब)-सुमनसँ बचिकऽ रहु ओ औंठा देखायब खूब जनैत अछि।
8. **आंगुर उठायब** (बदनाम करब)- आइ राजनेता पर केओ आंगुर उठा दैत अछि।
9. **करेज फाटब** (ईर्ष्या होयब)-श्याम मोटर की किनलक ओकरा पड़ोसी सभक करेजा फाटऽ लगलै।
10. **पाँचो आंगुर घीमे होयब** (लाभमे रहब)-एखन ठीकेदार सभक पाँचो आंगुर घीमे अछि।
11. **करेजा पर साँप लोटब** (दोसरक उन्नति देखि कऽ जरब)- रामक राज्याभिषेकक खबरि सुनि मंथराक करेजापर साँप लोटऽ लगलै।
12. **करेजापर पाथर राखब** (दिल मजगूत करब)-विभीषणक विमुखता पर रावण अपना करेजापर पाथर राखि लेलनि।
13. **कान काटब** (मात करब)-कर्पूरी ठाकुर आँकड़ा प्रस्तुत करबामे सभक कान काटैत छलाह।

14. **कान फूकब** (बहकायब)–मंथरा कैकेयीकेँ कान फुकि देने छलीह।

15. **गरा लगायब** (प्रेम करब)–हम सभ जाति-पाति बिसरिकऽ सभकेँ गरा लगबि एहीमे सभक भल' अछि।

16. **चेहरा पर हवाइ उड़ब** (घबरायब)–पुलिसकेँ देखि चोरक चेहरा पर हवाइ उड़ि गेलै।

17. **जान पर खेलब** (वीरताक परिचय देब)–कारगिल युद्धमे भारतीय जवान जान पर खेलकऽ भारतक लाज बचौलक।

18. **लोहा लेब** (मुकाबला करब)– कर्णसँ केओ लोहा लेबऽ नहि चाहैत छलै।

19. **आँखिमे पानि नहि रहब** (लाज नहि होयब)–कृतघ्नक आँखिमे पानि नहि रहैत छै।

20. **कान ऐंठब** (गलत नहि करबाक प्रतीज्ञा करब)–आब हम कान ऐंठैत छी जे कहियो एहन काज फेर करी।

21. **दाँत निपोरब** (गिड़गिड़ायब)–राजू दाँत निपोरऽ लागल तऽ दस टाका दऽ देलियै।

22. **अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारब** (अपन अपकार करब) राम बाप पर मुकदमका कऽ अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारलक।

23. **अरण्य रोदन करब** (व्यर्थ कानब) आइ-काल्हि प्राय: अधिकारीक आगाँ अपन फरियाद करब अरण्य रोदन सिद्ध होइत अछि।

24. **अस्सी मोन पानि पड़ब** (हतोत्साहित होयब) परीक्षाक नाम सुनितहि गोनू पर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छै।

25. **अंत पायब** (थाह पायब) ईश्वरक अंत पायब सर्वथा असंभव अछि।

26. **आँचर पसारब** (भीख माँगब) प्राय: सभ माय अपन पुत्रक कल्याण हेतु भगवतीक आगाँ आँचर पसारैत अछि।

27. **आगि होयब** (क्रुद्ध होयब) विदुरक नीतिपूर्ण वचन सुनि दुर्योधन आगि भऽ जाइत छल।

28. **आगिमे घी ढारब** (क्रोध बढ़ायब) राम परशुरामक सम्वादमे लक्ष्मणक व्यंगपूर्ण बात आगिमे घी ढारि दैत छल।

29. **आन्हरक ठेङा** (असहायक सहायक) आइ-काल्हि विरले आन्हरक ठेङा होइत छथि नहि तऽ प्राय: सभ सबलेक बल प्रदान करैत छथि।

30. **आकाश टूटब** (अकस्मात् विपत्ति आयब) पिताक मृत्युक समाचार सुनितहि अजय पर आकाश टूटि पड़लै।

31. **उठान हारब** (निर्बल होयब) एहि बूढ़ बड़दक कोन आशा, ई तऽ अपनहि उठान हारि देलक अछि।

32. **उड़ल चिड़ैक चिन्हब** (दोसरक मनक बात बुझब) भोनू! ठकह नहि, हम उड़ल चिड़ैक चिन्हैत छी।

33. **उन्टे गंगा बहायब** (विपरीत काज करब) व्यक्तिकेँ बिनु सुधारनहि समाजकेँ सुधारब उन्टे गंगा बहायब थीक।

34. **कलम तोड़िकऽ लिखब** (खूब नीक लिखब) गुञ्जन एहि परीक्षामे तऽ कलम तोड़िकऽ लिखलक।

35. **किताबी कीड़ा बनब** (हरदम पढ़ैत रहब) किताबी कीड़ा बनलासँ बुद्धिक विकास नहि होइत अछि।

36. **कुम्हर बतिया** (अशक्त) राहुल कुम्हरबतिया नहि अछि जे सोनुक धमकीसँ डरि जायत।

37. **कोड़ो गनब** (व्यर्थ समय बितायब) रमेशक परीक्षा समाप्त भऽ गेलैक अछि, कोनो काज-धन्धा तऽ छै नहि कोड़ो गनि रहल अछि।

38. **कोल्हुक बड़द** (सदिखन काज करनिहार) धर्मी कोल्हुक बड़द छथि एको क्षण विश्राम नहि।

39. **कौड़ीक तीन होयब** (तुच्छ होयब) आइ-काल्हि गरीबक नीको वचन कौड़ीक तीन भऽ जाइत अछि।

40. **खाक छानब** (भटकब) नौकरीक वास्ते दीनलाल कतय-कतयक खाक नहि छानलनि मुदा एखनहु सफलता नहि भेटलनि अछि।

41. **गाराँक धेघ होयब** (भार होयब) जँ पुत कपुत भऽ जाय तँ ओ बापक लेल गाराँक धेघे भऽ जाइत छै।

42. **गोटी लाल करब** (काज सुतारब) गोविन्द बाबू अपन गोटी लाल कऽ कऽ निश्चिंत भऽ गेलाह।

46. गोबर गणेश (मंदबुद्धि) गोनू महागोबर गणेश अछि।

44. चर्खी औंटब (व्यर्थ बाजब) चानो दाइ भरि दिन चर्खी औंटैत रहैत छथि।

45. चानीक जूता (घूसक राशि) जँ अनुचित लाभ उठयबाक हो तँ अधिकारीकेँ चानीक जूतासँ पूजा करू।

46. चारूनाल चीत करब (पराजित होयब) सोनु मोनुकेँ चारू नाल चित कऽ देलक।

47. चुल्हाक भाँड़मे जायब (नष्ट होयब) छविनाथक धन चुल्हाक भाँड़मे जानि ओहिसँ हमरा की?

48. टाँग अड़ायब (बाधा देब) मूलचन कोनो सामाजिक काजमे अनेरहुँ टाँग अड़ा दैत छथि।

49. टाँग मोड़ब (विश्राम करब) संजय! कनि टाँग मोड़ि लेह आ घर चलि जइहेँ।

50. ढोल पीटब (प्रचार करब) आइ काल्हि सभै पार्टी बला अपन-अपन प्रशंसा में ढोल पीटि रहल अछि।

51. दुतियाक चान (बहुत दिनपर दर्शन देब) कमलाकान्त आइकाल्हि दुतियाक चान भऽ गेलछथि।

लोकोक्ति

लोकक उक्ति (कहब) कें लोकोक्ति कहल जाइत अछि। लोक माने आम (सर्वसाधारण) लोक। आमलोकक जे उक्ति कालक विभिन्न खण्डक विभिन्न परिस्थितिमे अपन अर्थक सार्थकता सिद्ध करैत लोकक द्वारा अपन वाक्‌व्यवहारमे प्रस्तुत होइत आबि रहल अछि से उक्ति भेल-'लोकोक्ति'। लोकोक्तिक अर्थक सार्थकताक ई चमत्कार अछि जे ई युग-युगसँ मात्र लोकेवाणीमे प्रयुक्त नहि होइत अछि, अपितु एकर प्रयोग साहित्योमे अर्थ गाम्भीर्य, भाषाक सौंदर्य आ विशेष अर्थक द्योतन हेतु होइत आबि रहल अछि। एकर एकहु शब्दकें बदलल अथवा एमहरसँ ओमहर नहि कयल जा सकैत अछि। एकर संख्या असंख्य अछि। प्रतिदिन लोक जीवनमे प्रयुक्त किछु मुख्य लोकोक्तिकें नीचाँ देल जा रहल अछि।

1. **अकुलिनि बिआही, कुलक उपहास।** (सामर्थ्यक प्रतिकूल हीन काज करब) राम अहिल्याक लग जाय हुनक उद्धारक अकुलिनि बिआही, कुलक उपहासक काज कयलनि।

2. **अधायल बगुलाक पोठी तीत** (पेट भरला पर रसगुल्ला तीत) धनिकक लेल अनुदान भेटब अधायल बगुलाक पोठी तीत होइत अछि।

3. **अनेर गायक राम रखबार** (जकर केओ नहि रक्षक तकर राम रक्षक) कुम्हारक आबामे बिलाड़ीक बच्चाक जीवित बचब अनेर गायक राम रखबार भेल।

4. **अपन बेदन ताहि निवेदिए जे पर बेदन जान** (अपन दुःख ओकरे कहब जे दोसरक दुःख बुझय) भगिरथ महाकंजूस मनोहरक आगाँ सहयोगक याचना कयलनि। हुनका ई बुझले नहि छलनि जे अपन वेदन ताहि निवेदिए जे पर वेदन जान।

5. **अन्हरामे कन्हा राजा** (मूर्खक मध्य कमो ज्ञानीकें अपनाकें महाज्ञानी बूझब) अपना गाममे रामायणक दू-चारि पाँति रटि श्यामू अन्हरामे कन्हा राजा बनि लेल अछि।

6. **अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर खाजा टके सेर भाजी** (मूर्ख समाजमे नीक बेजाय एक समान) मूर्ख आ पंडितक संग एके व्यवहार होइत देखि ई कहबी मोन पड़ल-अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

7. **अपन करनी पार उतरनी** (अपन कर्मक बलें सफल वा असफल होयब) भरि साल कहियो रंजन पढ़लनि नहि परीक्षामे बैसि गेला फेल भेलाह तँ मोन पड़लनि अपने करनी पर पार उतरनी।

8. **अपन दही केओ कहै खट्टा** (अपना चीजकेँ केओ अधलाह नहि कहैछ) रामूक शर्ट नीक नहि छलै तैयो ओहि शर्टक बड़ाइ छटने छल, ई सुनि श्याम् बाजल हँ हौ अपन दही केओ कहै खट्टा।

9. **अपन खुट्टापर कुकुरो बली** (अपना घरमे दुर्बलो व्यक्ति बलवान रहैत अछि) दस गोटे रघवाकेँ मारवाक हेतु ओकरा घर पहुँचला मुदा ओ तेहन ने रूप धयलक जे सभ पड़ेलाह, तखन हुनका सभके बुझेलनि जे अपन खुट्टा पर कुकुरो बली होइछ।

10. **अपने नीक तऽ आनो नीक** (नीक व्यक्तिक लेल सभ नीक) उपकारी संजूक लेल केओ अपकारी नहि। ठीके कहबी छै- अपने नीक तऽ आनो नीक।

11. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठु** (आत्म श्लाघा) अधिकांश लोक अपने मुँह मियाँ मिट्ठु होइत छथि।

12. **अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप** (मूल धनक नाश होइत देखैत रहब मुदा निस्सार वस्तुक लेल अनघोल करब) रमेशक धन रमना तरे-तर शून्य कऽ देलक मुदा ओहिपर ककरो ध्यान नहि पड़लनि लेकिन हुनकर मुट्ठो भरि पोआर लैत देखि बुधनाकेँ ओकरा सभमिलि हाथ-पैर तोड़ि देलकै एहिपर मन पड़ल ठीक कहबी छै अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप।

13. **आलसी लेखेँ गंगा बड़ी दूर** (काम नहि कयनिहारक बहाना बनायब) रजुआ कहलकै भजुआकेँ कनी कलसँ ठंडा पानि ला तँ भजुआ बाजल-हम बड़ थाकल छी रमुआकेँ कह आनि देतऽ) एहिपर रजुआ कहलक-ठीके कहै छै-आलसी लेखे गंगा बड़ी दूर।

14. **आइमाईकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग** (आदरक पात्रकेँ आदर नहि जनसामान्यकेँ परमादर) झाजीक ओतय उपनयनमे अभ्यागत लोकनिक कोनो पुछ नहि आ गामक लगुआ-भगुआ सभकेँ पुछि-पुछिकऽ खोआओल जाइत देखि विसुन बाजल आइमाइकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग।

15. **आयल पानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि** (गुड़क नफा चुटिए खाय) कमल कलकत्तामे कमयलनि कम नहि मुदा संयोगलनि नहि मेंटेनेन्समे सभ गमा देलनि। गाम अयलापर पिताजी पुछलथिन कतेक टका कमाकऽ आनलह अछि तँ ओ बाजलनि कहाँ किछु? खर्चे बड़ छलै एहि उत्तर पर हुनक पिता कहलखिन-हँ, हौ! ई कहब कोनो फुसि छै-आयलपानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि।

16. **आगू नाथ न पाछू पगहा** (आगाँ-पाछाँ क्यो ने होएब)-बापक मरलाक बाद रामू एकदम एसकर भऽ गेल, आगू नाथ न पाछू पगहा।

17. **आधा तीतर आधा बटेर** (मिलल-जुलल)-राम कका ओतुक्का भोजमे माछ-मांसु दुनू रहैक। आधा तीतर आधा बटेर।

18. **आब पछतओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत** (नुकसान भऽ गेलाक बाद सचेत हएब) नेना तँ मरि गेल, आब पछताओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत।

19. **आम खयबासँ काज, की आँठी गनलासँ** (काजसँ मतलब राखब)-अनेरे विवाद करै जाइ छी, आम खयबासँ काज अछि, की आँठी गनलासँ।

20. **आसा भंग दुख, मरन समान** (आशाक भंगक दुख मृत्यु समान होइत छैक)-रमनकेँ डॉक्टर साहेब भरोस देने छलथिन, से पूर नहि भेलैक। आशा भंग दुख, मरन समान।

21. **ई गुड़ खयने, कान छेदैने** (विपरीतो स्थितिमे अवश्य करणीय काज)सांसारिक लोककेँ शादी विवाहक मामलामे ई गुड़ खयने कान छेदौनहिक पड़ि होइ छै।

22. **बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरी** (तामसमे किछु अनुचित कऽ बैसब जकर कष्टसँ पीड़ित रहब) मोहन भाइक विवादमे अपन नीक गाय बेचि बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरीक पड़िमे पड़लाह।

23. **उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर** (भरिगर काजमे होमयबला हरानीसँ नहि घबरायब)-कन्यादानमे बड़ खर्चामे पड़ि गेलहुँ, मुदा उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर।

24. **उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटे** (गलती कऽ कऽ सीना जोड़ी करब)-पाकिस्तान बेर-बेर उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटबाक काज भारत संग करैत अछि।

25. **ऊँटक मुँहमे जीराक फोरन** (थोड़ मात्रामे)-कमलनाथ बाबूक श्राद्धमे माछ-मांसु ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन छल।

26. **एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी** (बलधिंगरो करब)-कन्यागत ओतेक देलक तैयो तंग करिते छिऐक, एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी।

27. **एक विदेशी दोसर तोतराह** (दुरूह काजक लेले अकुशल काज कयनिहारक भेटब)-रामू कम्प्यूटर ठीक करबाक लेल एक विदेशी दोसर तोतराहक सदृश अछि।

28. **एक म्यानमे दू तरुआरि** (एकठाम दू दबंग लोकक हएब)–सासु-पुतोहु दुनूकेँ एकठाम रहब एक म्यानमे दू तरुआरि सदृश अछि।

29. **एक हाथे थपड़ी नहि बजैछ** (एसकर कोनो काज नहि होइछ)–गाममे सभकेँ मिला कऽ राखू, एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक।

30. **एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ** (चिड़ैसँ चिड़ैक बच्चे उड़ौत)–हुमायूँक लेल अकबर एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ सिद्ध भेल।

31. **ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह** (एक-दोसरक गपकेँ परस्पर बुझबामे असमर्थ होयब)–गाममे अंग्रेजिया बाबूकेँ ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह बुझाइत छलनि।

32. **कतए राजा भोज कतए भोजुआ तेली** (कोनो तुलने नहि)–राम आ श्याममे राजा भोज आ भोजुआ तेली बला संबंध छलैक।

33. **कानी गायक भिन्ने बथान** (समूहसँ भिन्न विचारक लोक)–सभ दलीक मध्य कैकेयीक विचार कानी गायक भिन्ने बथान सदृश छल।

34. **कारी अक्षर भैंस बराबरि** (निरक्षर)–स्कूल गेलासँ की हएत, अहाँ तँ कारी अक्षर भैंस बराबर छी।

35. **कानऽ क मोन तऽ, आँखिमे गरल खूट्टी** (बहाना करब)–काज करबाक अछि तँ करू, अनेरे कानऽक मोन भेल तँ आँखिमे गरल खुट्टी बला बात नहि करू।

36. **कुकुरकेँ कतौ घी पचल** (नीक चीज नीक नहि लागब)–आजुक विपक्षी दलकेँ सरकारक नीको काज कुकुरक घी पचल सदृश होइत अछि।

37. **बिलाड़िक भागे सीक टूटल** (एकाएक अप्रत्याशित लाभ होयब)–मिथिलामे बाढ़ि अयला पर राहत वितरणमे अधिकारी सभक लेल बिलाड़िक भागे सीक टूटब होइत अछि।

38. **काँच बाँसक मुंगरी** (वास्तविकताक अभाव)–भारतक समक्ष पाकिस्तान काँच बाँसक मुंगरी अछि मुदा ओ बेर-बेर भारतकेँ घुड़की दैत अछि।

39. **खगजाने खगहिक भाषा** (दू लोकक बीचक गप बूझब तेसरक लेल असम्भव होयब)–भारत आ रूसक मध्यक व्यवहार खगजानहि खगहिक भाषा समान होइत अछि।

40. **खुट्टा बलें पड़रू चुकरए** (शक्ति सम्पन्नक बलें अपनाकें शक्तिशाली बूझब)-गाम घरक छोट भैया नेता सभक व्यवहार खुट्टा बलें पड़रू चुकरए होइत अछि।

41. **खसने नहि लजाइ, हँसने लजाइ** (गलतीसँ नहि आलोचनासँ डरब)-व्यापारमे घाटा लगला पर सियाराम मौन भय गेलाह ओहि पर हुनक मित्रगण कहलनि-साहस कय फेर व्यापारमे लागह किएक तँ ई सत्य जे खसने नहि हँसने लजाइ।

42. **खेत चरय गदहा मारल जाय जोलहा** (दोष ककरो आ दण्डित हो केओ)- चोरि कयलक खखना आ बान्हल गेल मखना। एकरे कहै छै-खेत खाय गदहा, मारल जाय जोलहा।

43. **गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान** (दू लोकक मेलसँ तेसरकें ठकल जायब)- रमाकान्त आ उमाकान्तमे तेहन ने मेल अछि जे हुनका दुनूक रहस्यक पार पायब सर्वथा असम्भव, मुदा धनु हुनका दुनूक फेरमे उल्लू बनि गेलाह। ओ ई नहि बुझैत छलाह जे गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान।

44. **गाय नहि तँ बड़द दूही** (असम्भव कार्य) रमणजीकें बसबाड़ि नहि छनि मुदा हुनका सँ मंच निर्माण हेतु पाँचटा बाँस माँगल गेलनि तऽ ओ बजलाह- हम बाँस कतय सँ देब? गाय नहि अछि तँ बड़दकें दूही।

45. **गुरू गुड़ चेला चिन्नी** (गुणमे बड़सँ छोटक बढ़ब)-शम्भू स्वयं बड शठ मुदा हुनक पुत्र तँ हुनको जितने छनि। ठीके कहल गेलैक अछि-गुरू गुड़ चेला चिन्नी।

46. **घर दही तँ बाहरो दही** (अपन लोकक बीच सम्मान तँ बाहरो सम्मान होइछ)-विद्यापतिकें मिथिलेमे नहि देश-विदेशे मे प्रतिष्ठा छनि एकरे कहै छै-घर दही तँ बाहरो दही।

47. **घरक भेदिया लंका डाह** (आपसी फूट बेस हानीकार होइछ) आपसी झगड़ाक कारण जयचन्द्र मुहम्मद गौरीकें बजौलनि जाहिसँ अपने तऽ गेबे कयलाह हिन्दू राज्यो नष्ट भऽ गेल। एकरे कहै छै-घरक भेदिया लंका डाह।

48. **चटमंगनी पट बिआह** (अतिशीघ्र काज होयब) जनकजी एकहि दिनमे खढ़, बाँस, आ मजदूरक जोगार कय घर ठाढ़ कऽ लेलनि। एहरे कहै छै चट मंगनी, पट बिआह।

49. **चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद** (दोषी रहितहुँ अनका दुसब) रजनीश स्वयं सब अवगुणक आगर छथि मुदा दूसैत छथि दिनेशकेँ। ठीके कहल गेल अछि-चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद।

50. **छुछुन्दरि माथमे चमेलीक तेल** (अयोग्य लोककेँ नीक वस्तुक लाभ) कहुना अपन जीवन बीतौनिहार कर्मूकेँ एकदिन मोटर साइकिल पर सजि-धजिकऽ बहराइत देखि गोविन्द बाजल-छुछुन्दरिक माथमे चमेलीक तेल चरितार्थ भऽ गेल।

51. **जकर लाठी तकर भैंस** (शक्तिक चलें अनर्थ करब) धनञ्जय लाठीक बलपर झिंगुरक सामनहि ओकर खेत जोति लेलकनि। एहिपर संजय बाजल ठीके कहै छै जकर लाठी तकर भैंस।

□□□

संक्षेपण

कोनो देल गेल अवतरणक भावकेँ बिनु नष्ट कयने ओकरा एक तिहाइ शब्दमे व्यक्त करब संक्षेपण थिक। मूल अवतरणक सार, क्रमबद्धता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, शुद्धता आ सरलता संक्षेपणक प्रमुख गुण अछि। संक्षेपण देल गेल अवतरणक भावसँ सम्बद्ध एकटा शीर्षक देब आवश्यक अछि।

उदाहरण स्वरूप

उदाहरण-1 (अवतरण)

आइ सर्वत्र उदासी व्याप्त अछि। चरित्रमे ह्रास भेल जा रहल अछि। मुदा जँ हमसभ मिलिकऽ एहि दिशामे तन-मनसँ लागि जाइ तँ चरित्र रूपी गाड़ीक हम स्वयं कुशल चालक बनि सकैत छी आओर चरित्र रूपी गाड़ीकेँ लुढ़कबासँ बचाकऽ सही दिशामे अग्रसर कऽ सकैत छी, मुदा एकरा लेल पहिने चरित्रवान बनऽ पड़त आ मौन व्रतधारी जकाँ एहि दिशामे बढ़ऽ पड़त। दीप सदृश तिल- तिल जरि कऽ अपन प्राणक आहुति देबऽ पड़त।

प्रारूप

चरित्रक महत्त्व

मनुक्ख अपन चरित्रक निर्माता स्वयं होइछ। चरित्र-भ्रष्ट व्यक्ति चतुर्दिक ह्रासक कारण बनैछ। तेँ तन-मन लगाकऽ सभकेँ चरित्रवान बनबाक चाही तखनही चहुँमुखी विकास संभव थिक।

अवतरण -2

परमेश्वरक व्याख्या अनन्त अछि। हुनक विभूतियो अनन्त अछि। हुनक आश्चर्यचकित करऽवला विभूति किछु कालक लेल हमरा वशीभूत कऽ लैत अछि मुदा हम पूजारी तऽ सत्यरूपी परमेश्वरक छी। वएह एक मात्र सत्य थिक आओर सभ मिथ्या।

प्रारूप

सत्यहि परमेश्वर थिकाह

परमेश्वर सत्यक पर्याय थिक जकरा छोड़िकऽ सम्पूर्ण जगत मिथ्या थिक।

अवतरण-3

हम स्वर्गक बात किएक करी? वृक्षारोपण कऽ कऽ हम एतहि स्वर्ग किएक ने बनाबी? महान सम्राट् अशोक कहने छथि जे-"रस्ता पर हम बट वृक्ष रोपि देलहुँ अछि, जाहिसँ जीव मात्रकेँ छाहरि भेटत। आमक गाछक समूह सेहो लगा देलहुँ अछि।

आइ प्रभुत्व सम्पन्न भारत एहि महाराजर्षिक राज चिन्ह लऽ लेलक अछि। 23 सौ वर्ष पूर्व ओ देशमे जेहन एकता स्थापित कयलनि, ओहिना हम प्राप्त कयलहुँ अछि, की हमरा लोकनि ओहि सन्देशकेँ सुनि नहि सकैत छी, एहि सन्देशकेँ सुनिकऽ निश्चित रूपसँ एहन प्रबन्ध कऽ सकब जाहिसँ भारतक सभ प्रजाजन कहि सकताह जे हमरा लोकनि जाहि रस्ता पर वृक्ष लगाओल, ओ जीव मात्रकेँ छाहरि दैत अछि।

प्रारूप

सम्राट अशोक जीव मात्रक हितमे रस्ता पर वृक्ष लगाकऽ भूमिकेँ स्वर्ग बनाओल, ओ देशमे एकता स्थापित कयलनि। वर्त्तमान सरकारो ओहि सन्देशक आधार पर देशमे एकता स्थापित कयलनि आ वृक्षारोपण कयलनि।

अवतरण-4

हमरा बजारक भोजन खएबामे एकदम नीक नहि लागल।

प्रारूप

भोजन स्वादहीन छल।

अभ्यास हेतु अवतरण

नीचाँ देल गेल अवतरणक उचित शीर्षक दए संक्षेपण करू।

अवतरण-1

माइक भाषा थीक मातृभाषा। एहि भाषाक बोली नेना जन्महिसँ माइक मुहसँ सुनबाक सौभाग्य प्राप्त करैत अछि। एहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक। हम सभ मिथिलावासी छी तेँ हमर मातृभाषा मैथिली थीक। एकर महत्त्व छैक। तेँ ओ कहिओ नहि बिसरल जा सकैत अछि। कारण देशक यथार्थ परिचय पएबाक हेतु एवं ओकर भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक स्वरूप ज्ञात ओहि देशक लोक द्वारा ओहि भाषामे लिखल ओहि देशक साहित्यक अध्ययनसँ होइत छैक। साहित्यमे मानुषिक प्रवृत्ति केर विचारधारा निहित रहैत छैक। ई एक दर्पण थिक जाहिमे मनुष्य वर्त्तमान की अतीतक दर्शन सेहो कय सकैत अछि। हमर मातृभाषा मैथिलीक साहित्य छओ सए वर्ष पुरान अछि। एकर सबल साहित्य छैक। एकर शब्द भण्डार बड़ समृद्ध छैक। ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति, गोविन्द दास, चन्दा झा आदि कविक कृति मैथिली भाषाक सुरक्षाक स्तम्भ अछि। एकर साहित्य काव्य, नाटक, गद्य आदि विधामे कोनो देशी भाषासँ न्यून नहि अछि। एकर बजनिहार तीन करोड़ व्यक्ति छथि।

अवतरण-2

परोपकारक भावना मात्र मनुष्येटामे नहि अछि। एकर पवित्र भाव प्रकृति पर सबसँ बेसी स्पष्ट अछि। वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल ओ डारि सभ किछु अनके हेतु त्याग करैत अछि। जल सभ जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भए जीवन कहबैछ। पशु भारवहन कए परोपकार करैछ। सूर्य दिन-राति चलैत रहैत छथि। चन्द्रमा संसार भरिक व्यथाकेँ दूर करबाक हेतु, आरामक हेतु समय पर उपस्थित भय पीयूष वर्षा कय सभकेँ हरित-भरित बनौने रहैत छथि। मेघ जलराशिकेँ धारण कय सभकेँ आनन्दित करैछ, नदी जलक भण्डारकेँ सुरक्षित राखि जीव-जन्तुक पालन-पोषणमे सहायक होइछ, पर्वत कन्द, मूल, फल, जड़ी-बूटी आदि सामानक उपहार उपस्थित कए परोपकारिताकेँ प्रकट करैत अछि। अतएव, प्रकृतिक सभ साधनमे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

अवतरण-3

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। यर्थाथत: सामाजिक जीव मनुष्यक हृदयक घात-प्रतिघातक, आशा-आकांक्षाक जेहन मार्मिक चित्रण तत्कालीन साहित्यमे उपलब्ध होइछ; तेहन अन्यत्र नहि। कहल गेल अछि इतिहासकेँ छोड़ि सभ वस्तु फूसि रहैछ। अँगरेजीमे एकटा उक्ति अछि जकर सारांश ई अछि जे धीया-पूता जहिना आइ खेलाइत अछि तहिना मिल्टनोक समयमे खेलाइत छल। परिस्थिति परिपार्श्वक भेदें मनुष्यक व्यवहारमे अन्तर पड़ैछ; किन्तु ओकर नैसर्गिक स्वभावमे कोनो अन्तर नहि आओत।

अवतरण-4

राज जनताक थिक, जनता लेल थिक, तेँ शासन ई ध्यान रखलक जे जनताकेँ सरकारी काजक सिलसिलामे भाषाक स्तर पर कोनो असुविधा नहि होइक। एहह कारण थिक जे एक प्रदेशमे एकसँ अधिको राजभाषाक प्रावधान कयल गेलैक। फलत:, कोनो प्रदेशमे जतेक भाषाकेँ माध्यम बनाओल जाइछ सभ ओहि प्रदेशक राजभाषा कहबैछ। एकरा प्रथम, दोसर, तेसर आदि श्रेणीमे करब कोनो अर्थ नहि रखैछ। हिन्दीकेँ सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु राष्ट्रभाषा मानल गेलैक। जहि प्रदेशमे मुख्यत: एक भाषा-भाषी अछि ताहिठाम तेँ कोनो समस्या नहि छैक। किन्तु, बिहार सन प्रदेशमे अनेक भाषा-भाषीक बहुलता अछि तेँ राजकाज चलएबाक माध्यम भाषा लेल विवाद उठैत अछि।

अवतरण-5

हे! गेल जाइ। हाथ पयर थर-थर कँपैत रहैत छल। ओढ़ना तरसँ कोनो काज करक हेतु हाथ बाहर नहि होइत छल। साँझ-प्रात घूरक संग बैसल-बैसल ओ रातिक' पोआर तरमे नुकाय कोनहुना दिन खेपल। मोट गद्दी पर उत्तम सीरक-तुराइ ओढ़ने पड़ल-पड़ल केहन आलसी भय गेल छलहुँ। दिन उठला पर जाड़क लेल एक डूब स्नानो करब कठिन लगैत छल। तुराइ तरसँ बाहर भए अँगरखा खोलि रातिक भोजन करब दुस्साहस बुझना जाइत छल। भोरमे पढ़बाक हेतु ओछाओन छोड़ब असम्भव भय गेल छल। भरोसे नहि छल जे ई गरीबक हाथकेँ कपौनिहार, अमीरकेँ अकर्मण्य बनौनिहार, नेना-भुटकाक स्वछन्द क्रीड़ामे बाधा देनिहार जाड़ कहियो जायत।

□□□

पत्र-लेखन

मित्रक पिताक मृत्यु पर मित्रकेँ शोक-पत्र लिखू।

धनेशमपुर

05.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

कुशल कुशलापेक्षी। काल्हि अहाँक पत्र पाबि उत्सुकतासँ पढ़य लगलहुँ मुदा अहाँक पिताक वानक मृत्युक समाचार पढ़ि गुम भऽ गेलहुँ। एहेन दुखद शोक-समाचार सुनि घरभरिक लोककेँ अपार शोक भेलनि ा कयल की जाय! ईश्वरक लीलाक पार के पाओत? ई शरीर अनित्य अछि, कखन की भऽ जायत केओ नहि कहि कैत अछि। हुनक मृत्यु एक महान् व्रजाघात थिक। परञ्च मृत्युसँ बचओनिहार केओ नहि। जन्म आ मृत्यु दुनू अभिन्न ी थिक।

अहाँक पिता सरलता, सज्जनता, शिष्टता आ व्यवहारपटुताक साक्षात् मूर्त्ति छलाह। हुनक मधुर वाणी, अपनापनक व आदर-सत्कार स्मरण होइत देरी' आँखि नोरा जाइत अछि एवं कंठ अवरुद्ध भऽ उठैत अछि। एक महापुरुषक धन पर हम अहाँक संग संवेदना प्रगट करैत छी। हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ अहाँकेँ एहि दुःखकेँ सहबाक क्ति दऽ सान्त्वना प्रदान करथि आ ओहि दिवंगत आत्माकेँ शाश्वत शांति भेटनि।

आशा आ विश्वास अछि जे अहाँ भैयारीमे श्रेष्ठ हयबाक कारणेँ अपन कर्त्तव्यसँ हुनक मर्यादा आ प्रतिष्ठाक रक्षा रब। इति।

ा :- मोहन झा

ग्राम-लालगंज

पो.-सरिसव-पाही

जिला-मधुबनी

अहाँक मित्र

सुनील

□□□

मित्र द्वारा लिखल गेल पत्रक उत्तर लिखू।

मोहनपुर

14.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

हम कुशल छी आ अहाँक कुशल ता भगवानसँ मनबैत छी। अहाँक पत्र पाबि परम प्रसन्न भेलहुँ। हाँक उलहन अत्यधिक आनन्द आ अपार दुःखक कारण भऽ गेल अछि। आनन्द एहि हेतु भेल अछि जे अहाँ हमर

कुशल जानबाक लेल उत्सुक रहैत छी। मुदा दुःख एहि लेल भेल अछि जे हमरा स्तब्धता अहाँक कोमल हृदयकेँ ठेस पहुँचओलक अछि। हमरा आशा एवं विश्वास अछि जे कारण बूझि अहाँ हमरा अवश्ये क्षमा करब।

मित्र! परीक्षोपरांत गाम अबितहिँ हम परीक्षोपरांत अस्वस्थ भऽ गेलहुँ। बाइसी भऽ गेल। बेसी काल बेहोश रहैत छलहुँ। बचबाक आशा नहीं छल। अहाँ केँ सूचना देबाक लेल श्रीमान् भाइजी केँ कहलियनि। ओ पत्र पठाय देबाक सूचना देलनि परञ्च पठओलनि नहि। हुनका पूर्ण विश्वास छलनि जे अहाँ हमर अस्वस्थताक सूचना पाबि परीक्षा छोड़ि दौगि पड़ब। आब हम पथ्य खयलहुँ। आशा करैत छी जे शीघ्र स्वस्थ भऽ जायब। औषधि चलि रहल अछि। आब जानक कोनो डर नहि। परिवारक सब गोटा कुशल छथि। अहाँ केँ देखय लेल सभहक मन लागल छनि। अतः परीक्षा समाप्त भेला पर अहाँ वापस एतय आयब। एकहि दिन रहलाक उपरांत गाम चलि जायब। हमरा आशा अछि जे आब अहाँ हमरा प्रति मनमे आन भावना नहि राखब। अयबाक निश्चित समय लिखि पठायब जै सँ मखना बस-स्टैण्ड पर उपस्थित रहत। अवश्ये आयब। इति।

पता :- अजीत झा

ग्राम-कनकपुर

पो.-लोहना रोड

जिला-दरभंगा

अहाँक मित्र

सुमन

□□□

3. दर्शनीय स्थलक विषयमे छोट भायकेँ पत्र लिखू।

खजांची रोड

पटना

10.05.2013

प्रिय राज,

शुभाशिष!

आइ हम आगरासँ घुरलहुँ। एहि बेर हम अपन विद्यालयक शिक्षक एवं छात्रगणक संग पूजावकाशमे घूमय बहरा गेल छलहुँ। आगरामे अनेक ऐतिहासिक महत्त्वक स्थान अछि; जेना-किला, ताजमहल इत्यादि। ताजमहलक तँ गप्पे नहि हुअय! ई श्रीकृष्णक कमनीय क्रीड़ा सभहिक साक्षी यमुनाक तट पर ठाढ़ अछि। एकरा मुगल शहंशाह शाहजहाँ अपन बेगम मुमताजक स्मृतिकेँ चिरस्थायी बनेबाक लेल बनओने छल। एल्डुअस हक्सले एकर रूप-रंगक आ अनुपात-भंगक आलोचना कयने छथि, से हम कहियो पढ़ने रही। साहिर लुधियानवीक ओ नज्म सेहो हम पढ़ने छी जाहिमे ताजक विषयमे ओ लिखने छथि-'इक शाहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर, हम गरीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक।' मुदा, एकरा सद्यः देखिकेँ उक्त सबटा कथन तर्कहीन लागल।

ताजक विषयमे की कहू? संसारमे सातटा आश्चर्यक गप्प के कहय, जँ दुइओ तीन आश्चर्य होइत तँ ओहूमे ई नि शामिल कयल जाय सकैत छल। ताज! कालक गालपर टघरल अश्रुक बुन्न! नहि, ई तँ संगमरमर पर अंकित तन नारीक प्रति सनातन पुरुषक प्रेम-कविता थिक। इजोरिया रातिमे ई आओरो आकर्षक बुझि पड़ैत अछि, जेना ताज स्वयं शाहजहाँसँ भेंट करक लेल सजि-धजिकेँ बहराय गेल होअय।

एहि पत्रमे आर की लिखू? भेंट भेला पर आओरो गप्प कहब। माकेँ प्रणाम कहि देबनि। पिताजी मुम्बइक -प्रदर्शनी देखिकेँ कहिया धरि घुरताह?

:- श्री राज ठाकुर
ग्राम-लोहना पश्चिम
पो.-सरिसव पाही
जिला-मधुबनी

तोहर अग्रज
अशोक

□□□

खेलकूदक महत्त्वक विषयमे छोट भायकेँ पत्र लिखू।

नारायणी कन्या पाठशाला,
पटना सिटी
20.05.2013

प्रिय मुन्ना,

शुभाशीष!

आइ हमरा बाबूजीक एक पत्र प्राप्त भेल। एहिमे ओ तोहर दिनानुदिन खसैत स्वास्थ्य पर चिन्ता त कयलनि अछि। हुनक चिट्ठीसँ एहन बुझि पड़ैत अछि जे तोँ एखन 'किताबी कीड़ा' बनि गेल छेँ। हम स्वयं अनुभव करैत छी जे जीवनमे प्रगतिक स्वर्णिम शिखरपर आरूढ़ हेबाक लेल परिश्रम परमावश्यक -अध्ययनमे रत होएब आवश्यक छैक, किन्तु एकर तात्पर्य ई कदापि नहि जे ई सभ स्वास्थ्यक बलि दऽ कऽ करी। स्थ्यकेर आहुति दऽ नीक परीक्षाफल पायब कोनो बुधिआरी नहि भेल।

तोँ त' जनिते छेँ जे स्वस्थ शरीरमे स्वस्थ मस्तिष्कक वास होइत छैक। स्वामी विवेकानन्द 'अपने नौजवान मित्रों के ' जे पोथी लिखने छथि, ओकरा तोँ अवश्य पढ़िहेँ। ओहिमे ओ लिखने छथि जे जँ तोँ फुटबॉल नहि खेलाइत छेँ, तँ क मर्मकेँ सेहो नीक जकाँ नहि बुझि सकैत छेँ।

तँ जँ तोँ अध्ययन द्वारा वैज्ञानिक आ वैयक्तिक उन्नति, राष्ट्रक सेवा आ समाजक उत्थान चाहैत छेँ, तँ सर्वप्रथम न स्वास्थ्यपर ध्यान दहीं। उत्तम स्वास्थ्य लेल शारीरिक श्रम अनिवार्य अछि आ एहि लेल तोरा कोनो-ने-कोनो खेल लिबेक चाहियौ।

हम आशा करैत छी जे तोँ हमर कहनाइ मानि अपन आ हमरा लोकनिक हित करबेँ।

:- मुन्ना चौधरी
द्वारा-प्राचार्य
पटना कॉलेजिएट स्कूल
दरियापुर, पटना

तोहर दीदी
सुनीता

□□□

5. पिताक मृत्युपर सहपाठीकेँ पत्र लिखू।

विश्वामित्र निवास

तारकेश्वर पथ

पटना

19.05.2013

प्रिय मुकेश,

नमस्कार!

अहाँक पूज्य पिताजीक असामयिक देहान्तक समाचार पाबि हमरा एते मर्मान्तक दुख भेल जे कहि नहि सकैत छी। एखन त' अहाँ सभहिक उपर संकटक पहाड़ टूटि पड़ल अछि। परञ्च, मृत्युपर ककर अधिकार छैक? अहाँ तँ जनिते छी, 'हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।'

एहि हृदय-विदारक क्षणमे हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ दिवंगत आत्माकेँ परमशान्ति दथु आ अहाँ लोकनिकेँ कष्ट सहबाक शक्ति प्रदान करथि। धैर्य, धर्म आ संगीक परिचय तँ विपत्तियेमे होइत छै। जँ एखन अहाँक काज आबि सकी, त' अपनाकेँ धन्य बूझब।

पता :- मुकेश कुमार

मिर्जापुर,

दरभंगा

अहाँक शुभेच्छु

राधेश्याम

□□□

6. सिगरेट पीबासँ मनाही लेल छोट भायकेँ पत्र लिखू।

स्नातकोत्तर छात्रावास

कोठली न.-8

भागलपुर

प्रिय राजेन्द्र,

शुभाशीष!

आइ गामसँ मोहनक पत्र आयल अछि। ओ गाम आ अपन परिवारक शुभ समाचार लिखलक-से जानि बड़ प्रसन्नता भेल। ओ एकटा बात एहन लिखलक जाहिसँ हमरा बड़ बेसी दुख भेल। ओ लिखने अछि जे

ल-फिलहालमे तँ सिगरेट पिबऽ लगलेहँ। सिगरेट पीलासँ कतेक हानि छै, तँ नहि जनैत छँ। प्राय: धनीक लोककेँ गरेट पिबैत देखि तँ कहि सकैत छँ ई पैघलक चिन्ह थिक। मुदा तँ एहन कखनो नहि बूझ। सिगरेटक सेवनसँ फड़ामे धुआँक तह जमि जाइत छैक, जाहिसँ भयंकर हृदय-रोग भऽ जाइत अछि। सिगरेट पिउलासँ मुहसँ दुर्गन्ध बैत अछि। इत्र बेचनिहार कतहु जाइत अछि तँ सुगन्धि पसारैत अछि। दोसर दिस सिगरेट पीनिहार कतहु जाइए तँ र्गन्ध परसैत अछि। सिगरेटसँ स्वास्थ्य चौपट होइत अछि। जाहि टाकासँ तँ नीक-नीक पोथी कीनि सकैत छँ, वास्थ्यवर्द्धक फल खाय सकैत छँ, बढ़िया वस्त्र धारण कऽ सकैत छँ आ अपन निर्धन संगीक मदति कऽ सकैत छँ, ोहि टाका-पैसाकेँ सिगरेटमे जराय देब कतेक अधलाह गप्प थिक, तँ बुझबाक चेष्टा कऽर।

हम आशा करैत छी जे हमर पत्र पढ़लाक बाद तँ कखनो सिगरेटकेँ अपन ठोरसँ नहि लगेबौ। हम तोहर तरक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रतासँ कऽ रहल छी।

ता :- राजेन्द्र कुमार

वर्ग-नवम

उच्च विद्यालय, अंबा

भागलपुर

तोहर बड़का भाय

महेश

□□□

निबन्ध

शिक्षक दिवस

समाजकेँ सही दिशा देबामे शिक्षकक प्रमुख भूमिका होइत अछि। ई राष्ट्रक भावी नागरिक अर्थात् नेना लोकनिक क्तत्व बनयबाक संग-संग हुनका सभकेँ शिक्षित सेहो करैत छथि। तेँ शिक्षकगण दुआरा कयल गेल श्रेष्ठ कार्य हिक मूल्यांकन कऽ हुनका सम्मानित करबाक दिन शिक्षक दिवस कहबैत अछि। ओना डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् कि 1962सँ 1967 धरि भारतक राष्ट्रपति सेहो रहलाह, हुनक जन्मदिनक अवसरपर शिक्षक दिवस मनाओल जाइत छ। ओ संस्कृतज्ञ, दार्शनिक हेबाक संग शिक्षाशास्त्री सेहो छलाह। राष्ट्रपति बनबासँ पूर्व ओ शिक्षा क्षेत्रसँ संबद्ध रहा। 1939सँ 1948 धरि ओ विश्वविख्यात काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक उपकुलपति पदपर रहलाह। राष्ट्रपति लाक बाद जखन हुनक जन्मदिनकेँ सार्वजनिक रूपसँ आयोजित करबाक योजना बनल तँ ओ जीवनक अधिकांश य शिक्षक रहबाक कारणेँ एहि दिनकेँ शिक्षक लोकनिकेँ सम्मानित करबाक हेतु शिक्षक दिवस मनयबाक बात लनि। ओही समयसँ प्रतिवर्ष ई दिन शिक्षक दिवसकेर रूपमे मनाओल जाइत अछि।

शिक्षक दिवसक अवसरपर राज्य सरकार ओ भारत सरकार द्वारा शिक्षणक प्रति समर्पित शिक्षक लोकनिकेँ ानित कयल जाइत छनि। शिक्षक राष्ट्रनिर्माणमे सहायक सिद्ध होइत छथि, संगहि राष्ट्रीय संस्कृतिक संरक्षक सेहो ाह। ओ छात्रगणकेँ सुसंस्कार तँ दैते छथि, हुनक अज्ञानता रूपी अंधकारकेँ दूर कऽ हुनका देशक श्रेष्ठ नागरिक बाक दायित्वक निर्वहन सेहो करैत छथि। शिक्षक देशक बालक लोकनिकेँ ने मात्र साक्षर करैत छथि अपितु अपन श द्वारा ओकर ज्ञानक तेसर आँखि सेहो खोलैत छथि। ओ नेना सभमे हित-अहित, नीक-अधलाह विचारबाक त उत्पन्न करैत छथि। एहि तरहेँ राष्ट्रक समग्र विकासमे शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करैत छथि।

शिक्षक ओहि दीप सदृश थिकाह जे अपन ज्ञान-ज्योतिसँ बालक लोकनिकेँ प्रकाशमान करैत छथि। महर्षि विन्द अपन एक पोथी जकर नाम 'महर्षि अरविन्द के विचार, छैक। ओहिमे शिक्षकक संबंधमे लिखने छथि- ्यापक राष्ट्रक संस्कृतिक माली होइत छथि। ओ संस्कारक जड़िमे खाद दैत छथि। अपन श्रमसँ ओकरा व-सींचि कऽ महाप्राण शक्ति बनबैत छथि।' इटलीक एक उपन्यासकार शिक्षकक विषयमे कहने छथि जे शिक्षक हे मोमबत्तीक सदृश अछि जे स्वयं जरिकेँ दोसराकेँ इजोत दैत अछि। संत कबीर तँ गुरूकेँ भगवानोसँ पैघ मानने ा। ओ गुरूकेँ ईश्वरसँ श्रेष्ठ मानैत कहने छथि-

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो मिलाय।।

शिक्षककेँ आदर देब, समाज आ राष्ट्रमे हुनक कीर्तिकेँ विस्तार देब केन्द्र एवं राज्य सरकारक कर्त्तव्य नहि, दायित्व छैक। एहि दायित्वकेँ पूरा करबाक शिक्षक दिवस एक सर्वोत्तम दिन अछि।

गुरूसँ आशीर्वाद लेनाय भारतवर्षक अत्यन्त प्राचीन परिपाटी अछि। आषाढ़ माहमे अबइवला पूर्णिमाकेँ गुरू

पूर्णिमा वा व्यास पूर्णिमा नाम एही निमित्त देल गेल छै। स्कूल-कओलेजक अतिरिक्त सरकार दिससँ सेहो एहि दिन समारोह आयोजित कयल जाइत अछि। दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित एक पैघ समारोहमे राजधानीक स्कूल सभसँ चयनित श्रेष्ठ शिक्षक लोकनिकेँ सम्मानित कयल जाइत छनि। एकर अतिरिक्त स्थानीय निकाय जेना दिल्ली नगर निगम, नव दिल्ली नगर पालिका परिषद्, दिल्ली छावनी परिषद् द्वारा सेहो समारोह आयोजित कऽ अपना अधीन अबइवला स्कूलक श्रेष्ठ शिक्षकगणकेँ सम्मानित कयल जाइत अछि।

□□□

मदर टेरेसा

यूगोस्लाविया क स्कोपजे नामक एक छोट-सन नगरमे मदर टेरेसाक जन्म 26 अगस्त, 1910 कँ भेल छलन्हि। नक पिता एक भवन निर्माता छलाह, नाम रहन्हि अल्बेनियन। टेरेसा बाल्यकालमे एग्नेस बोहाझिउ नामसँ बजाओल ाइत छलि। हुनक माता-पिता धार्मिक विचारक छलथिन्ह। बारह बरखक अल्पायुमे मदर टेरेसा अपन जिनगीक उद्देश्य श्चित कए लेने छलि। मानव-प्रेम एकटा एहन सर्वोत्तम भावना अछि जे ओकरा वास्तवमे मनुक्ख बनबैत छैक। नवताक प्रति प्रेमकेँ देश, जाति वा धर्म सदृश संकुचित परिधिमे नहि बान्हल जाए सकैत अछि। विश्वमे मानवक ःस्वार्थ भावसँ सेवा कएनिहार अनेक विभूति लोकनिमे मदर टेरेसा सर्वोच्च छलि। हुनका ममता, प्रेम, करुणा आ ावाक प्रतिमूर्ति कहल जाइन्हि तँ कोनो अत्युक्ति नहि होएत।

अठारह बरखक आयुमे ओ नन बनबाक निर्णय लए ललन्हि। एहि लेल ओ आयरलैंड जाकेँ लोरेटो नन लोकनिक न्द्रमे सम्मिलित भए गेलि। ओतएसँ हुनका भारत पठाओल गेलन्हि। 1929मे मदर टेरेसा लोरेटी एंटेली स्कूलमे ध्यापिका बनबाक लेल कलकता पहुँचलि। एतय आबि ओ अध्यापिकाक रूपमे सेवाकार्य आरम्भ कयलनि। अपन ग्यता, कार्यनिष्ठा आ सेवाभावक कारण किछुए दिनक उपरान्त हुनका ओतुक्का प्रधानाध्यापिका बनाऽ देल गेल। ेसाकेँ ई पद पाबिकेँ संतोष नहि भेटल। 10 दिसम्बर, 1946 कँ जखन ओ रेलसँ दार्जिलिंग जाय रहल छलि तखन नक अन्तरात्मासँ एकटा आवाज आएल जे स्कूल छोड़ि हुनका गरीब लोकनिक बीच रहि सेवा करबाक चाही। ओ द्यालयक काज छोड़ि देलनि। 1950मे मिशनरीज ऑफ चैरिटीक स्थापना कयलनि। एकर उपरान्त नील कोखला ज्जर साड़ी पहीरि पीड़ित लोकनिक सेवा करबाक लेल कर्मक्षेत्रमे कूदि गेलि।

एहिसँ पूर्व मदर टेरेसा 1948मे कोलकाता स्थित एक झुग्गी बस्तीमे रहनिहार नेना लोकनिक हेतु विद्यालय ोललनि। एकर किछु दिनक बाद काली मंदिर लग 'निर्मल हृदय' नामसँ एकटा धर्मशालाक स्थापना कयलनि। ई र्मशाला मात्र असहाय लोक सभहिक लेल छल। मदर टेरेसा अपन सहयोगी सिस्टर लोकनिक संग सड़कक कात एवं ली-कुच्चीमे पड़ल दुखित व्यक्तिकेँ उठाकेँ 'निर्मल हृदय' लऽ जाथि जतऽ हुनका सभक निःशुल्क उपचार होन्हि। ल्लेखनीय थीक जे ओ अपन नाम 16म शताब्दीमे संत टेरेसाक नामसँ विख्यात भेल एक ननकेर नामपर टेरेसा राखि ने छलि।

आरम्भमे मदर टेरेसा क्रिक लेनेमे रहैत छलि,बादमे आबिकेँ ओ सरकुलर रोडमे रहय लगलथि। एहिठाम जाहि कानमे ओ रहैत छलि से आइ विश्वभरिमे 'मदर हाउस' क नामसँ जानल जाइत अछि। 1952मे स्थापित 'निर्मल दय' केन्द्र आइ विशाल आकार ग्रहण कऽ लेलक अछि। संसार भरिक प्रायः 120 देशमे एहि संस्थाक शाखा सभ र्यरत छैक। एहि संस्थाक अन्तर्गत सम्प्रति 169 शिक्षण संस्था, 1369 उपचार केन्द्र एवं 755 आश्रय गृह संचालित छि।

मदर टेरेसाक व्यक्तित्व अत्यन्त सहनशील, असाधारण आ करूणामय छल। हुनक मनमे रोगी, वृद्ध, भूखल, नांगट एवं निर्धन लोकनिक प्रति अत्यधिक ममता छलनि। ओ अपन जिनगीक पचास बरख हुनके समहिक सेवा-सुश्रुषामे व्यतीत कए देलनि। टुगर आ विकलांग नेना लोकनिक जीवनकेँ प्रकाशवान बनेबा लेल ओ आजीवन प्रयास कयलनि।

मदर टेरेसा हृदय रोगसँ पीड़ित छलि। 1989सँ 'पेसमेकर'क बलेँ हुनक श्वास चलि रहल छल। अन्ततः सितंबर 1997मे ओ परलोक लेल प्रस्थान कए गेलि। पीड़ित लोकनिक तन-मनसँ सेवा कयनिहारि टेरेसा आइ हमरा समहिक बीच नहि छथि मुदा हमरा लोकनिकेँ हुनक देखाओल बाटपर चलैत टुगर, असहाय आओर दुखितक सेवा करबाक संकल्प लेबाक चाही।

□□□

महावीर स्वामी

धर्म-प्रधान भारतक माटिमे समय-समयपर अनेक धर्माचार्य लोकनिक प्रादुर्भाव भेल। एकर प्रधान कारण छल एहिठाम प्रचलित धार्मिक कर्मकांडक विकृत रूप। देशमे पशु सहित नर-बलिक प्रथा अनेक धर्ममे विद्यमान छल। धर्मक नामपर नाना प्रकारक ढोंग समाजमे व्याप्त छल। एहने-सन स्थितिमे राष्ट्रक पावन भूमिपर कैकटा महापुरुष लोकनि जन्म लेलनि।

धर्मक स्थापना आ सज्जन व्यक्तिक सुरक्षा लेल महावीर स्वामीक जन्म ओहि कालमे भेल जखन देशमे यज्ञक महत्त्व बढ़ए लागल छल। समाजमे मात्र ब्राह्मण लोकनिक प्रतिष्ठा निरन्तर बढ़ैत जा रहल छलनि। ब्राह्मण अपना सोझाँ अन्य जातिकेँ न्यून बुझैत रहथि। तेँ ओ सभ प्रताड़ित अनुभव करैत छल। यज्ञमे पशुक बलि देल जाइत छलैक। एही कालमे महावीर स्वामी धर्मक सुच्चा स्वरूपकेँ बुझयबाक निमित्त आ परस्पर भेदभाव मिटएबा लेल भारत-भूमिपर अवतरित भेलाह।

महावीर स्वामीक जन्म आइसँ करीब अढ़ाय हजार वर्ष पूर्व चैत्रसुदी त्रयोदशीक दिन बिहार राज्यक वैशालीक निकट कुण्डग्राममे लिच्छवी वंशीय क्षत्रिय राजा सिद्धार्थक घरमे भेल। हुनक पिता सिद्धार्थ वैशालीक शासक छलाह। हुनक माताक नाम त्रिशला देवी छलन्हि। पुत्रकेँ जन्म देलासँ पूर्व त्रिशला देवी कैकटा बड़ शुभ स्वप्न देखने छलि। ओहि स्वप्न सभकेँ देखि हुनका विश्वास छलनि जे जाहि पुत्रकेँ हम जन्म देलहुँ अछि जे महान् गुण सभसँ युक्त होयत आ ओकर यश विश्वभरिमे पसरत। महावीर स्वामी दुआरा कयल गेल कार्य सभसँ मायक उक्त धारणा पूर्ण भेलनि। राजा सिद्धार्थ पुत्ररत्नक प्राप्ति पर अत्यधिक प्रसन्न भेलाह। एहि अवसर पर ओ खूब उत्साहसँ उत्सव आयोजित कयलनि आ प्रजाकेँ नाना प्रकारक सुविधा प्रदान कयलनि। ओहि लिच्छवी वंशक बड्ड ख्याति छलै। पुत्र भेलाक बाद सिद्धार्थक प्रभाव अओर बढ़ि गेल। एहि कारणेँ महावीरक नाम 'वर्धमान' राखल गेल।

बाल्यावस्थामे महावीर स्वामी 'वर्धमान' नामसँ बजाओल जाइत रहला। किशोरावस्थामे एक पैघ साँप तथा मदमस्त हाथीकेँ अपन वशमेकऽ लेलासँ हुनका 'महावीर'क संज्ञा भेटलनि। परिवारमे कथूक अभाव नहि छल, सुखक सबटा सामग्री सहजतासँ उपलब्ध छलनि मुदा ई सुख हुनका काँट सदृश लगनि। महावीर सदति सृष्टिक असारता पर विचारमग्न रहय लगलाह।

हुनक विवाह एक राजकुमारीसँ कऽ देल गेल। तथापि ओ पत्नीक प्रेमाकर्षणमे नहि बन्हेला, अपितु हुनक मोन सांसारिकतासँ उचटैत चलि गेलनि। पिताक मृत्युक पश्चात् हुनक वैरागी मन अओर खिन्न भऽ उठल एवं संसारसँ वैराग्य लेबाक निश्चय कऽ लेलनि। जेठ भाए नन्दिवर्धनक आग्रहपर ओ दू बरख अओर गृहस्थ जीवन बितओलनि। एहि दू बरखमे ओ भरि इच्छा दान-पुण्य कयलनि। तीसम वयसक उपरान्त ओ परिवार एवं संबंधी लोकनिक माया-मोह छोड़ि साधु बनि गेलाह। एकांत आ शांत स्थानमे आत्मशुद्धिक लेल ओ तपमे लीन भऽ गेलाह। बारह बरख धरि तपस्या कयलाक बाद हुनका परम ज्ञानक प्राप्ति भेलनि।

एकरा बाद ओ जनताकेँ धर्मक स्वरूप बुझायब आरंभ कऽ देलनि। ओ अपन पहिल उपदेश राजगीरक निकट विपुलाचल पर्वत पर देलनि। शनैः शनैः हुनक उपदेशक प्रभाव सम्पूर्ण देशमे पसरि गेल। हुनक शिक्षासँ प्रभावित भऽ अनुयायी लोकनिक संख्या बढ़ैत गेल आ हुनक सिद्धान्त एवं मतक प्रचार सेहो होइत गेल।

महावीर स्वामी मोक्षकेँ जीवनक एकमात्र लक्ष्य मानलनि। अपन ज्ञान-किरण द्वारा ओ जैन धर्मक प्रवर्तन कयलनि। एहि धर्मक पाँचटा मुख्य सिद्धांत अछि-सत्य, अहिंसा, चोरी नहि करब, आवश्यकतासँ अधिक संग्रह नहि करब आ जीवनक शुद्धीकरण हुनक कहब छल जे एहि पाँच सिद्धान्त पर चलिकेँ मनुक्ख मोक्ष वा निर्वाण पाबि सकैत अछि। ओ सभकेँ उक्त मार्गपर चलबाक ज्ञानोपदेश देलनि।

महावीर स्वामीक कहब छलनि जे जाति-पाँजिसँ ने क्यो श्रेष्ठ आ महान् बनैत अछि ने जीवनमे ओकर स्थायी मूल्ये होइत छैक। सभहिक आत्माकेँ अपन आत्मा सदृश बूझक चाही, यैह मनुक्खता थिक। भगवान महावीर स्वामी जैन धर्मक चौबीसम तीर्थंकरक रूपमे आइयो सश्रद्धा आ ससम्मान पूज्य एवं आराध्य थिकाह। हुनक मृत्यु 72 बरखक आयुमे कार्तिक मासक अमावस्याकेँ पावापुर नामक स्थान पर भेलनि।

□□□

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

स्वतंत्रता दिवस भारतवर्षक स्वाधीनताक जन्म दिवस थिक। 1947मे 15 अगस्तक दिन देश अंग्रेजक गुलामीसँ ुक्त भेल छल। एहिसँ पूर्व प्राय: दू सय बरख धरि अंगरेज भारतमे राज्य कयलक। कूटनीतिमे निपुण अंगरेज सभ ोलासी, भोगी आ सत्ता पयबा लेल पारिवारिक ओझरौटमे ओझरायल मुगल लोकनिकेँ खेहाड़ि अपन शासन भारतमे ्थापित कयलक। ब्रिटिश शासनकालमे वैज्ञानिक उन्नतिसँ देश प्रगति-पथपर अग्रसर भेल। श्रीलंका आ वर्माकेँ ारतसँ पृथक् कऽ स्वतंत्र राष्ट्रक रूपमे स्थापित कयल गेल। अंगरेज बंगालकेँ सेहो दू भागमे विभाजित करबाक ्रयासमे छल मुदा जनमत विरोधक कारणेँ एहिमे ओकरा सफलता नहि भेटलैक। पन्द्रह अगस्तकेँ दिल्लीक ालकिलापर पहिल बेर यूनियन जैककेर स्थानपर सत्य एवं अहिंसाक प्रतीक तिरंगा झंडा फहराओल गेल छल।

स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष प्रत्येक नगरमे बड़ उत्साहक संग मनाओल जाइत अछि। विद्यालय सभमे छात्रगण ोल्लास एहि राष्ट्रीय पावनिकेँ मनबैत छथि। हमरो विद्यालयमे आन बरखक भाँति एहू बेर ई पर्व बड़ हर्षक संग नाओल गेल। विद्यालयक सभ छात्र प्रांगणमे एकत्रित भेलाह। ओना कार्यक्रम आरम्भ भेलाक बादो विद्यार्थी लोकनि ाबि रहल छलाह। उपस्थिति पूरा भेला सन्ताँ मचक संचालन कयनिहार शिक्षक कार्यक्रममे भाग लेनिहार ात्र-समूहकेँ आगाँ अएबा लेल कहलनि। शिक्षक महोदयक एहि उद्घोषणाक उपरान्त कार्यक्रमक लेल चयनित छात्र ाभसँ अलग भऽ गेलाह।

एकर पश्चात् प्रधानाचार्य प्रभात फेरीमे चलक लेल विद्यार्थी लोकनिकेँ संकेत देलनि। विद्यालयक छात्रगण ीन-तीन केर पाँती बनाकेँ सड़कपर चलय लगलाह। सभसँ आगू महक छात्रक हाथमे तिरंगा झंडा छलैक, तकरा पाछाँ िद्यार्थी सभ पाँतीमे चलि रहल छल। सभ विद्यार्थी देशभक्तिसँ ओतप्रोत गीतक गायन करैत जाय रहल छलाह, ीच-बीचमे हठात् 'भारतमाताक जय', 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद-जिन्दाबाद'क नारा जोरगर अवाजमे लगाऽ रहल छलाह। ्हि प्रकारेँ प्रभात फेरी नगरक प्रमुख चौबट्टीसँ होइत जिलाधीशक आवासक सोझासँ बहार भेल। अन्तमे प्रभातफेरी िद्यालय परिसरमे आबि बिलमल। ओतय ध्वजारोहणक सबटा ओरिआओन कऽ लेल गेल छल।

ठीक आठ बजे विद्यालयक प्राचार्य ध्वजारोहण कयलनि। एहि अवसरपर उपस्थित सब छात्र दुआरा तिरंगाकेँ ालामी देल गेल। एहि आयोजन पर राज्यक शिक्षामंत्री एवं शिक्षा अधिकारी दुआरा पठाओल गेल संदेश पढ़िकेँ ुनाओल गेल। एकरा बाद प्रारम्भ भेल खेल आ सांस्कृतिक कार्यक्रम। सांस्कृतिक कार्यक्रमक अन्तर्गत जलियावाला ागपर आधारित एकगोट नाटकक मंचन कयल गेल। एकर अतिरिक्त किछु छात्र देशभक्तिसँ सम्बद्ध अपन रचना ुनओलक। कार्यक्रमक अन्तमे विभिन्न क्षेत्रमे उत्कृष्ट रहल छात्र लोकनिकेँ प्रमुख समाजसेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री ाजाराम प्रसादक हाथेँ सम्मानित कयल गेल। समारोहक अन्त छात्रगणक मध्य मधुरक वितरणसँ भेल।

राष्ट्रीय स्तर पर एहि पर्वक आयोजन दिल्लीक लालकिलापर होइत अछि। एहि समारोहकेँ देखबाक लेल अपार जनसमूह उमड़ि पड़ैत छै। प्रधानमंत्रीक आगमनक संगहि कार्यक्रमक शुभारंभ भऽ जाइत अछि। सेनाक तीनू अंग जल, थल आ नौ सेनाक टुकड़ी तथा एन.सी.सी. क कैडेट सलामी दऽ प्रधानमंत्रीक स्वागत करैत अछि। प्रधानमंत्री लाल किलाक प्राचीर पर निर्मित मंचपर पहुँचिकेँ जनताक अभिनन्दन स्वीकार करैत छथि। अओर राष्ट्रीय ध्वज फहरबैत छथि। ध्वजारोहण कालमे राष्ट्रध्वजकेँ सेना द्वारा एकतीस तोपक सलामी देल जाइत छै। तत्पश्चात् प्रधानमंत्री राष्ट्रक जनताकेँ धन्यवाद दैत छथि। संगहि राष्ट्रक भावी योजना सभपर सेहो प्रकाश दैत छथि। पछिला वर्षक पन्द्रह अगस्तसँ लऽ एहि वर्ष धरिक घटित घटनाक चर्चा करैत छथि। भाषणक समापनमे ओ तीन बेर 'जय हिन्द' क घोष करैत छथि। जकरा ओहिठाम उपस्थित जनसमूह जोरगर स्वरमे दोहरबैत अछि। एहि अवसरपर लालकिला नवकनिञा जकाँ सुसज्जित रहैत छैक।

छात्र आ अनुशासन

आधुनिक युगमे छात्र जीवनक महत्त्व सर्वोपरि अछि। एहि जीवनक उपयोग एवं सफलतापर भावी जीवन निर्भर करैत अछि। एहए अवधि ओ आधारशिला थिक जाहि पर भविष्यक सुख-सुविधाक इमारत ठाढ़ कयल जाय सकैत अछि। जँ मनोयोगसँ, तपस्याक भावनासँ ईमानदारीपूर्वक ई जीवन ईटकेँ राखल जायत आ जेहन नीक बनाओल जाएत तेहन भवन होएत। ई छात्र पर स्वयं निर्भर करैत छनि जे ओ खोपड़ी, खोली आ कि अट्टालिका निर्माण करय चाहैत छथि। जे एहि जीवनक उचित ढंगसँ सदुपयोग करताह दैनिक जीवन स्वतः सफल भऽ जेतनि। आ एहि जीवनकेँ सफल बनेबाक लेल अनुशासन परम आवश्यक अछि। अनुशासन छात्र जीवनक रीढ़ थिक आ सहजहि अनुमान करबा योग्य अछि जे रीढ़ जेहन निर्बल अथवा सबल रहतैक मानवक शरीर तेहने निर्बल वा सबल हेतैक।

सम्बन्धित नियमक पालन अनुशासन कहबैत अछि। नियम उपनियमक शृंखलामे बान्हल जीवनकेँ अनुशासित जीवन कहि सकैत छी। अनुशासनक अर्थ भेल वैयक्तिक सामाजिक एवं प्रशासनिक नियमक पालन करब। नियम एवं शृंखला प्राकृतिक विधान थिक। एक दोसरसँ बद्ध राखयबला सूत्र नियम शृंखलाक नाम थिक। प्रकृति सेहो ओहि अदृश्य सूत्रधारक अनुशासनसँ अनुशासित अछि। तेँ ने जाड़मे धान आ ग्रीष्ममे आम होइत छैक। दिनहिमे सूर्य आ रातिहिमे चन्द्रमा ओहि विराटक प्रतिदिन आरती करैत छथि। सन्ध्या होइतहि राति रानी असंख्य तरेगनकेँ छिड़िआ दैत छथि आ भोर होइते नुकाय रहैत छथि। पृथ्वी अपन चक्रपर अविराम गतिएँ घुमैत रहैत अछि। सब की थिक? नियन्ताक अनुशासनमे आबद्ध प्रकृतिक कार्यकलाप।

मनुष्य सेहो प्राकृतिक कार्यकलाप एवं ओकर प्रतिक्रियाक एकटा फल थिक। तेँ मानव जीवनमे सेहो अनुशासनक बड़ महत्त्व छैक। अनुशासन सफल जीवनक कुंजी थिक। जखन कोनहु स्तरसँ अनुशासन भंग हैत, उच्छृंखलता आ विरूपता पसरि जायत। जनजीवन अस्त-व्यस्त भऽ जायत। परिवार, समाज एवं राष्ट्रक स्वरूप सुन्दर आ सुव्यवस्थित राखबाक लेल माता-पिता संतानपर, शिक्षक छात्रपर, अफसर सैनिकपर आ सरकार अपन कर्मचारीपर अनुशासनक द्वारा नियंत्रण राखि सकैत अछि। अनुशासन समाजक धुरी थिक। आ तेँ वृद्ध पिताक वक्र भौंह देखिते युवा आ शक्तिशाली पुत्र सहमि जाइत छैक। माय-सासुक कड़गर रुखि बेटी-पुतोहुकेँ घरमे नुकाकेँ बैसबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छैक। दुबरो-पातर शिक्षकक एकटा फटकार वर्गक समस्त छात्र-छात्राकेँ स्थिर भऽकेँ बैसा दैत छैक। कमांडरक एक स्वरपर सैनिक प्राणोत्सर्ग करबाक हेतु उद्यत भऽ जाइत छैक। की ई बलसँ होइत छैक? ई मात्र अनुशासनक भावनासँ।

ओना तँ जीवनक हर क्षणमे अनुशासनक महत्त्व प्रत्येक व्यक्तिकेँ छैक किन्तु आइ छात्र लोकनिक अनुशासनहीनता पारिवारिक असामाजिक सीमासँ टपि राष्ट्रीय रूप धारण कऽ लेने अछि। देशव्यापी भऽ रहल अछि कखनो काल तँ इएह बुझना जाइत अछि जे शिक्षकक ई समस्त व्यापार जेना पढ़ाई, पोथी, परीक्षा, परीक्षाफल आदि सभ मिथ्या आडम्बर थिक। ई जटिल समस्या देशकेँ क्षुब्ध, समाजशास्त्रीकेँ समाधान हेतु आकुल आ शिक्षा शास्त्री

चिन्तकेँ, हतप्रभ, नेतागणकेँ विस्मित आ नागरिक जीवनकेँ त्रस्त, क्षुब्ध एवं अशान्त कएने अछि। एकर समाधान हेतु कतेक समितिक गठन होइत अछि। छात्रगणक अनुशासनहीनताक बाढ़ि वेगसँ बढ़ि रहल अछि। ई सबहिक हेतु अत्यन्त दुःखप्रद एवं भयप्रद स्थिति अछि।

छात्र लोकनि युवा थिकाह। उत्साही छथि। हुनकामे अपार शक्ति छनि। अभाव छनि मात्र विवेकक। ओ लोकनि विवेकशील कम होइत छथि। जलकेँ जँ उचित दिशा नहि देल जेतैक तँ ओहिमे बाढ़ि अयबे करतैक चाहे ओहिसँ जे अस्तव्यस्तता वा प्रलय किंवा विनाश होइक। ओकरामे शक्ति छैक, ओकरा सही दिशा चाहबे करी। सएह दशा छात्रक छनि। हुनका सोझाँ कोनो ठोस आ रचनात्मक कार्यक अभाव छनि। ओ अपन भविष्यकेँ अन्धकारपूर्ण बुझैत छथि। समय-समयपर राजनीतिक नेतागण सेहो अपन क्षुद्र स्वार्थक पूर्तिक हेतु ओहो अपार शक्तिक दुरुपयोग कए लैत छथि। जहिना घरमे बान्हल सरिता कखनोकेँ विशृंखल भऽ उठैत अछि तहिना अदम्य उत्साह आ सामर्थ्यसँ युक्त छात्र वेगवती नदी सदृश तटकेँ छिन्न-भिन्न करैत, तोड़ैत-फाड़ैत विशृंखलित करैत बेचैन आ लक्ष्यहीन भऽ उठैत छथि। आइ आवश्यकता छल जे छात्र लोकनिक सामूहिक शक्तिक उपयोग सामाजिक तथा राष्ट्रीय हितमे कयल जाइत। से नहि कऽ राजनीतिक दाव-पेंचमे मोहराक रूपमे प्रयोग कयल जाइत छनि।

परिवार, समाज,देश, विद्यालय, महाविद्यालय वा जतय धरि दृष्टि जाय तकर दुर्गन्धपूर्ण वातावरण छैक। किछु नीक केर आशा करब कठिन अछि। आइ ओहि माता-पिता, शिक्षक, नेता वा आन कोनो प्रकारक अभिभावक छुच्छ भाषाक की प्रभाव पड़तैक जे स्वयं चोरि आ पैरवीसँ परीक्षामे उत्तीर्ण भेल होअय-जे भूतमे तथाकथित हीरो छल-आ आइयो अछि-जे आइयो गुण्डागर्दी कऽ वा गुण्डा राखि अपन अस्तित्व कायम रखने अछि।

हम तँ कहब जे आजुक सड़ल पिलुसँ बजबज करैत पारिवारिक, सामाजिक आ राजनीतिक परिवेशमे अनुशासन शब्द अर्थहीन सिद्ध भऽ रहल अछि। अनुशासन-हीनताक जटिल समस्यामे मात्र छात्र लोकनि भागी नहि छथि। 'छात्रगण जतबो धैर्य ओ अनुशासन रखने छथि-ओ धन्यवादक पात्र छथि।

आइ छात्र आ अनुशासनक समस्या गंभीर अछि। एहि दिशामे सरकार, अभिभावक, समाजशास्त्री, शिक्षाशास्त्री आ वयस्क लोकनिकेँ गम्भीरतापूर्वक चिन्तन एवं मनन कऽ तदनुकूल आचरण करबाक चाही। छात्र लोकनिक मध्य सत्य, निष्ठा, लगन, चैतन्य एवं स्वस्थ्य वातावरणक सृजन करय पड़त। हुनक रुचिक अनुकूल शिक्षण व्यवस्था, सुयोग्य एवं चरित्रवान शिक्षक तथा भविष्यक प्रति निश्चिन्तताक व्यवस्था करय पड़त।

❑❑❑

समाचार पत्र

समाचार पत्र आधुनिक युगक परिवेशमे एकटा आवश्यकता थिक। बुद्धिजीवी लोकनि चारि टाकाक समाचार पत्र कीनि देश-विदेशक गतिविधिक सम्बन्धमे अपन जिज्ञासाकेँ शान्त करैत छथि। बहुतो गोटेकेँ तँ समाचार पत्र पढ़बाक तेहन नशा रहैत छनि जे ओ सुति-उठिकेँ चाहक चुस्कीक संग समाचार पत्रक आवश्यकताक अनुभव करैत छथि। घरे-घर संसारक समाचार पहुँचयबाक श्रेय समाचार पत्रकेँ छैक।

समाचार पत्र कतेक तरहक होइत छैक-दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक आ मासिक। दैनिक समाचार पत्र प्रतिदिन बहराइत छै। ई बड़ उपयोगी होइत अछि। ई प्रतिदिन ताजा समाचार दैत अछि। साप्ताहिक, पाक्षिक वा मासिक पत्रिकामे बासि समाचार होइत अछि। ओहिमे कथा-पिहानी, विज्ञापन आदि अधिक रहैत अछि। एहि विकासक युगमे तँ तुरत समाचारक आकांक्षा रहैत छैक। ताहि हेतु दैनिक समाचार पत्र सएह उपयुक्त अछि। आ तँ एकर विक्रय सेहो बहुत होइत छैक।

समाचार पत्रक विकास कतयसँ भेल ई कहब कठिन अछि। तखन एतबा आवश्यक जे ई समाजक आवश्यक अंग बनि गेल अछि। एकरा बिना लोकक ज्ञान अधूरा रहि जाइत अछि। कहल गेल छैक जे सेनाक बाढ़िकेँ रोकल जाय सकैत अछि। किन्तु विचारक तूफानकेँ रोकब असम्भव अछि। समाचार पत्र जनजीवनक लेल आवश्यक भऽ गेल अछि। अल्पो पढ़ल-लिखल लोक सभ प्रकारक गतिविधिसँ परिचित होमय चाहैत छथि। आ ई पत्रेसँ सम्भव होइत छैक। ज्ञानवर्द्धनमे समाचार पत्रक अपूर्व सहयोग अछि। छात्र लोकनिक हेतु तँ ई आओर उपयोगी अछि। हुनका लोकनिकेँ एहिसँ नित ज्ञान भेटैत छनि। छात्रक परीक्षाफल, समाजक हेरायल-भूतिआयल लोकक पता आदि विभिन्न प्रकारक सूचना एहि माध्यमसँ भेटैत छैक।

एतेक रास लाभ रहितहुँ समाचार पत्रमे दोष सेहो कम नहि अछि। समाचार पत्रक सम्पादक जँ योग्य आ पटु नहि होइत छथि तँ कखनहुँ-कखनहुँ अनर्थक सृजन भऽ जाइत छैक। कुत्सित एवं दूषित विचारक प्रकाशन भेलासँ लोकपर अधलाह प्रभाव पड़ैत छैक। समाचार पत्र विचार एवं तथ्यक संकलन थिक। एकरा निष्पक्ष रहबाक चाही। जँ समाचार पत्र राजनीति अथवा विभिन्न वाद आदिसँ प्रभावित रहैत अछि तँ समाचार पत्रक उद्देश्ये समाप्त भऽ जाइत छैक। निर्भीक सम्पादक जँ निष्पक्ष भऽ जाथि तँ विचारक मार्ग प्रशस्त भऽ सकैत अछि-ओ समाचार पत्र आ पत्र-पत्रिका उत्तम मानल जाइत अछि।

देशक उन्नतिक हेतु समाचार पत्र आवश्यक अछि। देशक उत्थान आ पतनक हेतु ई आधारस्तम्भ थिक। एकरा द्वारा जनमतक निर्माण होइत छैक। जँ समाचार पत्र प्रतिबन्धरहित एवं विचार सन्तुलित, निष्पक्ष आ सत्यनिष्ठ रहत तँ देशक उद्धार भऽ सकैत छैक। ई लोकक सभ्यता ओ संस्कृतिक प्रतीक, मानव कल्याणक मूलमन्त्र थिक।

□□□

विज्ञानक चमत्कार

आजुक युग विज्ञानक युग थीक। एकर चमत्कार विश्वकेँ आश्चर्यित कए दैछ। एहेन उन्नति विज्ञानक एहिसँ पूर्व नहि भेल छल। वस्तुतः, ई युग विज्ञानक स्वर्णयुग थीक। एखन विमानमे बैसिकए लोक आकाशमे बिहार कए सकैछ। विदेशयात्रा सुगम आ अल्प समयापेक्षी भए गेल अछि। शीततापनियंत्रण लोककेँ अपूर्व आनन्द प्रदान करैछ। घर बैसल लोक विश्वक समाचारेटा नहि सुनैछ, अपितु संगीत सुनबाक संग संगीतज्ञक स्वरूपक अवलोकन कए आनन्दविभोर भए जाइछ। दूरस्थ मित्रसँ टेलीफोन आ ट्रंक पर सम्भाषण कए लोक सामीप्यक अनुभव करैछ। क्षरकिरणक आविष्कार आ रोगविनाशक औषधिक अन्वेषण विज्ञानक चमत्कारकेँ स्तुत्य बना देने अछि। पुस्तक-प्रकाशनमे सुविधा, चलचित्रक दर्शनजन्य मनोरंजन आ शिक्षाक प्रसार आ प्रचार वर्तमान विज्ञानक विशेषताक बोधक थीक। एतबए नहि, एकर सहायतासँ चन्द्रलोक यात्रा सम्भव भए भेल अछि।

एहि विज्ञानक चमत्कारक आधार अछि वाष्प, गैस, विद्युत आ ईथर। एहि आधारसँ सहायता पावि मानव अपन ज्ञानक विकास हेतु उद्यत भेल अछि। आ ओ प्राकृतिक वस्तुपर अधिकार प्राप्त कए चुकल अछि। एहि तरहक चमत्कारपूर्ण विज्ञानक मुख्य अंग अछि पदार्थविज्ञान, रसायनविज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, ज्योतिषविज्ञान आदि। एकर उन्नतिक श्रेय छन्हि वैज्ञानिककेँ जे बड़ कर्मठ, परिश्रमी आ जिज्ञासु होइ छथि। ओ प्राकृतिक सत्यकेँ ताकिकए संसारक समक्ष समुपस्थित करब अपन कर्त्तव्य बुझै छथि। विज्ञानक बलेँ असम्भवो कार्य सम्पन्न भए जाइछ।

आजुक युगमे वैज्ञानिक आविष्कारसँ लोक दंग भए गेल अछि। रेल, मोटर, जहाज, वायुयान, रॉकेट, टेलीविजन, तार, टेलीफोन, बिनु तारक तार, रेडिओ, केमरा, मुद्रणयन्त्र, क्षरकिरण, ग्रामोफोन, बिजुलीक पंखा, प्रकाश, डायनामाइट, डाइविंग बेल, लिफ्ट, लाउडस्पीकर, वस्त्र बुनबाक मशीन, बम, अणुबम, गैस, ट्रैक्टर, पम्पिंगसेट, खाद, ट्रंक, कम्प्यूटर, रॉबॉट आदि असंख्य आविष्कार विज्ञानक प्रगतिक प्रतिपादन थीक। एकर असरि राजनीति, व्यापार, विद्या, कला आदि सबहि क्षेत्रमे व्याप्त अछि। ताहिपर नित नवीन आविष्कार आ अन्वेषण देखि अनुमान नहि लगाओल जा सकैछ जे विज्ञानक चमत्कार कतेक बढ़ि गेल।

एहिसँ लाभो अनेक अछि। अल्प अवधिमे लोक एक स्थानसँ दोसर स्थान सुविधासँ जा सकैछ। क्षणभरिमे विश्वक समाचार लोक घरहि पर रहिकए ज्ञात कए सकैछ। रेडिओसँ विदेशी समाचारक संग मनोरंजन होइछ। टेलीविजनक सहायतासँ लोक अन्य स्थानमे नृत्यगीतादिमे भागलेनिहार व्यक्तिक शब्द आ गाने टा नहि सुनैछथि, अपितु ओहि व्यक्ति सबहक स्वरूपक साक्षात्कार करैत छथि। नवीन ओषधिक अनुसंधान आ नवीन यंत्रक पता लोककेँ लगैछ। क्षरकिरण, विद्युतसेवा, चीरफाड़, सुई आदि वैज्ञानिक साधनसँ चिकित्सामे विशेष लाभ प्राप्त होइछ। डाइनामाइट सहायतासँ पहाड़केँ फूकिकए उड़ा देल जाइछ। डाइविंग बेलसँ समुद्रसँ पानि निकालल जाइछ। गगनचुम्बी अट्टालिकामे अथवा गहींड़ खानमे लिफ्टसँ चढ़बा आ उतरबामे पूर्ण सहायता भेटैछ। लाउडस्पीकर विचारकेँ स्पष्टकए

वणगोचर करएबामे महान् सहायक होइछ। कृत्रिम वर्षासँ अनावृष्टिजन्य कष्ट दूर कएल जाइछ। मुद्रणयंत्र पुस्तक काशनमे सुविधा प्रदान करैछ। वस्त्रमिलसँ वस्त्रोत्पादनमे सहायता भेटैछ। दूरदर्शक यन्त्रसँ दूरस्थ आ अनुवीक्षणयंत्रसँ त्यन्त लघु वस्तु देखल जा सकैछ। चलचित्रसँ रूपक प्रत्यक्षीकरण आ मनोरंजन होइछ। चीनीक उत्पादनमे मिलसँ ायता प्राप्त होइछ। विद्युतसँ प्रकाश, वायु, पानि आदि अनेक वस्तुक प्राप्ति सुलभ भए जाइछ। एहि तरहेँ विज्ञानसँ नवक बड़ उपकार भेल अछि।

परंच एहिसँ हानियो थोड़ नहि होइछ। अणुशक्तिक संहारकारी विस्फोटसँ धनजनक विनाश होइछ। मशीनक लती होइछ। फलतः, शारीरिक श्रमक ह्रास होइछ; बेकारीक समस्या बढ़ैछ। विलासिताक साधनक प्राचुर्यसँ लोक क संग स्वास्थ्यपर्यन्त नष्ट कए लैछ। एहिसँ गृहउद्योगकेँ क्षति पहुँचैछ। भौतिक पदार्थक बोलबालाक कारणेँ ध्यात्मवादक विनाश होइछ। धर्मक प्रति मानवक मनमे अविश्वास जड़ि जमा लैछ। मानवता विनाश दिशि दौड़ैछ। द्युतसँ प्रकाश भेटैछ मुदा प्राणहानि होइछ। विस्फोटसँ भरल-पुरल ग्राम तथा नगर क्षणभरिमे खाक भए जाइछ; सब म शून्य श्मशान राज्य करैछ।

तथापि जे किछु हो विज्ञान सुखद आ दुखद दुनू अछि। एहिपर कोनहु देश आ समाजक उत्थान-पतन निर्भर करैछ। श्वकल्याण आ मानवताक रक्षाहेतु वैज्ञानिक नियन्त्रण आवश्यक अछि। एकर उचित आ अनुचित प्रयोगक रदायित्व मनुष्यहि पर निर्भर करैछ। मानवक दृष्टिकोणमे सुधार आवश्यक अछि। एहि हेतु आत्मशुद्धि आ ध्यात्मवादक विकासक आवश्यकता छैक। भौतिकवाद मानवक नैतिक पतन आ अधर्मक मूल कारण थीक। ज्ञानक ताण्डवनृत्य रोकए हेतु भौतिकवादी जगत्सँ आध्यात्मिक जगत् दिशि डेग बढ़ाएब आवश्यक अछि। सदुपयोग ने विज्ञान अपन अलौकिक चमत्कारक वरदानमे रहत-अभिशाप नहि।

□□□

चलचित्र

आजुक युग विज्ञानक स्वर्णयुग थीक। एकर महत्व भूमितलसँ नभमण्डलधरि पसरल अछि। विज्ञानक देन महान अछि। कार्यवस्तु दुःखसन्तप्त जनताक सुखक साधन जनमनोहारी मनोरंजनक उद्‌गम आ साधारण शिक्षाक प्रबल स्त्रोत थीक चलचित्र जे धीरगम्भीर मानवपर्यन्तक चित्तकेँ अपन चारु चमत्कारसँ चंचल बना दैछ। एकर आविष्कारक कथा बड़ आकर्षक अछि।

सत्रहम शताब्दी छल। किचनर महोदयक ध्यान चित्र देखएबाक दिशि आकृष्ट भेल। मोमब्रिम साहेब स्थिर छायापटक आविष्कार कएल। अमेरिका निवासी एडीसन साहेब 1920 ई० मे छायाचित्रकेँ चलबा-फिरबाक शक्ति प्रदान कएल। दादा फाल्के भारतमे एकर प्रवेश कराओल। 1913 ई० मे प्रथम भारतीय फिल्मक निर्माण भेल। प्रारम्भमे सब चित्र मूक रहै छल। 1928 ई० मे एहिमे वाणीक संचार भेल। ताहि समयसँ चित्र आओर आकर्षक आ प्रभावोत्पादक भए गेल।

एहि प्रदर्शनक प्रधान अंग बनल संगीत, नृत्य, कथा आ अभिनय। एहि हेतु आबालवृद्ध, साक्षर-निरक्षर सबहि व्यक्ति चलचित्र देखबाक लेल उत्साहित भेलाह। प्रदर्शनक स्थान स्थायी बनल। एक पैघ भवनमे प्रदर्शनक प्रारम्भ भेल। एहि आनन्दभवनमे प्रवेश पएबाक हेतु दर्शककेँ श्रेणीक निश्चित द्रव्य दए आज्ञापत्र प्राप्त करए पड़ै छन्हि। शान्तिक हेतु पूर्ण प्रबन्ध रहैछ।

फिल्म-निर्माणमे बहुत समय लगैछ। अनेको स्थानमे आवश्यक आ अपेक्षित चित्रक फोटो लेल जाइछ। बहुतो व्यक्ति एहि कार्यमे सम्मिलित होइ छथि। सबहि प्रकारक व्ययमे लाखो रुपैआ लागि जाइछ।

चलचित्र एक क्रान्ति कए देलक अछि। एकर प्रसार दिन दूना राति चौगुना भए रहल अछि। पैघ नगरसँ छोट शहर धरि एकर धारी लागल अछि। शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन, सबहि श्रेणीक व्यक्ति एकर प्रदर्शन देखि मनोरंजनक संग शिक्षा प्राप्त करै छथि। परंच छात्रक लेल ई विशेषतया मनोरंजनक केन्द्र बनि गेल अछि। एकर मनोहारी दृश्य, मधुर संगीत, अनुपम कथा आ विविध विषयक चारुचित्र दर्शकक मानस-सरमे भावभ्रमर उत्पन्न कए भौतिक जगत्‌सँ अत्यन्त दूर कमनीय कल्पनाक ललित लोकमे 'सत्यं शिवं सुन्दरम्‌'क अभिनव अनुभवक अभ्यन्तर अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करैछ। अतः एकर व्यापकता सर्वविदित अछि।

एहिसँ लाभो अनेक होइछ। मानव पेटक भूख शान्त भेलाक उपरान्त किछु आओर चाहैछ जाहिसँ ओकर मानसिक भूख मेटा सकए। चलचित्र एहि कार्यमे सम्यक् सहाय्य प्रदान करैछ। सर्वांगीण मनोरंजन पूर्णरूपेण सफल होइछ। शिक्षाक प्रचारमे सुगम, सुबोध आ सर्वप्रिय साधन उपस्थित कए चलचित्र अपन चारुकात परिचय दैछ। प्रत्यक्ष दृश्यक अवलोकनसँ व्यावहारिक शिक्षा भेटैछ जाहिसँ मानवक रचनात्मक शक्ति जागि जाइछ आ रचनात्मक कार्य लेल अभिरुचि उत्पन्न होइछ। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि प्रकारक सुधारकार्य सुलभ रीतिएँ सम्भव होइछ।

ज्ञापन आ प्रचारक ई प्रधान साधन भए गेल अछि। एहिसँ व्यापारमे बड़ सुविधा भेटैछ। एहि वयवसायमे सैकड़ो क्ति सम्मिलित भए जीविकोपार्जन कए बेकारी-समस्याकेँ सोझरबै छथि।

तथापि एहिसँ सम्भावित हानि नगण्य नहि अछि। अधिक काल चलचित्रक अवलोकन कएनिहारक नेत्रज्योति क्षीण ए जाइछ। अधलाह आ अधम चित्रक अवलोकनसँ चरित्र भ्रष्ट होइछ। कुवासनापूर्ण प्रदर्शनसँ विशेषतया नवयुवक नवयुवती कुवासनाक मोहमे पड़ि अपन आचार-विचारकेँ तिलांजलि दए कुलमे कलंकक कालिमा लगबै छथि। हिसँ आचारभ्रष्टता समाज आ राष्ट्रक हेतु हानिकारक रोग प्रमाणित होइछ। एकर चाट ततेक अधलाह होइछ जे दर्शक र्त्तव्याकर्त्तव्यक विचारकेँ ताखपर राखि धन, धर्म, समय आ साधनक अपव्यय करैछ। एहि प्रकारेँ चलचित्र व्यक्ति, माज आ राष्ट्रक उन्नतिमे बाधक बनैछ।

वस्तुतः, चलचित्रसँ लाभ ओ हानि दुनू होइछ। सदुपयोग कएनिहारकेँ लाभ आ दुरुपयोग कएनिहारकेँ घाटा हाथ लैछ। एकर प्रकाशनक आज्ञा देनिहार अछि सरकार। अतएव उचित थीक जे सरकार अरुचिपूर्ण, अश्लील आ निकारक फिल्मक आ अभिनयकेँ रोकए। धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आ शिक्षाप्रद सिनेमाकेँ प्रोत्साहन भेटए। नेमा-भवन केवल मनोरंजनक केन्द्र नहि, अपितु मानवकल्याणक भावनासँ ओतप्रोत सार्वजनिक स्थान बनए। एहि सरकार आ जनता दुनूकेँ साकांक्ष रहब उचित थीक।

रेडिओ

आजुक युगमे विज्ञानक विकास दिनानुदिन आगाँ बढ़ि रहल अछि। एहिसँ असंभवो कार्य सम्भव देखि पड़ैछ। केओ नहि अनुमान कए सकै छल जे घरहि बैसल-बैसल हजारो कोसक दूरीपर गाओल गीत आ देल भाषण तत्कालहि अक्षरशः सूनिकए ज्ञान आ आनन्द प्राप्त कए सकत, मुदा आइ ओ सुगम रीतिसँ सानन्द सुनल जाइछ। एहि आश्चर्यजनक घटनाचक्रक आधार अछि रेडिओ अर्थात् ध्वनिक यंत्र।

एकर जन्मदाता भेलाह इटलीक मारकोनी साहेब। हुनकहि द्वारा एकर आविष्कार सन् 1929 ई० मे भेल। एकर सर्वप्रथम प्रचार इंगलैण्डमे भेल। प्रचार दिनानुदिन बढ़ए लागल। आइकाल्हि ई गामघरमे पसरि गेल अछि।

एकर सिद्धान्त बिचित्रे अछि। बेतारक तार एकर आधार अछि। जखन केओ व्यक्ति बजैछ तखन ओहि व्यक्ति द्वारा उच्चारित शब्दसँ वायुमण्डलमे कम्पन होइछ ओ कम्पन द्रुतगतिसँ भ्रमण करैछ। यंत्र ओकरा धारण करैछ। ओहिसँ ध्वनि उत्पन्न होइछ। ओएह ध्वनि लोक सुनैछ। शब्द आ ध्वनिक स्थानकेँ जोड़ए हेतु तारक आवश्यकता नहि होइछ।

एकर मुख्य अंग थीक ब्रॉडकास्टिंग। एहि लेल स्थान नियत रहैछ। ओतएसँ समाचार प्रेषित कएल जाइछ। एहि कार्यक लेल एक स्टेशन रहैछ जे ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन कहबैछ। समाचार वायुपूर्ण घरमे एक यंत्रक आगाँ कहल जाइछ। ओहि यंत्रक नाम अछि 'माइक्रोफोन'। वायु द्वारा ओहि समाचारक शब्द कम्पन दूर देश तक लए गेल जाइछ। ओहि दूरस्थ स्थानपर लोक रडिओसेट रखैछ। जाहि स्टेशनक विषय ज्ञात करबाक इच्छा होइछ स्टेशनक स्थानपर लोक रेडिओक तार स्थिर कए दैछ। समाचार एहि तरहेँ सुनबामे अबैछ जेना केओ व्यक्ति निकट स्थानमे बैसिकए बाजि रहल अछि।

एहिसँ अनेको लाभ होइछ। देशविदेशक वार्त्ता भेटैछ। विभिन्न राग-रागिनीमे विभिन्न स्थानक विभिन्न व्यक्ति द्वारा गाओल गीत मधुरता श्रवण कए लोक मनोरंजनक संग ज्ञान प्राप्त करैछ। रेकार्डक गीत असीम आनन्द प्रदान करैछ। कलापूर्ण कविता, कमनीय कथा, नूतन नाटक, अभिनव आलेख आदिक स्पष्ट पाठ लोक घरहि बैसल सुनैछ। फलतः, लोक अपन दुःख वा व्यापक विपत्ति-गाथासँ मुक्त भए आनन्दक तरंगमे डुबकी लगबए लगैछ। ई शिक्षाप्रचारक क्षेत्रमे क्रान्ति उत्पन्न कएलक अछि। पैघ-पैघ विद्वानक भाषण सुनि लोक महान् लाभ प्राप्त करैछ। अशिक्षित पुरुष तथा स्त्रीकेँ शिक्षित बनएबामे सहायता भेटैछ। कृषि, गृहस्थी, सामाजिक आ भौगोलिक ज्ञानक विकास आ प्रचार होइछ। मुख्यतया छात्रसमाजकेँ शरीरविज्ञान, कृषि, भूगोल, यात्रा आदि विषयक भाषणसँ अपूर्व ज्ञान प्राप्त होइछ। शासनसम्बन्धी कानून, नियम आ व्यवस्थापक प्रचारसँ नेतालोकनिकेँ शासनमे सुविधा भेटैछनि, विज्ञापन आ प्रचार-कार्य समुचित ढंगसँ सर्वत्र भए सकैछ। व्यापारीगणकेँ बाजारक चढ़ैत आ उतरैत भावक ज्ञानसँ आशातीत लाभ भेटैछ।

रेडिओक संग टेलीविजनक मेलसँ लोक गबैया आदिक संगीत सुनबाक संग स्वरूप पर्यन्तकेँ प्रत्यक्ष देखि सकैछ। सबसँ विशेष लाभ होइछ विश्वक घटनाक ज्ञान आ ओहिसँ विश्वकेँ एक सूत्रमे बान्हबाक सुविधा।

डिओसँ हानि बड़ थोड़ होइछ। धनी आ विलासी व्यक्ति धनक मोह छोड़ि दैछ। ओ समयक मूल्य बिसरि जाइछ। वस्तुविशेष-सम्बन्धी भाषणक द्वारा जनताकेँ उमाड़ल जा सकैछ जे महाघातक सिद्ध होइछ।

डिओ सर्वहितकारी अछि। हानिकारक अंशक बहिष्कारसँ सोनामे सुगन्धि आबि जाइत। एकर बाढ़िसँ विश्वकेँ सूत्रमे बान्हिकए ज्ञानक प्रत्येक क्षेत्रमे विकास प्राप्त कएल जा सकैछ। अतएव सुखी-सम्पन्न व्यक्ति एहिसँ लाभ धि।

□□□

स्त्रीशिक्षा

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' उक्ति सर्वमान्य अछि। वस्तुत: जननीक तुलनामे किछु नहि आबि सकैछ। हिनक स्थान स्वर्गहुसँ ऊपर अछि। हिनकहि महत्त्व अछि जे भूमि हिनकर सम्पर्क प्राप्त कए स्वर्गहुसँ बढ़िकए महत्त्वपूर्ण भए जाइछ। हिनक स्थान समाजमे सदा पूज्य अछि। उक्ति प्रसिद्ध अछि 'यत्र नार्यो हि पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'। अत: सुख सम्पत्ति हिनक पूजाक प्रसाद थीक। एतबए नहि, यदि सामाजिक दृष्टिसँ देखल जाए तँ ई राष्ट्रमाता थिकीह, समाजक मानप्रतिष्ठा रखिनिहारि स्त्री थिकीह, जीवनकेँ पूर्ण कएनिहारि पुरुषक अर्द्धांगिनी थिकीह, अपन कला आ कुशलतासँ गृहक भार उठाबए हेतु गृहिणी थिकीह, पतिक जीवनकेँ सफल आ सानन्द बनओनिहारि पत्नी थिकीह, विभिन्न रूप अपनाकए भवनक भव्यताक रक्षा कएनिहारि स्वामीक अनुगामिनी भामिनी थिकीह आ भावी सन्ततिकेँ सफल नागरिक बनओनिहार समाजक जननी थिकीह। 'बिनु घरनी घर भूतक डेरा' सर्वत्र प्रचलित उक्ति अछि। हिनक स्थान समाजमे बड़ पैघ आ पूज्य अछि। अतएव एहि गृहलक्ष्मीक शिक्षा दिशि ध्यान देब समाजक सर्वप्रथम कर्त्तव्य थीक।

समाजक प्रत्येक व्यक्ति जनैछ जे मानवजीवनरूपी रथक दू पहिआ अछि-पुरुष आ स्त्री। यदि दुनू पहिआ समान गुणवान, बलवान आ कार्यक्षम रहत त जीवनरथ दनदनाइत चलत आ कहिओ ओ अपटी खेतमे नहि खसत। परञ्च आजुक युगमे स्त्रीशिक्षा दिशि दृष्टिपात करितहि रोमांच भए जाएत। शिक्षासँ वंचित राखि स्त्रीगणकेँ जड़बुद्धि बनाकए पशुवत् कार्य लेब समाज आ राष्ट्रक हेतु महान् हानिकारक थीक। अतएव स्त्रीशिक्षाक प्रचार आ प्रसार अत्यावश्यक अछि। एहिसँ अनेको लाभ होएत।

अशिक्षिता स्त्री पशुतुल्य रहैछथि। ज्ञानक गुण रहितहुँ शिक्षाक अभावमे हुनका ज्ञानक आलोक नहि भेटैछनि अज्ञानता हुनका जकड़ि लैछन्हि। परञ्च ज्ञानक प्रकाश पबितहि हुनक सद्विवेकनी बुद्धि जागि जाएत। हुनक संकुचित हृदय उदार भए जाएत। स्वार्थभावना विलीन होएत। परमार्थ परमपद प्राप्त करत। हुनका नीक-अधलाहक तथा शिष्टाचारक शिक्षा भेटतनि। ओहिसँ सामाजिक स्थिति सुधरत। गृहकार्यमे ओ कुशलता पओतीह। ओ आय-व्ययक हिसाब राखि पारिवारिक आर्थिक समस्याकेँ सुधारतीह। घरक व्यवस्था बदलत। पुरुषक जीवन पुण्यमय भए जाएत। हिनक स्वच्छताक सुरक्षा आ गृहकार्यक उत्तम प्रबन्ध गृहकेँ सुख, शान्ति आ सामंजस्यक केन्द्र बनाकए धरतीपर स्वर्ग बसाओत। ओतए चिन्ता, व्यग्रता, दु:ख, फुट आदिक कलुषित भावनासँ मुक्त व्यक्ति सफल नागरिक बनबामे समर्थ होएताह। अतएव सबहि प्रकारक अभ्युदयक मूल शिक्षाक स्वरूप स्थिर करब परमावश्यक अछि।

यद्यपि आजुक युगमे समानताक अधिकार स्त्रीसहितकेँ भेटल अछि आ अनेको देशमे पुरुषसदृशे शिक्षाक व्यवस्था स्त्रीक हेतु अछि तथापि शिक्षाक स्वरूपक सम्बन्धमे विभिन्न मतक अवलोकन परमावश्यक अछि।

दुई प्रकारक मत देखि पड़ैछ-एक पश्चिमीय आ दोसर पूर्वीय। पश्चिमीय सभ्यताक अनुगामी आ व्यक्तिक
ार स्त्रीकेँ पुरुष सदृश शिक्षा भेटब उचित थीक, परंच पूर्वीय मतक अनुगामी व्यक्तिक भारतीय आचारविचार आ
-सहनक अवलोकन कएलासँ स्पष्ट भए जाएत जे स्त्रीशिक्षा पुरुषशिक्षासँ भिन्न हो। कारण, स्त्रीक स्थान अछि
अभ्यन्तर आ पुरुषक स्थान अछि मुख्यतया बाहर। स्त्रीकेँ गृहलक्ष्मी बनक छनि मुदा शिक्षामे साहित्य, संगीत,
आ गृहविज्ञान विषयक अतिरिक्त आन विषय आवश्यक अछि। शिक्षा प्राप्त करबाक लेल हिनका विद्यालय आ
विद्यालय जाएब आवश्यक अछि। ओ घरहिपर रहिकए सब वस्तुक ज्ञान अपनासँ श्रेष्ठ जन द्वारा प्राप्त नहि कए
छथि। संगहिसंग हिनका सर्वांगीण शिक्षा देबाक लेल शरीर आ स्वास्थ्यविज्ञान, गृहप्रबन्ध, कताई-सिलाई,
पालन, बालमनोविज्ञान आदि विषयक पूर्ण शिक्षा चाही।

अतः स्पष्ट अछि जे स्त्रीशिक्षा अत्यावश्यक अछि, मुदा विदेशी पद्धति विनाशकारी अछि। ओहि पद्धतिक
रण कए स्त्री अपन आचारविचारकेँ ध्वस्त कए समाज, देश आ राष्ट्रक अहित कएनिहारि नहि होथि। हुनका हेतु
त थीक जे ओ लीलावती, मैत्रेयी, गार्गी, विद्यावती, विश्ववधा, लोपामुद्रा आदि शिक्षिता भारतीय नारी बनथि। एहिसँ
समाजक, राष्ट्रक जननी स्त्री गृहलक्ष्मी बनि पृथ्वीकेँ स्वर्ग बनाबथि। मुदा आजुक परिवेशमे सर्वतोभावेन
क्षिता होयब आवश्यक अछि तखने बाल-बच्चाक भविष्य सम्हार सकतीह।

□□□

वयस्क-शिक्षा

अवस्थाक आधार पर मानवजीवन मोटा-मोटी चारि भागमे विभाजित कएल जाइछ-(1) बाल्यावस्था (2) किशोरावस्था (3) प्रौढ़ावस्था (4) वृद्धावस्था। एहिमे प्रारम्भिक दुई अवस्थामे साधारणतया शिक्षाक प्रारम्भ आ समाप्ति होइछ। एहि हेतु प्रारम्भिक अवस्थामे शिक्षासँ विमुख रहनिहार व्यक्ति जीवनभरि निरक्षर रहैछथि। एहि श्रेणीक वयस्क व्यक्तिकेँ साक्षर बनएबाक लेल जे शिक्षा देल जाइछ से थीक वयस्क-शिक्षा।

विचार कएलापर स्पष्ट रूपेँ देखि पड़त जे प्राणिमात्र जीवनमे सुख आ सुविधाक प्राप्तिहेतु लालायित रहैछ। दिनानुदिन उन्नति करबाक अभिलाषा मानव-मात्रक हृदयमे रहैछ। उन्नतिशील बनबाक हेतु व्यक्तिक समुदायक ध्येय होइछ जे समाजक सर्वांगीण विकास हो जाहिसँ समाजक प्रत्येक सदस्यकेर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक आ शैक्षणिक क्षेत्रमे उन्नति हो आ समाजक प्रत्येक व्यक्तिक शारीरिक, मानसिक आ आध्यात्मिक विकास हो जाहिसँ समाज समुन्नत बनल रहए, परंच संयोग एहन बिगड़ल देखि पड़ैछ जे लगभग 75 प्रतिशत जनता एखन धरि निरक्षर अछि जाहिमे वयस्क व्यक्ति अधिक छथि।

निरक्षरता व्यक्ति आ समाजक हेतु महान् शत्रु थीक। ई मानव के मानवतासँ विहीन बनाकए पशु श्रेणीमे राखि दैछ। फलतः, मानव जीवनमे कोनहु प्रकारक उन्नतिहेतु विचारविमर्शपर्यन्त करबामे अक्षम रहैछ। ई मानवजीवन हेतु महान अभिशाप थीक। एहिसँ राष्ट्रोन्नतिमे बड़ पैघ अड़चन उपस्थित होइछ। सामाजिक आ व्यावहारिक जीवनमे लिखापढ़ीक अवसरपर अशिक्षित व्यक्ति तीन कौड़ीकनहि रहैछ। अकसरहाँ निरक्षर भट्टाचार्य होएबाक कारणेँ धूर्त आ बेईमान व्यक्तिक पालामे पड़ने मनुष्य मारल जाइछ। देशविदेशक समाचारसँ अनभिज्ञ रहनिहार निरक्षर व्यक्ति कूपमण्डूक बनल रहैछ। आपसमे ईर्ष्या, द्वेष, कलह आ फूटकेँ आसन दए ओ समाजक विकासमे बाधक बनैछ।

अतएव जाधरि निरक्षरता पएर तोड़िकए घर-घर बैसल रहत ताधरि लोकक हृदयमे छोट कार्यलेल अनकर आगाँ झुकब आ कृतज्ञता स्वीकार करब व्यक्तिक हेतु आदरक विषय नहि थीक। विश्वक प्रगतिशील मंचपर अग्रसर भेल भारतक निवासीकेँ निरक्षर रहब कथमपि शोभनीय नहि होइछ। अतः सर्वतोमुखी विकास चाहनिहार भारत सन देशक लेल वयस्क-शिक्षाक प्रबन्ध परमावश्यक अछि।

देशकेँ उन्नत देखबाक लेल इच्छुक छल काँग्रेस। अतएव हाथमे प्रान्तीय सत्ता अबितहि सन् 1937 ई० तक निरक्षतानिवारण-आन्दोलनक आविर्भाव भेल। संयोगसँ डा० महमूद बिहारप्रान्तक शिक्षामंत्री भेलाह। ओ अपन शक्तिभरि जोर लगाओल। फलतः, आंशिक लाभ देशवासीकेँ आकृष्ट कएलक। एहि हेतु सन् 1947 ई० में स्वतंत्रत प्राप्त होइतहि सबहक ध्यान वयस्क-शिक्षा दिशि बढ़ल। शिक्षा-योजना बनल। एकर उद्देश्य स्थिर भेल। अतः प्रत्येक व्यक्तिकेँ समाजोपयोगी नागरिक बनएबाक निर्णय भेल। प्रान्तीय सरकारक योजनाक समर्थन आ कार्यान्वयनहेतु केन्द्रीय सरकार अपन निर्णय जनताक समक्ष उपस्थित कएल। एहि आधारपर सरकार योजना बनाओल जे 12 वर्षसँ 45

धिकि पुरुष आ स्त्रीकेँ साक्षारताक संग अनेक विषयक ज्ञान प्रदान कएल जाए। एहि ज्ञानप्रचारक हेतु नाटक, गीत, भाषण आ वार्त्तालापक माध्यम अपनाओल जाए।

ओहि उद्देश्यक पूर्त्तिलेल समाजशिक्षा पद्धति प्रस्तुत कएल गेल। ओकर निरीक्षण आ विकासमे सहायता प्रदान रबाक हेतु प्रान्त-प्रान्तमे समाजशिक्षा पदाधिकारीक नियुक्ति भेल। जनमनरंजक माध्यमसँ विभिन्न कलाक प्रदर्शन ा अनेकानेक विषयक ज्ञानदानहेतु मोदमण्डली बनल। ओ देशभरिमे घूमि-घूमि कए समजाकेँ विकास दिशि एबाक हेतु आकृष्ट कएलक। सामाजिक शिक्षाक केन्द्र खुजल। ओहि केन्द्रमे शिक्षार्थीक सुविधाहेतु सरकारक तक, नक्शा, श्यामपट्ट, लालटेन, खड़ी, झाड़न आ शिक्षाक भत्ता आदिक व्यवस्था कएलक।

सरकारक एहि प्रयाससँ देशकेँ बड़ लाभ भेल। अधिकांश व्यक्ति लिखब-पढ़ब आनि गेलाह। देशविदेशक ाचार पढ़ि आ वार्त्ता सूनि अपन स्थितिक सुधारमे ओ समर्थ भेलाह। समाजमे नवजीवनक संचार भेल। आलस्य, रुता, उदासीनता आ परतंत्रताक स्थानमे स्फूर्ति, निर्भयता आ स्वतंत्रताक भाव समाजकेँ समंगल बनएबा दिशि ग्रसर कयलक।

अत: स्पष्ट देखि पड़ैछ जे वयस्कशिक्षा योजनाक उद्देश्य बड़ उत्तम अछि। एहिसँ देश आ समाजकेँ लाभ भेल छि आ होइत रहत। फलत:, दिनानुदिन समाजक विकास होएत। परंच स्वार्थलोलुप व्यक्तिक दमन आवश्यक अछि हिसँ राष्ट्रीय धनक रक्षा आ सुव्यवस्था सम्भव हो। एहिसँ योजनाक सर्वांगीण विकासमे सहायता होएत। परंच कार्तहिपर पूर्णरूपेण अवलम्बित रहब उचित नहि, अपितु जनताकेँ हाथ बटाएब आवश्यक अछि। कारण, सरकारो त ताक बनाओल अछि आ जनताक सदस्य सरकारी सदस्य छथि। सभ मेलापर जनता सरकारक सहायता कए र्थलोलुप व्यक्तिकेँ पदच्युत कए ठोस योजनाक कार्यमे सहायक बनत जाहिसँ समाज, देश आ राष्ट्रक उन्नति एत।

□□□

श्रमदान

मानव-सभ्यताक संग लोकक आवश्यकता बढ़ल जा रहल अछि। समय थोड़ छैक आ बाधा अनेक। एहि लेल मनुष्य घबड़ा जाइछ। ओ केवल अपनहि पर निर्भर रहिकए आगाँ बढ़बाक विवश भए जाइछ। एहि स्थितिमे ओ हाथ पसारैछ आ दानक भीख मङैछ। ई दान आर्थिक, मानसिक आ शारीरिक होइछ। आर्थिक दानमे एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक हित लेल किछु द्रव्यक दान करैछ परंच ओकरा हृदय पसिझब अनिवार्य नहि रहैछ। मानसिक दानसँ मनुष्य मन नहि रहितहुँ परिस्थितिसँ बाध्य भए सुझाव उपस्थित करैछ जाहिसँ दान प्राप्तिकर्त्ताक मंगलक बोध होइछ। एकर महत्त्व तावत धरि रहैछ यावत धरि शारीरिक श्रमक संयोग नहि हो। शारीरिक दानमे हृदयक सहायताक बिनु काज नहि चलि सकैछ। एहि हेतु श्रम करए पड़ैछ। अत: स्पष्ट भए जाइछ जे सब दानक जड़ि थीक शारीरिक श्रम। एकर उद्देश्य रहैछ जे एहन वस्तुक उत्पादन हो जाहिसँ मनुष्यकेँ उपयोगिता भेटए। अतएव मानए पड़त जे श्रमदान उपयोगी वस्तुक उत्पादनहेतु प्रयास थीक।

एकर आधार अछि सर्वोदयक भावना। एहि सिद्धान्तक अनुसार कोनहु पियासल व्यक्तिकेँ जल दए जीवन बचएबामे सहानुभूति आ त्यागक भावना प्रबल रहैछ। योग्यतानुकूल उपयुक्त व्यक्तिकेँ कोनहु प्रकारक सहायता सम्भव देखि पड़ैछ। फलत: सरकारहीन सहयोगी समाजक निर्माण होइछ जे पारस्परिक सहयोग आ सहायता बलेँ जीवनक विविध आवश्यकताक पूर्त्तिमे सफल होइछ। पूँजीक हेतु सम्पति नहि प्रत्युत श्रम काज करैछ। इएह कारण छल जे संत बिनोवा श्रमदानक आरम्भ कताइसँ कएल। एहि यज्ञक तिथि रहल बापूक जयन्तीक दिन।

एकर उद्देश्य अछि अन्न आ जीवनक अन्य आवश्यक उत्पादन। उत्पादन मुख्यतया शारीरिक बल पर निर्भर करैछ। पूँजीपतिओ त निर्धन व्यक्तिक श्रम कीनि कए अपन सम्पत्ति बढ़बै छथि यद्यपि वास्तविक श्रम कएनिहार व्यक्ति भूखल रहैछ। मध्यमवर्गक व्यक्तिकेँ ने पूँजी छनि आ ने ओ श्रम करए चाहै छथि। ओ शारीरिक श्रमकेँ अपन प्रतिष्ठासँ हीन बुझै छथि। इएह कारण अछि जे समाजमे एहि वर्गक व्यक्ति सबसँ अधिक दुखी छथि। हिनका समक्ष आर्थिक संकट सदा समुपस्थित रहैछ। उपजामे त्रुटि होइछ। स्थिति बिगड़ल जाइछ। साधारण श्रेणीक व्यक्ति सहितमे त्रुटि देखि पड़ैछ। ओ श्रमसँ घृणा नहि करैछ प्रत्युत श्रमक नामपर जीवनयापन करैछ, परंच हृदयसँ शक्तिक अनुसार श्रम नहि करैछ। एहिसँ देशमे अभावे अभाव देखि पड़ैछ। एहि अभावकेँ दूर कएल जा सकैछ मुदा एकरा हेतु ने धनक आवश्यकता छैक आ ने सरकारी आज्ञाक। एकरा हटएबाक एकमात्र उपाय अछि श्रमदान।

एकर विकास तहिखन सम्भव अछि जहिखन मनुष्य श्रमदानक महत्त्वसँ परिचित भए जाए। एहिसँ लाभ अवश्यसम्भावी अछि मुदा आवश्यकता छैक जे लोक श्रमदानक आवश्यकताक अनुभव करए। ई त प्राणिमात्रक धर्म थीक। एहि हेतु कानून आ दण्डक विधान नहि, अपितु कर्त्तव्यक भावना रहब आवश्यक। तेँ प्रत्येक व्यक्तिक कर्त्तव्य भए जाइछ जे ओ शक्तिक अनुसार श्रमदान करए।

एहि हेतु प्रत्येक व्यक्तिक मनमे अभिरुचि उत्पन्न होएब अनिवार्य अछि। एतबए नहि, अनुकूल विचारो बड़ पैघ त्व रखैछ। श्रमदान एकतरफा दान नहि थीक। ई थीक पारस्परिक आ सामूहिक। यदि आइ एक व्यक्ति दोसर क्तिक ओतए श्रम करैछ त उचित थीक जे दोसरो व्यक्ति ओकरा ओतए श्रमदान करए। एतबए नहि, एकर महत्त्व त सँ अधिक बढ़ैछ यदि ई सामूहिक हो। एहि कार्यक लेल क्षेत्रो बड़ विशाल देखि पड़ैछ। अन्नसमस्याक समाधानहेतु ार भूमिकेँ खेतीक योग्य बनाएब अत्यावश्यक अछि। भारतभूमिकेँ उन्नत बनएबाक लेल ग्रामोत्थान करब नावश्यक अछि। एहि लेल सड़क बनाएब, नहरि कोड़ाएब, पुल बनबाएब, रेलवेक प्रबन्ध करब, इनार कोड़ाएब, ्यालय भवन बनबाएब आदि कार्य सुविधासँ श्रमदान द्वारा भए सकैछ। यदि जनता ध्यानस्थ हो त सबटा कार्य सम्भव छि। जनता श्रमदानकेँ अपनाकए अनायासहि सबटा कार्य सम्पन्न कए लेत। एकर उदाहरणमे कोशीक बान्ह सबहक क्ष प्रत्यक्ष अछि।

श्रमदान भूदानयज्ञक अगिला सीढ़ी थीक। एहिसँ सर्वोदयक कार्यमे सफलतापूर्ण सम्भावना देखि पड़ैछ। एहि हेतु ो जोरजबर्दस्ती नहि अपेक्षित छैक। एहि लेल आवश्यक छैक प्रेम आ सहयोग, जे हृदयक गुण थीक। एकर क्षेत्र न् अछि आ विकास अवश्यसम्भावी अछि मुदा आवश्यकता छैक लोकश्रमक महत्त्वकेँ बूझए। यदि ध्यानसँ देखल ए तँ ई श्रमक राष्ट्रीयकरणहेतु चतुर डेग थीक। कोशीयोजना प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित करैछ जे महान् कार्य श्रमसँ भ रीतिएँ सम्पन्न भए जाइछ। एहि हेतु समाजक सब वर्गक मनुष्यक कर्त्तव्य होइछ जे ओ श्रमदानमे हाथ बटाकए ाज, देश आ राष्ट्रक उन्नतिमे सहायक हो।

अकाल

'अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्नसम्भव:' अर्थात् मेघ वर्षा कए जल दैछ, जलसँ अन्न उपजैछ आ अन्नसँ प्राणिमात्रक जीविका चलैछ। अतएव जीवनधारण करए हेतु अन्न आ जल जीवमात्रक हेतु आवश्यक आवश्यकता थीक। परंच 'सब दिन होहि न एक समान'। कोनहु-कोनहु वर्ष अन्नक अभाव अत्यन्त आतंकित कए दैछ। द्रव्यहुसँ ओ नहि प्राप्त होइछ यद्यपि 'द्रव्येषु सर्वे गुणा:'। उपजा देश छोड़ि दैछ। अन्न लेल हाहाकार मचि जाइछ। सब दाना-दानाक लेल तरसैछ। भीखो भेटब दुस्तर भए जाइछ। दीनताक दयनीय दशाक विकराल रूप उपस्थित होइछ। इएह दुर्भिक्षक समय कहबैछ अकाल।

एहि दुर्भिक्षक कारण अछि वर्षा। वर्षे भारतसन कृषिप्रधान देशक हेतु प्राणरक्षक आ भक्षक अछि परंच एकर कोनो ठेकान नहि। कहियो ई आदिमे ततेक पानि देत जे सब नाकोदम भए जाएत मुदा आगाँ चलिकए तेहन रौदी करत जे बीआपर्यन्त घरहि रहि जाएत। यदि केओ कतहु खसएबो करत त ओ जरिकए भस्म भए जाएत। तैं उपज नहि होएत। कोनहु वर्ष पानि पड़ैछ कम। उपज कात रहओ, पीबहु हेतु पानि नहि प्राप्त होइछ। एहि समयमे अन्नक आशा करब अन्याय थीक। यदि कहिओ किछु पानि भेबो कएल त जरल जमीन जल सोखि लैछ। फलत:, स्थिति तथा यथाक रहि जाइछ। कहियो-कहियो ततेक पानि होइछ जे बाढ़ि आबि कए लगलो फसिल नष्ट कए दैछ। एतबए धरि नहि, कहियो-कहियो टिड्डी दलकदल आबि कए लागल अन्न पर बैसिकए दाना-दाना चुनिलैछ जाहिसँ अन्नक अन्त भए जाइछ। युद्धकालमे एकर रूप सबसँ विकराल भए जाइछ। फलत:, लोकक जान संकटमे पड़ि जाइछ। ओहि समयमे प्राणरक्षामे लागल कृषक झखैत रहैछ। एहि लेल कृषि दिशिसँ लोक हतोत्साह भए जाइछ।

एकर असर बड़ विचित्र होइछ। मुख्यत: निर्धन व्यक्ति मारल जाइछ परंच धनी सहित सुखी नहि रहि सकै छथि। चिन्तित, भयभीत आ व्याकुल व्यक्तिक दशाक अवलोकनसँ ओहो त्राहि-त्राहि करै छथि। खेत-पथार कात जाओ, अपन प्राण, सन्तान पर्यन्तकेँ बेचि लेबापर परिवार उद्यत भए जाइछ। अन्नक अभावमे लोक माँटि, झिटुका, गाछ छाल आ पातपर जान दैछ। एहि अकालक दृश्य कोन व्यक्तिक हृदयमे दया नहि उत्पन्न करैछ?

अन्नहीन आ क्रियाहीन व्यक्तिकेँ केओ चीन्हि जा सकैछ। सुखाएल देहमे मांस कहाँ? हड्डी झकझक करैछ। बूझि पड़ैछ जे कटला पर एको बुन्द शोणित नहि खसि सकैछ। देखलापर सब भुतचट्ट देखि पड़ैछ। पेट खाली, पीठ उगल ओ रीढ़ जागल, आँखि धसल, गाल चोटकल आ मुँह सुखाएल दीनताकेँ प्रत्यक्ष करैछ। अन्नहीन आ वस्त्रहीन व्यक्ति कलकलीसँ व्याकुल रहैछ। चिन्तित जनता उत्साहहीन, साधनहीन भेल पेटक ज्वाला शान्त करए हेतु नीचो-सँ-नीच कर्म करए पर तुलि जाइछ। स्वार्थ सबकेँ आन्हर कए दैछ। सन्तानकेँ अन्न देब दूर जाओ, ओकरा बेचिकए भूख दूर करबाक हेतु लोक उतारू भए जाइछ। भूखे डाँर्ड-डाँर्ड कएनिहार परिवारक व्यक्ति भूखल डाइन-सदृश क्रोधान्ध भेल धीयापूताकेँ पीटैछ आपसमे झगड़ा-झाँटी करैछ। एहिसँ दिन-राति महाभारत मचल रहैछ। एहि सदृश परिवारक स्थिति महाकारुणिक भए जाइछ।

अकालसँ अनेको हानि होइछ। कृषि मारल जाइछ। लोक अन्न लेल लल्ल रहैछ। सबठाम लाला छी-छी होइछ। कृषक उद्यमसँ विरत भए चिन्ताग्रस्त जीवन व्यतीत करैछ, जाहिसँ अग्रिम वर्षक कृषिपर्यन्तकेँ क्षति पहुँचैछ। उदरी भरए हेतु लोक चोरी, डकैती, लूटि-मारि आदि घृणित आ नीच कार्य दिशि लपकैछ। सामाजिक स्थिति अशांत भ जाइछ। निर्धन परंच अस्वस्थ व्यक्तिक चिकित्सामे बाधा पड़ैछ। गरीब व्यक्ति अपन नेनाभुटकाकेँ पढ़ाएब स्थगित क दैछ। राष्ट्रक समक्ष खाद्यान्नक विकट समस्या उपस्थित भए जाइछ। खाद्य-सामग्री जुटएबामे सरकार व्यस्त भए जाइ सरकारकेँ अन्य विदेशी सरकारसँ दान आ भिक्षा लए देशवासीक समस्या सोझराबए पड़ैछ। अनका आगाँ हाथ पसा आत्मसम्मानकेँ धक्का लगैछ, आ अनकर कृतज्ञ होमए पड़ैछ। नैतिक पतन भए जाइछ। फलतः, राष्ट्रीय रचनात्म प्रगति रुकि जाइछ।

एहि शत्रुकेँ दूर करबाक अनेको उपाय अछि। अन्नक सङसङ सागपात, तरकारी, फल-मूल आदि भक्ष्य पदार्थ उत्पादनमे वृद्धि होएबाक चाहि। सरकारी पंचवर्षीय योजनाक अनुसार कृषिक वैज्ञानिक रूप अपनाएब उचित थीक जलक अभाव मेटएबाक लेल इनार कोड़ाएब, पोखरि खनायब, नहरि खनाएब आ बान्ह बन्हाएब आवश्यक होइ एहिसँ जलक नियंत्रणमे सहायता भेटैछ। कम्पोस्ट आदि सस्त खाद बनाओल जाए आ ओ प्रयोगमे आनल जा परती- पसँत भूमिकेँ कृषियोग्य बनाओल जाए। द्रव्योपार्जनक हेतु आनोआन उद्योगकेँ प्रश्रय देल जाए जाहिसँ कृषियो कृषिउद्योगमे सहायता भेटए।

अकाल महासंहारकारी थीक। एहिसँ जान जोखिममे रहैछ। राष्ट्रोन्नतिमे बाधा उत्पन्न होइछ। अतएव एक सामना-हेतु अन्नक व्यवस्था करब परमावश्यक अछि। अन्यहुँ देशसँ आनिकए समस्या सोझराओल जाए मुदा ओक वितरण-हेतु सुव्यवस्था हो। नियन्त्रण चालू रहए जाहिसँ चोरबाजारी बन्द हो। राशनिंग-पद्धति लागू हो। अन्नक अपे सागपात, तरकारी, फलमूल, माछ-मांसक व्यवहारहेतु ओकर उत्पादनमे वृद्धि हो। कृषिकार्यक हेतु कृषककेँ कर्ज दे जाय। दीन-हीन व्यक्तिकेँ खैरात भेटए। धनी संस्था आ धनी व्यक्तिक कर्त्तव्य जे ओ एहि समयमे जनताजनार्द पूजामे पूँजीक सदुपयोग करथि। जनता सरकारक सहयोग करए जाहिसँ अकालक सामना करब सुलभ भए जाए।

□□□

बाढ़ि

जलक स्वभाव अछि जे ओ नीच दिशि होइत बहत। तैं साधारणरूपेँ जल रहने धार आ नदीक पानि किनहेरिक बीच घेरल रहैछ मुदा विशेष समयमे विशेष कारणसँ धारमे अधिक जलक आगमन होइछ। फलतः, ओकर किनहेरिसँ जल ऊपर आबि जाइछ। इएह अतिरिक्त जल धारक कातक घर, आङन आ खेत-पथारमे पसरि जाइछ। अतिरिक्त जलक इएह प्रसार थीक बाढ़ि। वस्तुतः, ई प्राकृतिक देन थीक। एकर आगमनक समय थीक वर्षाऋतु।

कहियोकाल मूसलाधार पानि पड़ैछ। अधिक पानिकेँ धार अथवा नदी रोकि रखबामे असमर्थ भए जाइछ। अतएव अतिरिक्त जल चारूकात पसरि जाइछ। कहियोकाल पर्वतशिखरपरहक बर्फ वायुक झोँकसँ पघिल जाइछ। एहि हेतु जलक परिमाणमे वृद्धि भए जाइछ। धारक पेट उत्थर भएने थोड़बो जल बढ़ने पानि उछलि जाइछ। एहि सब कारणसँ उत्तर बिहार अर्थात् मिथिलामे कमला आ कोशी नदीमे बड़ बाढ़ि अबैछ।

बाढ़िक समयमे पानि चारूकात दहोबहो भए जाइछ। घर-आंगन सबठाम पानि प्रवेश कए जाइछ। पानि धारक सबलतासँ आ पानिक धक्कासँ माटि आ खढ़क घर साधारणतया खसि पड़ैछ आ बाढ़िक पानिक संग बहि जाइछ। केवल उच्च स्थानपर बनल भवन आ पक्का मकान जलसँ घेराइयो कए ठाढ़ रहैछ। बाढ़िक धार ततेक तेज होइछ जे गाछ-वृक्षकेँ जड़िसँ उखाड़ि, काठ आ लोहक पुलकेँ नापता बनाकए, असम्भावित भूभागदए नासी फोड़िकए कल्लोल करैत बहैछ। नजरि दौड़ओलासँ बूझि पड़ैछ जे समुद्र चारूकात विराजमान भए गेल हो। बाढ़िक प्रवाहमे भसिआएल घरक चारपर बैसल मनुष्य, डबडुब करैत मालजाल आ बहैत वस्तुजातकेँ देखि ककर मन नहि व्याकुल भए जाइछ। ताहिपर यदि बाढ़ि सुनसान रातिमे एकाएक आबि जाइछ त सब जीवक जान जोखिममे पड़ि जाइछ।

बाढ़ि लोककेँ बड़ कष्ट पहुँचबैछ। घर-आङन टापू भए जाइछ। जीव-जन्तु जानसँ हाथ धोइछ। माल-मवेशी खतरामे पड़ि जाइछ। लोक गृहविहीन आ धन-हीन भय जाइछ। घरसँ बाहर होएब पर्यन्त मुश्किल भए जाइछ। खेत-पथारक उपजल अन्न दहा जाइछ। अकाल विकराल रूप बनाकए देश पर टूटि पड़ैछ। फलतः, गृह-विहीन जनता अन्नक हेतु तरसैछ। भुखमरी डेग-डेगपर मुँह बौने ठाढ़ भेल देखि पड़ैछ। रोग-व्याधि बाढ़िग्रस्त क्षेत्रकेँ अपन नैहर बना लैछ। गाछ-वृक्ष, जंगल-झाड़ सब किछु बाढ़िक कारण नष्ट भए जाइछ। सब तरहेँ मनुष्यक दशा दर्दनाक बुझि पड़ैछ।

बाढ़िसँ लाभ होइछ। बाढ़िक नवीन जलमे पाँक मिलल रहैछ। तैं जेम्हर देने बाढ़िक पानि पसरैछ, तेम्हर-तेम्हर पाँक पड़ैछ जे उपजाक लेल अमूल्य खादक काज करैछ। भूमिक उर्वराशक्ति बहुत अधिक बढ़ि जाइछ। देहातक कुड़ा-करकट, अचरा-कचरा, छाउर-गोबर आदि सब दुर्गन्धि पसारनिहार वस्तु बहि जाइछ। सुखाएल पोखरि-झाँखरि भरि जाइछ जे जलक भण्डार बनि लाभप्रद प्रमाणित होइछ।

एहि बाढ़िकेँ नियन्त्रण कएल जा सकैछ। कला आ कोशी नदीक सदृश बाढ़ि अननिहार नदीक तटबंदी कएल जाय। धारक समीपमे मजबूत बान्ह बान्हल जाए जाहिसँ बाढ़िक पानि ओहि बीचहिमे घेरा कए आगू बहए। ओहि

पानिक समुचित निकास हेतु नहरि बनक चाही जाहिसँ बाढ़िक अनावश्यक जल नहरि दए बहि कए दूरधरि पसरि सकए। कल-कारखाना चलएबाक लेल जलविद्युतक निर्माण कएल जा सकैछ। एहि सब उपायसँ बाढ़िक प्रकोप कि घटाओल जा सकैछ जाहिसँ जल उत्पात मचा नहि सकैछ। यदि सावधानीसँ बाढ़िक नियंत्रणमे सफलता भेटि जाए बाढ़ि हितकारक भए जाएत।

अतः स्पष्ट अछि जे बाढ़ि हानिकारक आ लाभप्रद दुनू अछि। यदि ओकर उत्पातक नियन्त्रण कएल जाए नोकसानक स्थानपर लाभेलाभ भेनिहार थीक। मुदा नियन्त्रण कठिन कार्य थीक आ एहिमे अधिक व्ययक काज पड़ै ई व्यय ने केवल सरकारे कए सकैछ आ ने केवल जनता। दुनूकेँ मिलिजुलि कए कार्य कएलासँ सफलता भेटब सु भए जाइछ। शारीरिक श्रमदान दए जनता सरकारक सहयोग कए बाढ़िकेँ काबूमे आनिकए समाज आ देशक राष्ट्रक महान् उपकार करबाक भागी भए सकैछ। तैं सबहि व्यक्तिक आ सबल संस्थाक पावन कर्तव्य होइछ जे यथासाध्य बाढ़िग्रस्त जनता आ जीवकेँ सहायता प्रदान कए देशहितसाधनामे सहयोगी बनथि।

पुस्तकालय

पुस्तकालय ओ आलय थीक जाहिमे सर्वसाधारण जनताक अध्ययन लेल पुस्तक संगृहीत रहैछ। ई ज्ञानदान देनिहार सरस्वती-मंदिर थीक जतय वरदान पाबि लोक विद्वान् बनैछ। समाजक संचित ज्ञानकोषक अध्ययन आ मनन करए हेतु ई साहित्यिक सदन थीक। एतहि सभ्यता आ संस्कृतिक ज्ञानराशि सुरक्षित भेटइछ जकर आलोक पाबि सब व्यक्ति अपन सुषुप्त संस्कारकेँ सजग बनाएबामे समर्थ होइ छथि। ई विद्याक कल्पलता थीक जकर सेवी मनोभिलिषित फल पाबि अपन विशिष्टताक विकास करैछ। एहेन आनन्दोद्यान अन्यत्र कतए? एहिमे विकसित ज्ञानसुमनक सौरभसँ जनमनरंजन होइछ। ई अछि शान्तिक आगार जतए अतृप्त, अशान्त, असफल, असमर्थ आ अनाश्रित व्यक्ति चारु चमत्कारसँ प्रफुल्लित भए प्रशान्त प्रकाश प्राप्त करैछ। मननशील मनुष्यक हेतु ई मानसिक भोजनक आलय थीक जतय भव्य भावनाक मंजुल मालाक दिव्य दाना देखि सबहि सदस्य सार्वभौम समाधानक साधनासँ सर्वथा संतुष्ट भए आलोककेँ प्रसारित करैछथि। ई थीक शिक्षाक सबल स्त्रोत जकर ज्ञानामृत पान कए मानव परम प्रसन्न होइछ। इएह थीक जिज्ञासाकेँ पूर्ण कएनिहार ज्ञानक निर्मल निर्झर जकर कलकल ध्वनिमे साहित्य, संगीत आ कलाक उदय होइछ। ई थीक व्याकुल बटोहीक वास्ते विश्रामस्थल, जतय सत्वर सफलीभूत होबय हेतु विशिष्ट विद्वान्क विमल विषयविभूति बूझि ओ आनन्दविभोर भय जाइछ। ई थीक मनोरंजनक सर्वोत्तम साधनाक स्थल जतय सदस्य साहित्य, संगीत, नृत्य, वाद्य आदि विविध विषयक साधनासँ आधिव्याधिकेँ तिलांजलि दए वातावरणमे विहार करैछ। साहित्यिक व्यक्तिकेँ समय बितएबाक लेल ई संबल थीक जाहिसँ ओ प्रवचन, भाषण, कवितापाठ, संगीत आ अध्ययनमे लागल अपन समय बितबै छथि। वस्तुतः, ई एक छोटछीन विश्वविद्यालय थीक जतय गागरमे सागर भरल रहैछ।

पुस्तकालयक चारि भेद अछि, यथा- (1) निजी, (2) सार्वजनिक, (3) शिक्षणसंस्थासम्बन्धी आ (4) भ्रमणशील। निजी पुस्तकालयक प्रबन्ध आ संचालन संस्थापक अथवा हुनक सम्बन्धीक द्वारा होइछ। ओहिसँ आम जनताकेँ लाभ नहि होइछ। वस्तुतः, एहि प्रकारक पुस्तकालयक स्थापनाक कारण थीक स्वाध्यायक हेतु सामग्रीक संचय, अन्वेषण आ अनुसंधानक मार्गप्रदर्शनमे सहायता देनिहार साधन। तथापि विशिष्ट उपस्थित व्यक्तिकेँ लाभदायक सिद्ध होइछ। सार्वजनिक पुस्तकालय जनताक द्वारा सरकारक सहायतासँ स्थापित होइछ अथवा स्थापित भेलापर सरकारी सहायता पाबि सर्वांगीण समुन्नत भय साधारण सदस्यकेँ सहायता दैछ। वस्तुतः, एहिसँ लोक अत्यन्त लाभ उठा सकैछ। शिक्षणसंस्थासंबन्धी पुस्तकालयक स्थापना संस्थाक सदस्यक हेतु होइछ। अतिरिक्त व्यक्तिकेँ एहिसँ लाभ थोड़ होइछ। भ्रमणशील पुस्तकालयक स्थापना सरकार द्वारा होइछ। पैघ-पैघ शहरमे एकर व्यवस्था अछि। निश्चित तिथि पर शहरक विशिष्ट भागमे पुस्तकालय मोटरगाड़ी पर भ्रमण करैछ आ अभीप्सित ग्रन्थक आदान-प्रदान कए अपन स्थान पर चल जाइछ। एहिसँ नगरक थोड़ व्यक्तिकेँ लाभ होइछ।

पुस्तकालयक आवश्यकता डेग-डेगपर देखि पड़ैछ। कारण अभ्युदयमात्रक मूल शिक्षा थीक। ओकर तीनटा स्रोत छि, यथा-1) प्रकृति, (2) संगीत आ (3) पुस्तक। सबहि व्यक्ति एक समान नहि होइछ आ ने सबठाम सब क्तिकेँ समानरूपेँ स्वतन्त्र, शान्त आ सुन्दर प्राकृतिक वातावरण प्राप्त होइछ जतय ओ प्राकृति सुषुमाक क्लोकनक संग ओकर उत्पत्ति, विकास आ अवसानक अन्दाज पाबि सकए आ स्वानुभूतिक बलेँ ज्ञानवान् बनए। पि सत्संगति सुलभ देखि पड़ैछ तथापि ओकर सुअवसर सबकेँ नहि भेटैछ आ ने सब ओहि सम्पर्कमे आबि अपन ग आ तपस्यांक जीवन अपनाकए सत्संगतिक महिमाक, गौरवगरिमाक मर्यादा राखि स्वयं लाभान्वित भए सकैछ। च पुस्तक सब व्यक्तिक समानरूपेँ आदर कए ज्ञानक आलोक प्रदान करैछ। एहि तरहक महत्त्वपूर्ण पुस्तक सबकेँ ठाम आ सदरिकाल प्राप्त होएब कठिन अछि। ओ सुलभरूपेँ प्राप्त होइछ पुस्तकालयमे। अतएव पुस्तकालय ँसाधारण व्यक्तिक शिक्षाक केन्द्र बनैछ। मुख्यतया एहि देशक हेतु ई आओर महत्त्वपूर्ण अछि। कारण, देश अछि र्धन, निवासी अधिकतर निरक्षर, सामाजिक आ साम्प्रदायिक स्थिति असमान, परंच प्रगतिशील देशक संग पएर एबाक लेल विश्वक ज्ञान, विज्ञानक परिचय पाएब परमावश्यक अछि। एकर एकमात्र साधन थीक सार्वजनिक तकालय। एतय सब व्यक्ति अध्ययन आ अनुशीलनसँ अत्यन्त लाभान्वित होइ छथि। वस्तुतः, पुस्तकी भवति ण्डितः' उक्ति अक्षरशः सत्य अछि, कारण युग-युगक सभ्यता आ संस्कृतिक ज्ञानदाता इएह थीक। गणतन्त्र देशमे हि देशवासीकेँ उन्नति करबाक समान अधिकार प्राप्त करएमे सबसँ पैघ सहायक इएह थीक। एहिलेल ई वश्यक अछि।

पुस्तकालयक प्रबन्ध हेतु एक समिति रहैछ। एकर संचालन हेतु ग्रन्थागारिक आ अन्य रक्षक रहैछथि। एकर र्चबर्चक हेतु आयक उद्गम थीक सदस्यक चन्दा, महान् आ उदार व्यक्तिकेर दान आ कार्यपालिका अथवा रपालिकाक सहायता आदि। एकरा सुव्यवस्थित रखए हेतु खुअबाक आ बन्द होएबाक समय निश्चित रहैछ। स्तकक श्रेणी विभाजित रहैछ, जाहिमे विशिष्ट श्रेणीक पुस्तक सबहि व्यक्तिकेँ नहि भेटि सकैछ। विशिष्ट ान-प्राप्तिहेतु इच्छुक व्यक्ति पुस्तकक मूल्य जमा कए ओ पुस्तक लए कार्य करै छथि आ आपस कएलापर मूल्य पस लए सकै छथि। अतएव सुचारूरूपेँ संचालनहेतु नियमक पालन करए पड़ैछ।

वाचनालय एकर एक मुख्य अंग थीक। एहिमे देश-विदेशक पत्र-पत्रिका संगृहित रहैछ। ओकर अवलोकनसँ ठक विभिन्न समाचार ज्ञात कए सकै छथि। एतय एक सभाभवन रहैछ। समय-समयपर विशिष्ट व्यक्तिक प्रवचन ा भाषणसँ जनता लाभ उठबैछ। संगीतालय अधिक ठाम एकर अंग रहैछ। ओकर सामयिक प्रदर्शनसँ जनताक ोरंजन होइछ।

पुस्तकालयसँ अनेक लाभ होइछ। ज्ञानक वृद्धि होइछ। साहित्यिक साधना आ संगीतक शुभावसर भेटैछ। स्तकावलोकनसँ ज्ञानचक्षु खुजैछ। जाहिसँ आत्मपरिचय आ आत्मविकासमे अवर्णनीय सहायता भेटैछ। युगयुगक

संचित आ सुरक्षित सत्संगक संग इतिहासक अध्ययनसँ जनताकेँ जीवनक जानकारी प्राप्त होइछ। समाजमे संस्कृतिक जानकारी आनएमे पुस्तकालयसँ बड़ लाभ होइछ। अवकाशक समयमे पढ़ल-लिखल व्यक्ति सुविधासँ महान् व्यक्तिक समीप बैसि समय बिता लैत छथि। एक विचार एक भाव आ एक प्रकृतिक उदय कए पुस्तकालय एकताक भावकेँ दृढ़ करैछ। नागरिकताक प्रचार आ प्रसारमे सहायता भेटैछ। निरक्षरताक निवारण होइछ।

अत: स्पष्ट अछि जे एकर महत्त्व बड़ पैघ अछि। अतएव एकर सुरक्षा-दिशि सबहक ध्यान होएब आवश्यक अछि। एहि पवित्र आलयमे दुरुपयोग आ दुर्व्यवहारकेँ स्थान नहि भेटए मुदा सदुपयोगक ई स्थान सदन, साधन ओ साधक हो। एहि हेतु सरकार आ जनताक सहयोग सापेक्ष अछि। सार्वजनिक पुस्तकालयक स्थापना आ सदुपयोगसँ समाज, राष्ट्र आ देशक कल्याण निश्चित अछि। अतएव एकरा प्रोत्साहन देब सबहक कर्त्तव्य थीक।

□□□

वसंत ऋतु

यद्यपि विश्वभरिमे भौगोलिक आधारपर ऋतु चारि मानल जाइछ तथापि भारतवर्षमे ओ छौ अछि-ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, हेमन्त आ वसन्त। जेठसँ प्रारम्भ भए वैशाख तक सब ऋतुक चक्र पूरा भए जाइछ। ऋतुराज वसन्त चैत्र आ वैशाखमे सुन्दर साजसज्जा धारण कए अपन दलबलक संग विराजमान रहै छथि।

एहि ऋतुक आगमनसँ पूर्व सी-सी करैत शिशिर सबकेँ शिथिलित कए दैछ। धनिक-गरीब सबहक हाड़केँ हिलोनिहार, धीयापूताक स्वच्छन्द क्रीड़ामे बाधा देनिहार जाड़ जीवजन्तुकेँ ताहि तरहेँ जकड़ि लैछ जे ओकर अन्त असम्भव देखि पड़ैछ। परंच परिवर्त्तनशील जगत्मे स्थायी रहनिहार के? काल हिनकहु हँसा-खेलाकए गाल-तर दाबि लैछ।

प्रकृति अपन उजड़ल आ उखड़ल स्वरूपक परित्याग कए नवल वसन धारण करैछ। कोमल किसलय, मृदु मंजरिक हेमहार, रंगबिरंगक प्रफुल्लित पुष्प, शीतलमद-सुगंध समीर, भ्रमरक गुंजन, कोकिलाक तान, ऋतुराजक आगमनक सूचना दैछ।

एहि ऋतुमे ग्रीष्मा सदृश ताप नहि, वर्षाक झड़ी नहि, शरदक शीत नहि, हेमन्तक पाला नहि आ शिशिरक जाड़ नहि, एकर विशिष्टताक सम्बन्धमे महाकवि कालिदासक श्लोक श्लाघनीय अछि-

सुलभसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः
प्रच्छायसुलभनिद्राः दिवसाःपरमरमणीयाः।।

वस्तुतः, एहि समयमे सब ठाम नवजीवन, नवल उत्साह आ नूतन उमंग देखि पड़ैछ। अपन अलौकिक प्रतिभा आ प्रभुताक बलेँ सबकेँ सुख, शान्ति आ सुविधा प्रदान कएनिहार वसन्त ऋतुराज कहबै छथि।

एहि ऋतुमे प्रकृति सुन्दर स्वरूप धारण कए उपस्थित होइछ। एहि समयमे गाछ-वृक्षमे नवपल्लव लगैछ। आमक गाछमे मंजुल मंजरि देखि पड़ैछ। सरिसवक पीअर-पीअर, तीसीक नील आ कुसुमक लाल-लाल फूल उद्यानक विभिन्न रंगक पुष्पक संग अवनीक आँचरकेँ अनुपम करैछ। स्वच्छ सरोवरक अमृतसदृश निर्मल जलमे क्रीड़ा करैत कमलक कमनीय कली कुटिल कटाक्षसँ दर्शकक मनकेँ आकृष्ट कए अपूर्व आह्लादकता उत्पन्न करैछ। फलतः, प्रफुल्ल उरमे उल्लास आ उमंग उमड़ि पड़ैछ। उद्यानमे उपस्थित उत्फुल्ल लवङ्ग लता, खलखल हँसैत, जूही चमचम करैत, चम्पा, चमेली, बेली आ कचनार। सुरभिसँ अन्ध बनबैत इन्द्रकमल, कामिनी आ रजनीगंधा, स्वागत करैत गुलदाउदी, चन्द्रकला आ प्रफुल्लित पुष्पराज गुलाब वायुमण्डलकेँ आमोदित कएने रहै छथि। वस्तुतः, उद्यानक छवि-छटा देखि सब मुग्ध भए जाइछ। एहि समयमे आकाशक रूप रमणीय देखि पड़ैछ। बिहारी-लालक उक्ति कतेक सुन्दर अछि-

छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधवी गंध।
ठौर-ठौर झूमत झपत भौर झौर मधु अन्ध।।
रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।
मन्द-मन्द आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर।।

मानवक हेतु ई ऋतु आनन्द आ उल्लासेँ पूर्ण रहैछ। सबहक हृदयमे उत्फुल्ल उमंग उमड़ि पड़ैछ। शरीरमे सुन्दर स्फुर्ति सभ जाइछ आ मनमे मनोरम मस्ती लक्षित होइछ। मधुर मलयानिल, सुन्दर सुगन्धि, मधुपक मनमोहक गुंजन, कोकिलक कोमल एवं मर्मस्पर्शी आलाप, प्राकृतिक छटा कखन ककर मन नहि मोहि लैछ। मुग्ध मानवक हृदयमे नव कल्पनाक कमनीयता माधुर्यमे शराबोर भए भव्य भावना जगा दैछ। जीवनलता अनुपम आभासेँ आभूषित भए उन्मुक्त वातावरणमे लहलहा उठैछ। हास-विलास आ आमोद-प्रमोद मानवजीवनकेँ मधुमय मनोहरता प्रदान करैछ। वसन्तपंचमी आ फगुआ बनि मानवमनमे अनिर्वचनीय आनन्दक सृजन करैछ। मन्मथक बाणसँ मानस मस्त देखि पड़ैछ। सबहि व्यक्तिक मुखमण्डलपर अनुपम आभाक आभास भेटैछ। फलतः, सरसता निस्सार जीवनकेँ सरस बनाकए अवनीकेँ स्वर्गहुसँ सुन्दर स्थलमे परिवर्त्तित कए दैछ।

सरोजनी नायडुक उक्ति केहन मार्मिक आ उपयुक्त अछि-

The earth is ashine humming bird's wing.
And the sky like a king-fisher feather.
O, come and let us play with the spring.
Like glad-hearted children together.

एहि ऋतुमे कविक कल्पना भव्य भावैक साज साजि सुन्दर सृष्टिक सृजन करैछ जकर सौन्दर्य अनुभव कविक हृदयोद्‌गारसँ स्पष्ट होइछ।

□□□

नहार विरवानके होत चिकने पात'। अतः महापुरुषक जीवनमे बाल्यावस्यासँ विशिष्टताक झलक देखि पड़ैछ। क आदर्श रहैछ। इएह कारण अछि जे ओ हजारमे गोटेक होइछथि। सादा जीवन, उच्च विचार, अध्यवसाय तथा महापुरुषक जीवनकेँ जगमगौने रहैछ। बाधा-विघ्न हुनक जीवनक गुप्त आ सुषुप्त गुणकेँ चमका दैछ।

तभूमि वीरवसुन्धरा तथा रत्नगर्भा अछि। एतय अनेक महापुरुष जन्म ग्रहण कए अपन समाज, देश आ राष्ट्रक ज्वल कएल अछि। आधुनिक युगमे महात्मा गाँधी एक आदर्श महापुरुष भए गेल छथि।

प अछि काठियावाड़ जिलाक पोरबन्दर नामक स्थान जतय 2 अक्टूबर, 1869 ई० के गाँधीजीक जन्म एक परिवारमे भेलनि। हिनक पिता करमचन्द गाँधी पोरबन्दर आ राजकोट रिआसतक दीवान छलाह। हिनक माए ई धर्मप्राण नारी छलीह व्रत, उपवास आ ईश्वरभक्ति हुनक जीवनक प्रधान अंग छल।

ीजीक प्रारम्भिक शिक्षा राजाकोटमे प्रारम्भ भेल। आरम्भमे ई एक साधारण छात्र छलाह तथापि सत्यवादी ओ चोरिसँ कात रहथि मुदा कुसंसर्गमे पड़ि अधलाह कार्य कएलापर प्रकट कए देल आ पितासँ क्षमा पाओल। समीप रहि विभिन्न धर्मक व्यक्तिक गपसप सूनि सर्वधर्म-समन्वयमे हिनक आस्था जड़ि जमा लेलक।

व विद्यालयमे ई प्रतिभाशाली भए गेलाह। इंट्रेन्स परीक्षोत्तीर्ण भेलापर ई शिक्षा प्राप्तिहेतु विलायत गेलाह। 1891 ारिष्टर भए स्वदेश आपस अएलाह। विलायतमे हिनक जीवन संयमित छल। माछ, मांस आ माउगिसँ ई दूर

लहम वर्षक अवस्थामे हिनक विवाह भेल। हिनक स्त्री, कस्तूरबा, हिनक जीवनसंगिनी छलीह। ओ जेलपर्यन्तमे संग धएल। बम्बईमे ई बारिष्टरी आरम्भ कएल मुदा पूर्ण सफलता नहि पाओल। एक व्यापारीक कार्यसँ 1893 फ्रिका गेलाह।

तए प्रवासी-भारतीय जनताक अपमान हिनका असह्य भए गेलन्हि। अतः ई लोकक कष्ट-निवारणहेतु सत्याग्रह कएलनि। फलतः, सरकारकेँ झुकए पड़लैक। ओ प्रवासी-भारतीय जनताक प्रति अपन व्यवहारकेँ बदललक।

15 ई० मे अपन परिवारक संग गाँधीजीक स्वदेशक यात्रा कएलनि। भारत आपस अएलापर जनताक द्वारा पूर्ण स्वागत भेल। जनता हिनका अपन नेता चुनलक। बिहार राज्यमे चम्पारण जिलामे नीलक खेती कएनिहार क प्रति सरकारक अत्याचार बढ़ल। गाँधीजी सत्याग्रह कए सरकारकेँ झुकाओल। फलतः, अत्याचार रुकल। बादमे मजदूर-समस्या उपस्थित भेल। गाँधीजी अहमदाबाद आबि समस्याकेँ सोझराओल। जलियाँवालाबागक ण्ड तथा हत्यासँ क्षुब्ध जनता आन्दोलन प्रारम्भ कएलक मुदा गाँधीजी बन्द कराओल। लोकमान्य तिलकक पश्चात् देशक नेतृत्व गाँधीजी कएलनि।

1929 ई० मे अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ भेल। 1922 ई० मे हिनका कारावास भेलनि। दू व उपरान्त हिनका ओहिसँ मुक्ति भेटलनि। 1924 ई० मे ई भारतीय काँग्रेसक अध्यक्ष भेलाह। दिल्लीमे हिन्दू मुसलमानक बीच दंगा भेल। महात्माजी ओकरा शांत कए प्रायश्चित्तमे 21 दिन उपवास कएलनि। 1930 ई० मे नो कानून भंग करए हेतु सत्याग्रह कएलापर हिनका कारावास भेलनि। ओतहिसँ हरिजन-आन्दोलन प्रारम्भ कए यूरोपीय महायुद्धमे भाग लेबासँ ई भारतवासीकेँ रोकल। अत: 1942 ई० मे पुन: हिनका कारावास भेल। निरन्तर चलैत रहल। अन्तत: 15 अगस्त 1947 ई० मे भारत स्वतन्त्र भेल। नोवाखालीमे हिन्दू-मुसलमानक झगड़ा भीषण धएलक। महात्मा गाँधी एकता आनक प्रयास कएलनि।

हिनक नीतिकेँ नहि बूझि 30 जनवरी, 1948 ई० मे प्रार्थनाक हेतु जएबाकाल नाथूराम गोडसे हिनका पर गं चलओलक। फलत:, हिनक जीवन-दीप मिझा गेल। देश शोकसन्तप्त भए उठल।

महात्माजी केवल राष्ट्रीय नेता नहि प्रत्युत आध्यात्मिक पथप्रदर्शक सेहो छलाह, हिनक सत्य-अहिंसाक अ अस्त्र युद्धक दुर्गुण एवं रक्तपातसँ बचओनिहार अछि आ अछि महान शक्तिकेँ झुकओनिहार। हिनक लेखनी वाणिमे अलौकिक शक्ति छल जकर फलस्वरूप सम्पर्कमे अएनिहार व्यक्ति अवश्य झुकि जाइत छलाह। स अहिंसा, देशभक्ति, परोपकार आदिक भव्य भावसँ विभूषित महापुरुष छलाह ई। शान्ति स्थापना आ लोककल्याण हेतु त्यागी आ तपस्वी महात्माजी भारतमाताक पएरक बेड़ीकेँ तोड़निहार आ स्वतन्त्राक स्वागत कएनिहार छलाह।

भारतवासीक सर्वांगीण उन्नतिहेतु रामराज्यक रूपेरखा उपस्थित कएनिहार आ विश्वशान्तिक अग्रदूत विश्वब बापू छलाह। ई युगनिर्मित नहि युगनिर्माता छलाह आ आत्मा नहि परमात्मा छलाह। एहि पुत्ररत्नकेँ पाबि भारतमाता ध छथि, कृतकृत्य छथि।

□□□

ग्रामपंचायत

त स्वतन्त्र भेल। स्वतन्त्राक लहरि नगरसँ गामधरि पसरल मुदा वास्तविक आनन्द कतए? वस्तुतः, एकर प्राप्ति सम्भव जखन गाम स्वतन्त्र हो अर्थात् गाम स्वावलम्बी बनए। चाहे कार्य छोट हो अथवा पैघ मुदा सब यदि सम्पन्न हो त गामकेँ बाहरी आशामे नहि रहए पड़तैक। तहिखन रामराज्यक साकार रूप होएत ग्रामराज्य। ग्रामपंचायतक स्थापना गाम-गाममे आवश्यक अछि जाहिसँ गाम अपन सब मोकदमा अपनहि देखिकए कए सकए।

ंचायतक स्वरूप कोनो नवीन नहि। अँगरेजी शासनव्यवस्थापक संग कचहरीक स्थापना भेलापर एकर कार्य गेल, मुदा आब स्वतन्त्र देशमे सन् 1947क अधिनियम पंचायतक आधार बनल।

सफलताक लेल ग्रामपंचायत बोर्डक स्थापना कएल गेल अछि। निर्देशक तथा उपनिर्देशकक अतिरिक्त ायत पदाधिकारी एवं अनुमण्डलीय निरीक्षकक नियुक्ति भेल अछि। साधारणतया एक पंचायतमे 2000 रहैछ। एहि हेतु यदि एक-गामसँ नहि कार्य चलैत तँ आनो गाम मिला देल जाइछ।

यतक प्रधान मुखिया होइ छथि। हुनकर चुनाव बालिग मताधिकारसँ होइछ। ग्रामकचहरिक लेल मुखियाक 15 सदस्य धरिक एक समिति बनैछ। पंचायतमे निर्वाचित 15 सदस्यक एक ग्रामकचहरी रहैछ। बालिगमत न सरपंच ओकर इजलासक प्रधान होइछथि।

चनक उपरान्त केओ सदस्य साधारणतया 3 वर्षधरि रहि सकै छथि। आवश्यकता पड़ने पंचायत बहुमतसँ एक भा कए मुखियाकेँ हटा सकैछ। मुखियाक संग मुखियाक कार्यकारिणी समिति भंग होइछ। अतएव नव मुखिया णी समिति बनबैछ।

कचहरीमे मोकदमा दायर कएल जाइछ। दुनू पक्षक एक-एक पंचक समक्ष सरपंच ओकर सुनबाइ कए सकैछ। वानी आ फौजदारी दुनू प्रकारक मोकदमाक सुनवाइ होइछ। फौजदारीक लेल तृतीय श्रेणीक मजिस्ट्रेटक पंचायतकेँ भेटैछ। सए रुपैयाक मालियतक मोकदमाक निर्णयक अधिकार एकरा रहैछ। ग्रामकचहरीक कोनो विरुद्ध अपील होइछ मुदा पूर्ण इजलासमे, जाहिमे सरपंच, तथा पंच उपस्थित रहथि। एहि प्रकारक इजलासक तिम निर्णय होइछ। मोकदमाक गड़बड़ी भेलापर जिला-जज, मुन्सिफ-मजिस्ट्रेट अथवा एस॰डी॰ओ॰ क पील होइछ।

यतक रक्षा आ लोक कल्याणक लेल रक्षादलक संगठन होइछ। ओकर प्रधान दलपति कहबै छथि। ग्रामसेवक तिक प्रशिक्षण लेल सरकार दिशिसँ व्यवस्था होइछ।

यतक कार्य दू प्रकारक होइछ-(अ) अनिवार्य कार्य, आ (आ) सरकारी आज्ञासँ भेनिहार कार्य।

(अ) अनिवार्य कार्य होइछ-(1) गामक सफाई (2) मनुष्य आ मवेशिक चिकित्साक व्यवस्था (3) उपज आँकड़ा, (4) हैजा आदि संक्रामक रोगक नियंत्रण, (5) बाट-बाटक सुरक्षा आ मरम्मति, (6) सार्वजनिक भवन त सम्पत्तिक रक्षा, (7) आगि, चोरी, डकैती आदि उपद्रवसँ रक्षा, (8) सार्वजनिक स्थानक सुरक्षा, (ग्राम-सुधारसम्बन्धी सरकारी योजनाक रक्षा आ कार्यान्वयन, आ (10) सिंचाईक साधनक रक्षा, उन्नति आ प्रबन्ध।

(आ) सरकारी आज्ञासँ भेनिहार कार्य अछि-(1) सड़कपर प्रकाशक प्रबन्ध, (2) सड़कपर गाछ लगाएब, (शिक्षा, पुस्तकालय, वाचनालय, मनोरंजन, व्यायामशाला, सांस्कृति समारोह आदिक प्रबन्ध, (4) इनार-पोख कोड़ाएब, (5) व्यवसायक प्रचार आ प्रसार, आ (6)धर्मशालाक प्रबन्ध।

पंचायतक आमदनीक स्रोत विभिन्न अछि। कर लगाएबाक अधिकार ग्रामपंचायतकेँ प्राप्त रहैछ। ओ कर प्रकारक होइछ-(1) श्रमकर आ (2) अचल सम्पत्तिक मालियत पर, कर (पंचायत समर्थ व्यक्तिसँ शारीरिक व लेनिहार थीक। ओ श्रमक स्थानमे कर वसूल कए सकैछ), (3) बैलगाड़ी, (4) प्रकाश, (5) हाट, (6) आव आदि पर कर लगाओल जा सकैछ।

ग्रामपंचायतसँ बहुत लाभ होइछ। ग्रामक विभिन्न क्षेत्रमे विकास होइछ। एकर निष्पक्ष न्यायसँ ग्राममे शान्ति स्थापना होइछ। सफाइ कार्यसँ स्वास्थ्य सुधरैछ। शिक्षाक प्रसार होइछ। कला-कौशलक विकाससँ लोककेँ जीवि लगैछ। बेकारीक समस्या हल भए जाइछ। क्रीड़ा, कीर्त्तन, नाटक आदिसँ मनोरंजन होइछ। चिकित्साक प्रबन्ध र स्वास्थ्यमे सुधार सुलभ रीतिसँ होइछ। ग्रामपंचायत वस्तुतः रामराज्य स्वरूपकेँ अपनबैछ।

एहिमे किछु दोषो छैक। पंचायतक स्थापनासँ अनेको ठाम दलबन्दी जड़ि जमा लैछ। फूट टाँग तोड़िकए घर-घ विराजमान भए जाइछ। मारिपीटक मामला गर्म भए जाइछ। लोक स्वार्थान्ध भए जाइछ। ओकर नैतिक पतन होइ फलतः, ग्रामवासीक अहित होइछ।

ग्रामपंचायत पर ग्रामक भाग्य निर्भर करैछ। पंच थिकाह जनताक सेवक, मालिक नहि। ग्रामवासी स्वस्थ सुरक्षित वातावरणक हेतु सच्चरित्र, ज्ञानी, ईमानदार व्यक्तिकेँ पंच बनाबथि। ई वस्तुतः स्वायत्त एवं गणतंत्रात्म शासनक प्रथम सोपान थीक। एकर सफलतापर राष्ट्रक उत्थान निर्भर करैछ। एकर सफलताक लेल सरकार जनता-दुनूकसहयोग अपेक्षित अछि।

□□□

स्वदेशप्रेम

प्रेममे एक अमोघ शक्ति छैक जे कोनहु व्यक्तिक कोनहु ठाम रहबाक हेतु प्रेरित करैछ आ आकृष्ट करैछ। ओहि थानसँ ओहि व्यक्तिकेँ प्रेम अवश्य भए जाइछ मुदा ओहिमे गंभीरता, स्वाभाविकता आ सरलताक अभाव भेटैछ। वत्काल उद्देश्यपूर्ति होइछ अथवा जा धरि नव आवेश रहैछ ता धरि लोक नव संसारक नव स्वरूप देखि मन बहटारने हैछ मुदा समय-समय पर ओकर मन विखिन्न भए उठैछ आ ओ निर्जन टापूमे बन्दी भेल अलेक्जेन्द्रक सदृश सोचय लगैछ–

Society, friendship and love
Divinely bestowed upon man,
Had I the wings of a dove
How soon would I taste you again!

वस्तुतः, मानवमन अपन जन्मभूमिक समाज, मैत्री आ प्रेमक लेल सदरिकाल लालायित रहैछ अतः जन्मभूमिक ति प्रेम थीक स्वदेशप्रेम।

स्वदेशक समता विदेश कहियो नहि कए सकैछ। कोहनो सुख आ सुविधा लोककेँ अन्यत्र भेटैक मुदा अपना देश न आन देश नहिये होइछ। ठीके कहल गेल अछि–"Home is a sweet, there is no place like home." तबए नहि, कोनहु व्यक्तिक जीवनक विकासक आधार छथि माए आ मातृभूमि। हिनकहि लोकनिक संगति आ हाय्य पाबि मनुष्य पालन-पोषण आ अपन जीवनक स्वरूपक निर्माण करैछ। अपन परिवार आ अपन देशक परम्परा वं वातावरणक सहयोगसँ मानव-जीवनक ढाँचा तैयार होइछ, रहन-सहन, चालि-ढालि, बोली-बानी, भेष-भूषा दि सबहिपर स्वदेशक छाप लागल रहैछ। यथार्थमे मनुष्य स्वदेशक महिमाक एक स्तम्भ बनि जाइछ। इएह कारण छि जे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहल गेल अछि।

स्वदेशक प्रेम स्वाभाविक अछि ओ कतहु नहि बदलल जा सकैछ। लोक कतहु जाए मुदा ओ संगहि लागल रहैछ, ा अवसर अएला पर प्रकट भए जाइछ। ठीके कहल गेल अछि–

"Breathes there the man with soul so dead,
who never to himself hath said,
This is my own, my native land,
When he puts his footsteps on the land."

निश्चय, बाल-वृद्ध, नर-नारी, विद्वान-मूर्ख सबहि व्यक्तिक हृदयमे स्वदेशक प्रेम उमड़ल रहैछ जे स्वदेशक थान, वस्तु आ व्यक्तिक दर्शनमात्रहिसँ बहए लगैछ। पशुपक्षीपर्यन्तमे एहि प्रेमक प्रगाढ़ता देखि पड़ैछ। राएल-डेराएल पशु बोआइत-ढहनाइत अपना बथानपर आबिकए स्थिर होइछ। अपन खूटापर कुकुरो बली होइछ।

पक्षी दिनभरि विचरण करैछ मुदा संध्या होइतहि चन-चन -चुन-चुन-चें-चें करैत अपन खोंतामे आबिकए शान्त होइछ।

एकर आवश्यकता डेग-डेग पर देखि पड़ैछ। यदि स्वदेशक प्रति लोककेँ प्रेम नहि हो, त परदेशक प्रति प्रेम नहि भए सकैछ। कारण, 'Charity begins at home' एतबए नहि, यदि लोक अपना देशक प्रति प्रेम नहि राखए तऽ ओहि देशक उत्थान कथमपि सम्भव नहि होएत आ ओहि व्यक्तिकेँ जीवनमे उन्नति करबाक आधार नहि भेटतैक। उत्तर ध्रुव पर असह्य शीत पड़ैछ; परंच कतबो लोभ देखाकए ओहि क्षेत्रक निवासीकेँ गर्म देशमे आनल जएबाक प्रयास कएल जाए तऽ ओ नहि अओताह। सहारा मरुभूमिक निवासीकेँ लूमे झरकब श्रेयस्कर बूझि पड़ैत छनि। हिमालय पर रहनिहार आ छोटानागपुरक जंगलक निवासीकेँ अपन भूमिक प्रति अगाध प्रेम छनि अतः ओ ओहि स्थानकेँ त्यागक हेतु कहियो नहि तैयार होएताह। ठीके कहल गेल अछि-

'जिसके न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नरपशु निरा है और मृतक समान है।'

स्वदेशप्रेमसँ लाभो बहुत होइछ। देशप्रेमीक समक्ष देशक उन्नति, सुरक्षा, यश आ प्रतिष्ठाक भावना प्रमुखरूपेँ उपस्थित रहैछ। अतएव ओहि व्यक्तिक हृदयसँ स्वार्थ, लोभ, वैमनस्य आ फूटक भाव उठि जाइछ। सबहक आगू देशक प्रश्न एकता, सहयोग आ सौहार्द उत्पन्न करैछ। एहिसँ देशक कार्यमे सुविधा आबि जाइछ। देशक हितसाधनसँ लोकक हित होइछ। अतः स्वदेशप्रेमसँ स्वार्थ आ परमार्थ दुनूक सिद्धि होइछ। स्वदेशक प्रेम लोककेँ आन देश आ राष्ट्रसँ बढ़ल-चढ़ल रहबाक लेल उत्साहित करैछ। लोक जी-जानसँ ओकर विकास आ अभ्युत्थानमे लागि जाइछ। स्वदेशप्रेमक फलस्वरूप भारतवासी आकाश-पातालक कुलेबा एकट्ठा कए शान्तिपूर्ण ढंगसँ अपहृत स्वतंत्रताकेँ प्राप्त कए मातृभूमिक लाली राखल अछि।

भारतक इतिहासमे स्वदेशप्रेमीक संख्या कम नहि देखि पड़ैछ। प्राचीन कालमे महाराणा प्रताप भेलाह जे मातृभूमि चित्तौड़क रक्षाहेतु राजपाट त्यागि कए जंगल, पहाड़ आ खोहक शरण धएल आ नेनाभूटकाकेँ घास-पातक रोटीपर्यन्त नहि भेटलापर सान्तवना आ ढाढस दए मातृभूमिक रक्षा लेल तत्पर राखल। छत्रपति शिवाजी अपन देशक प्रतिष्ठा राखए हेतु प्राणपणसँ प्रयास कएल। अर्वाचीन कालमे पंडित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, पंडित जवाहर लाल आदिक स्वदेश प्रेम उल्लेखनीय अछि। वस्तुतः, स्वदेश प्रेमक बाढ़ि देशमे पसरि रहल अछि।

अतः स्पष्ट देखि पड़ैछ जे स्वदेशप्रेम सब तरहेँ आवश्यक, स्वाभाविक आ महत्त्वपूर्ण अछि। एहि प्रेमकेँ अक्षुण्ण बनाकए राखए हेतु देशवासीकेँ उद्यत रहब उचित अछि। एहि पुनीत कार्यलेल स्वार्थक त्याग करब सर्वथा उचित थीक। तन-मन-धन आ मनसा-वाचा-कर्मणा लागिकए स्वदेशप्रेमकेँ अपनाकए चलने देश थोड़हि दिनमे उन्नति कए सकैछ। संगहिसंग ओहि व्यक्तिसँ सावधान भए चलक चाही जे स्वदेशसेवाक पाखंड रचि अपन पाँचो आङुर घी मे रखै छथि।

परोपकारक अर्थ थीक अनकर उपकार। अपन उपकार सब चाहैछ आ करैछ, मुदा जाहि व्यक्तिसँ कोनो सम्बन्ध नहि हो ताहि व्यक्तिक उपकार वास्तविक उपकार थीक, यदि ओहिमे प्रत्युपकारक भावना नहि निहित हो। एहेन कार्य कएनिहार व्यक्ति होइछ दयालु, साहनुभूतिपूर्ण, स्नेही, उपकारी, अनकर दुःखकेँ बुझनिहार, परिस्थितिक ज्ञान रखनिहार, अतः विवेकी। अतः एहेन व्यक्तिक हृदयमे छल-कपट, द्वेष, डाह, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आ मत्सरकेँ स्थान नहि भेटैछ। परोपकारी व्यक्तिक आत्मा पवित्र, शुद्ध आ उदार होइछ। अतएव ई परम धर्म मानल गेल अछि मुदा दोसराकेँ पीड़ा देब आ कष्ट पहुँचाएब अधर्म मानल गेल। एतय तुलसीदासक उक्ति देखए योग्य अछि-

परहित सरिस धर्म नहि भाई।

परपीड़ा सभ नहि अधमाई।।

इएह कारण अछि जे परोपकारी व्यक्ति संत धिकाह। तैँ तुलसीदासक कहने छथि-

पर उपकार बचन-मन-काया।

संत सहज सुभाव रघुराया।।

एहि दैवी गुणसँ विभूषित भेनिहार विरले व्यक्ति होइ छथि। अधिक लोकक लेल 'स्वार्थ मूलमन्त्रस्य परमार्थ सर्वनाशम्' अछि। कारण, आँखि अछैतहुँ ओ आन्हर होइ छथि, कान रहितहुँ बहिर एवं विवेक रहलो पर अविवेकी होइछथि।

परोपकारक महत्त्व महान् अछि। सर्वत्र एकर मान होइछ। परोपकारी व्यक्तिक उच्च रहैछ आ उपकृत व्यक्तिक मान होइछ। परोपकारी व्यक्तिक उच्च रहैछ आ व्यक्तिक कृतज्ञ रहैछ। ओहि व्यक्तिक वाणीमे जादू रहैछ जे सम्पर्कमे अएनिहार व्यक्तिकेँ सत्पथपर लए अबैछ। एकर महानता अपार आ असीम अछि। महान् दरिद्र व्यक्ति परोपकारक विभूतिसँ भूषित भए आदरणीय भए जाइछ मुदा धनसम्पन्न होइतहुँ परपीड़क निन्दा आ अपमानक पात्र भए जाइछ। वस्तुतः, परोपकार मनुष्य आ पशुमे अन्तर उपस्थित करैछ। इएह कारण अछि जे 'परोपकाराय सतां विभूतयः' कहल गेल अछि परोपकारक भावनाक उदय होइतहि स्वार्थक किला ढहि जाइछ आ परहितकामनाक कमनीय कानन जगमगा उठैछ। अपना लेल तऽ कुकुरो हरान होइछ मुदा अनका उपकारमे डूबल रहनिहार व्यक्तिकेँ अपन सुख आ शान्तिसँ हाथ धोबए पड़ैछ।

एहि महान धर्मक रूप विभिन्न अछि, अतः ओ देश, काल आ पात्रक अनुसार अपनाओल जाइछ। एहि हेतु बालक आ वृद्ध, पुरुष एवं स्त्री, धनी तथा निर्धन अपन शक्तिक अनुसार परोपकारक कोनहु रूपकेँ अपनाकए जीवन सार्थक करैछ। कोनहु दुखी व्यक्तिक दुःख दूर कए सुख पहुँचाएब परोपकार थीक। जाहि व्यक्तिकेँ सम्पत्ति नहि होइ ओहो

प्राणिमात्र पर दया देखाकए परोपकार कए सकैछ। सहानुभूति राखब सबकेँ सुलभ होइछ। पीड़ितक रक्षा करब, पतितक उद्धार करब, भूखलकेँ अन्न, पियासलकेँ पानि देब, नाङटकेँ वस्त्र देब, रोगीकेँ औषधि देब अस्वस्थ व्यक्तिक सेवा करब परोपकार थीक।

परोपकारक भावना केवल मनुष्येटामे नहि अछि, एकर पवित्र भाव प्रकृतिमे सबसँ स्पष्ट देखि पड़ैछ। रत्नागर्भा धरती सर्वंसहा छथि, वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल आ डारि सब किछु अनका लेल त्यागैछ, जल सब जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भए जीवन कहबैछ, पशु भारवाहन कए परोपकार करैछ। पाथर टुकड़ा-टुकड़ा भइयो कए अपन परोपकारी स्वाभावकेँ नहि छोड़ैछ, सूर्य दिन-रात्रि चलैत छथि, आलोक पसारैत रहैत छथि,चन्द्रमा संसारभरिक व्यथाकेँ दूर करए हेतु आरामक समय उपस्थित भए पीयूषवर्षा कए सबके हृष्ट-पुष्ट बनौने रहैत छथि। मेघ भाफसँ जल लए जलराशिकेँ धारण कए अवनीक समीप आबि जल-वर्षा कए सबकेँ सानन्द बनबैछथि, नदी जलक भण्डारकेँ सुरक्षित राखि जीवजन्तुक पालन-पोषणमे सहायक होइछ, पर्वत अन्यदेशीय उपद्रवसँ रक्षा कए विविध भौतिक कन्द-मूल-फल, जड़ी-बूटी आदि सामग्रीक उपहार उपस्थित कए परोपकारिताकेँ प्रकट करैत छथि। अतएव प्रकृतिक सब साधनमे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

परोपकारसँ लाभो बहुत होइछ। यदि लोक परोपकारी भए जाए तऽ समाजक आ राष्ट्रक महान् उपकार होएत। ओहिसँ मनुष्यक आत्मशुद्धि होइछ। एहेन व्यक्तिक आदर सर्वत्र होइछ। ओ व्यक्ति धर्मात्मा होइछ, कारण 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्' कहल गेल अछि।

परोपकारीक उदाहरण भारतक इतिहासमे भरल पड़ल अछि। राजा शिवि परबाक रक्षालेल अपन शरीरक मांस दान कएल, दधीचिक हड्डीसँ अस्त्र बनलापर वृत्रासुर राक्षसक नाश भेल। पन्ना अपन एकमात्र पुत्रक निर्मम हत्या देखिकए चुपचाप रहलि। महात्मा गाँधी समाज, देश एवं राष्ट्रक लेल अपन जीवनदान कएल आ जटायु सीताजीक रक्षा लेल राक्षस रावणक हाथ मृत्युक समीप पहुँचाओल गेल। वस्तुतः, परोपकारी व्यक्तिक आदर्शसँ लोक आइधरि जनैछ 'परोपकाराय सतां विभूतयः'।

अतः परोपकारी होएब एक महान् गुण थीक मुदा सम्बन्धी, स्वस्थ आ धनबानक परोपकार घातक होइछ। एहि हेतु उपयुक्त व्यक्तिक परोपकार महान् धर्म अछि। यथाशक्ति परोपकारी होएब सबहिकेँ उचित अछि।

□□□

स्वावलम्बन

सब मुनष्य स्वीकार करैछ जे मनुष्य अपन भाग्यक विधाता अपनहि अछि मुदा संगहिसंग प्रश्न उपस्थित होइछ जे कओन मनुष्य एहि तरहक अछि। मानए पड़त जे एहि श्रेणीक मनुष्य अपन पएरपर ठाढ़ रहि कए अपनहि भरोसे चलनिहार अपन गुणक विकासक संग बढ़निहार, जीवनपथ पर अग्रसर भए बाधा-विघ्नकेँ दूर करैत उन्नतिक शिखर पर बढ़निहार आ अपना पर अवलम्बित रहनिहार होइछ। अतः स्वावलम्बन मनुष्यक उन्नतिक सोपान थीक।

एकर महत्त्व बड़ पैघ अछि। स्वावलम्बी मनुष्य अपन गुण, ज्ञान, शक्ति एवं स्थितिक अनुसार कार्य करैछ। एहिसँ ओकर साहस बढ़ैछ, गुणक विकास होइछ, शक्तिक अन्दाज लगैछ। फलतः, एहि श्रेणीक व्यक्तिकेँ पाबि जाति आ समाज उन्नति दिशि अग्रसर होइछ। परावलम्बी भेलासँ मनुष्यक जीवन शक्तिहीन भए शिथिल आ असहाय भए जाइछ।

स्वावलम्बी होएब मनुष्यक लेल बड़ आवश्यक अछि। बढ़ियासँ बढ़िया नियम-कानून आ उत्तमसँ उत्तम संस्था मनुष्यक उन्नतिलेल यथार्थ सहायता नहि दए सकैछ। ओहिसँ केवल कार्य करबाक स्वतन्त्रता भेटि सकैछ मुदा सुस्तकेँ उद्योगी, फिजूलखर्चीकेँ, मितव्ययी आ मद्यपकेँ संयमी बनएबाक शक्ति छैक स्वावलम्बी मनुष्यक अभ्यास आ आचरणमे। वस्तुतः, ओ मानव-जीवनक हेतु अमृत थीक। एतबए नहि, ईश्वर ओहि व्यक्तिक सहायता करैत छथिन्ह जे अपन सहायता अपनहि करैछ। एक कवि कहने छथि-

To trust to the world is to build on sand,
I trust in God and my good right hand\.

स्मरण राखब उचित अछि जे देशक उन्नतिलेल बनल नवीन योजनामे पूर्ण सफलता नहि होएबाक कारण अछि स्वावलम्बन अन्यथा आत्मनिर्भर रहने देश ओतबे पएर पसारैत जतबा पैघ ओछाओन रहितैक। एहि हेतु स्वावलम्बी होएब सबहक लेल आवश्यक अछि।

प्रकृति स्वावलम्बनक महान् शिक्षक अछि। समय पर गर्मी होइछ, जाड़ लगैछ वर्षा होइछ, पाला पड़ैछ, आम लगैछ, पतझड़ होइछ आ पल्लव पनपैछ यद्यपि बाह्य कारण ओकर संग नहि दैछ। पशु पियासे लगने डकरण लगैछ आ भूख लगने डोरी हनए लगैछ, पक्षी खढ़, पात, घास, लत्ता आदि सामान चुनिकए खोंता बना लैछ, जंगली जानवर भूख लगला पर शिकारक टोहमे अपन स्थानसँ बाहर अबैछ आ भूखक ज्वालाकेँ शान्त करैछ तथा कीड़ा-मकोड़ा सब जीव अपन जीविकाक हेतु अपन पएर पर ठाढ़ि रहि स्वावलम्बनक शिक्षा दैछ।

स्वावलम्बन बड़ लाभदायक अछि। स्वावलम्बी व्यक्तिकेँ अपन साधन, सामर्थ्य आ स्थितिक ज्ञान रहैछ। फलतः, कोनहु कार्यमे सफलता पएबामे ओकरा सहायता भेटैछ। एहिसँ ओ अपन तथा जातीय उन्नति करबामे समर्थ होइछ। कारण, The worth of a state, in the long run, is the worth of the individual composing it.-

J.S. Mill स्वावलम्बी व्यक्तिकेँ अनकर एहसान नहि मानए पड़ैछ। अतः असफलता भेलापर ओ ओकर कारण ताकि कए निराकरण करैछ आ असफलता प्राप्त करैछ। ओ सर्वदा सुखी रहैछ आ ओकर जीवन शान्त रहैछ। ओहि व्यक्तिक हृदयसँ शिथिलता, कायरता, अकर्मण्यता, अधीरता आ असत्यभाषिता पड़ा जाइछ तथा ओहि स्थानमे कर्मठता, दृढ़ता, धैर्य, सत्यता, प्रेम आदि उत्कृष्ट गुणक विकास होइछ। एहिसँ समाज देश आ राष्ट्रक हित होइछ। जाहिसँ देशमे नेता, सुधारक, विद्वान, नीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि महान् पुरुषक उदय होइछ।

इतिहासक पन्ना उकटितहि देखि पड़त जे महान् व्यक्ति सब स्वावलम्बी छलाह। कालिदास, तुलसीदास, शेक्सपियर, न्यूटन, जगदीशचन्द्र बोस, रामानन्द, चैतन्य, महात्मा गाँधी, हिटलर, मुसोलिनी आदि सबहि स्वावलम्बनक ज्वलन्त उदाहरण छथि।

अतः स्पष्ट अछि जे व्यक्ति, समजा आ देशक हेतु आलस्य आ भाग्यवादिता अनुचित अछि मुदा श्रम, उद्योग आ अध्यवसायकेँ अपनाएब आवश्यक अछि। यशस्वी एवं प्रतापी बनबाक मूलमन्त्र स्वावलम्बनकेँ सबहि व्यक्ति अपन अभ्यास, आचरण आ कर्त्तव्य द्वारा अपना सकैछ। अतः जीवन सफल बनएबाक लेल उन्नतिक प्रथम सोपान स्वावलम्बनकेँ अपनाएब सबहक प्रथम कर्त्तव्य थीक।

□□□

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING COPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : सुनैना प्रिंटिंग प्रेस, बैरिया, पटना-7